R.N.I. No.HIN/2002/8718 www.aksnews.com M.P./BHOPAL/642/2024-26

In Pursuit of Truth

पाक्षिक

# अक्स

वर्ष : 22 । अंक : 08
16 से 31 जनवरी 2024
पृष्ठ : 48
मूल्य : 25 रु.

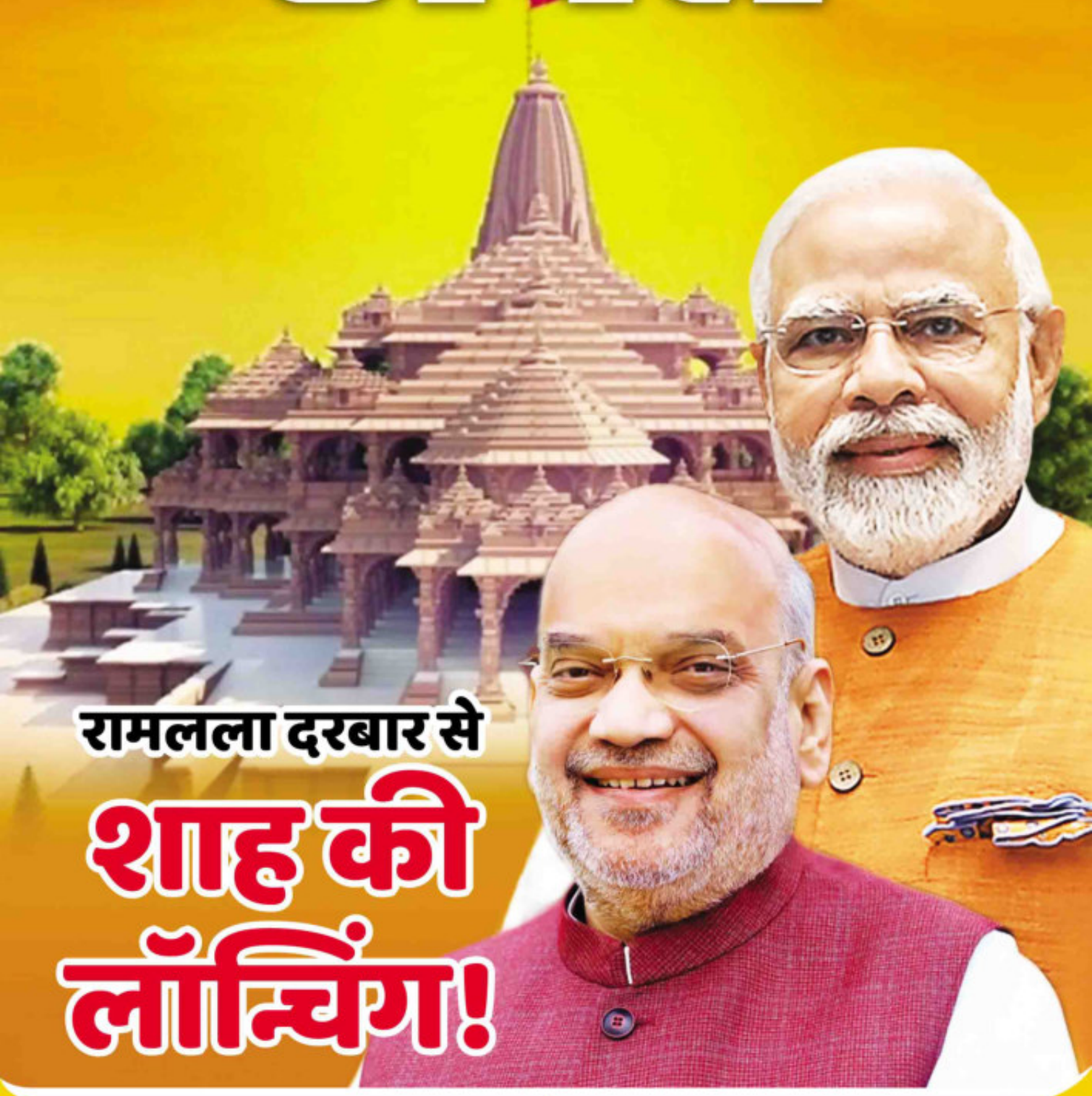

## रामलला दरबार से शाह की लॉन्चिंग!

राम मंदिर से बनेगा माहौल, अमित शाह को बनाया जाएगा चुनावी ब्रांड

क्या अयोध्या देगी 2029 में भाजपा को चुनाव जीतने को ब्रह्मास्त्र?

# ANU SALES CORPORATION

## We Deal in Pathology & Medical Equipment

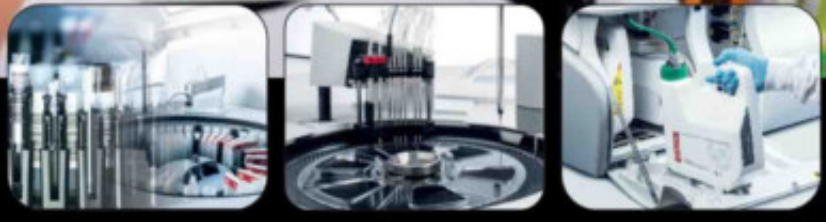

BA200

BioSystems

The Highest Flexibility

Address : M-179, Gautam Nagar,
Near Chetak Bridge, Bhopal-462023

9329556524, 9329556530 Email : ascbhopal@gmail.com

## इस अंक में

### प्रशासनिक

9 | कौन होगा मप्र का नया मुख्य सचिव?

*मप्र में अगला प्रशासनिक मुखिया कौन होगा इसको लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। इस दौड़ में सबसे आगे अनुराग जैन और राजेश राजौरा का नाम शामिल है। माना जा रहा था कि इनमें से ही किसी एक को प्रदेश का...*

### राजपथ

10-11 | सुशासन की राह पर...

*भारतीय संस्कृति में एक प्रमुख लोकोक्ति है पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं। यानी किसी व्यक्ति के भविष्य का अनुमान उसके वर्तमान लक्षणों से लगाया जा सकता है। इस लोकोक्ति को मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव...*

### खेती किसानी

13 | किसानों को मिलेगा...

*मप्र में इन दिनों समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी हो रही है। लेकिन विडंबना यह है कि प्रदेश की नई सरकार ने अपने संकल्प पत्र में 3100 रुपए प्रति क्विंटल धान खरीदी की घोषणा की थी, लेकिन उसे लागू नहीं किया है। इससे किसानों को 917 रुपए कम...*

### मेट्रो

18 | भोपाल को लगेंगे विकास के पंख

*नए साल में आप भोपाल में सुन सकेंगे कि अगला स्टेशन डीबी मॉल है। दरवाजें बाईं ओर खुलेंगे...कृपया दरवाजों से हटकर खड़े हों। मेट्रो ट्रेन मई-जून तक दौड़ने लगेगी और आप उसमें सफर कर सकेंगे। जीजी फ्लाई ओवर ब्रिज भी पूरा हो जाएगा, जबकि कोलार सिक्सलेन...*

### आवरण कथा 24, 25, 26, 27, 28

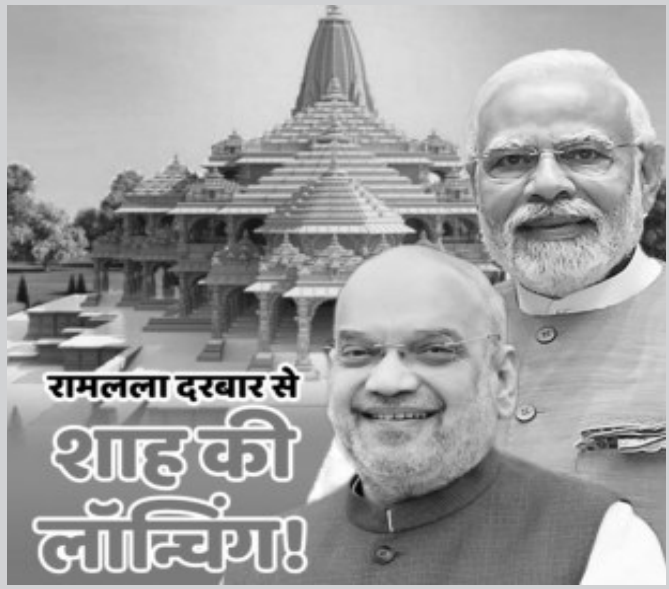


*यूं तो अयोध्या का मतलब होता है जिसे शत्रु न जीत सके। लेकिन इतिहास गवाह है कि इस नगर को लेकर कई बार लड़ाईयां हुईं, साजिशें हुईं। अयोध्या की इसी पावन भूमि पर रामलला का जन्म हुआ था। उनकी लीलाएं, चमत्कार और अवतार के भावपूर्ण किस्से कौन नहीं जानता। इसी भावपूर्ण प्रवाह पर सवार होकर भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। अब यह पार्टी 22 जनवरी को रामलला की स्थापना कराकर जहां मिशन 2024 में 400 पार के लक्ष्य को...*

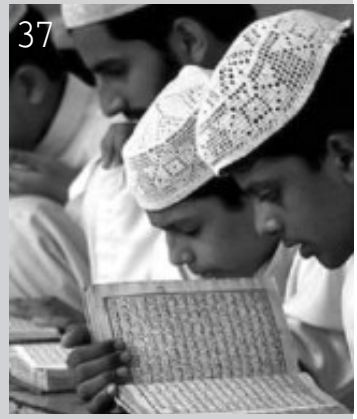

### राजनीति

30-31 | 2024 में 'राम' से...

*अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए आरएसएस-भाजपा-विहिप ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। हर राज्य के हर जिले से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक कार्यक्रम कर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंच बनाने की हर संभव कोशिश की जा रही है। इससे यह स्पष्ट...*

### महाराष्ट्र

35 | नई शिवसेना फिर बनाएगी...

*महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने शिवसेना के भीतर एकनाथ शिंदे गुट के पक्ष में फैसला सुनाया। इसके साथ ही, उन्होंने विभिन्न कारणों से दोनों गुटों के विधायकों के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिससे सभी शिवसेना विधायक पात्र हो गए।*

### बिहार

38 | मजबूरी बन चुके हैं नीतीश

*ललन सिंह का जेडीयू के अध्यक्ष पद से हटना राष्ट्रीय चर्चा का मुद्दा बन गया, जबकि अपने आप में यह कोई बड़ी घटना नहीं थी। बिहार से बाहर तो कोई जानता ही नहीं था कि जेडीयू का अध्यक्ष कौन है, जेडीयू की पहचान सिर्फ नीतीश कुमार से है।*

6-7 अंदर की बात
41 महिला जगत
42 अध्यात्म
43 कहानी
44 खेल
45 फिल्म
46 व्यंग्य

अपनी बात

# आखिर रात को ही क्यों होती है सर्जरी...?

शा यर निदा फाजली का एक शेर है...

**उस को रुख़्सत तो किया था मुझे मालूम न था**
**सारा घर ले गया घर छोड़ के जाने वाला**

कुछ इसी तर्ज पर मप्र में अधिकारियों-कर्मचारियों का तबादला हो रहा है। यानी उनका तबादला आदेश तब होता है, जब पूरी दुनिया सो रही होती है। यानी देर रात को। लोग अक्सर यह जानने की कोशिश करते हैं कि आखिर क्या वजह है कि सरकार रात को ही तबादला आदेश जारी करती है। लेकिन यहां बता दें कि इसके लिए कोई वैधानिक प्रावधान नहीं है। हालांकि जानकारों का कहना है कि कई दिनों या फिर दिनभर के मंथन के बाद शासन-प्रशासन मिलकर तबादला सूची फाइनल करते हैं। उसके बाद जिम्मेदार लोगों द्वारा उस सूची को अंतिम रूप दिया जाता है। तब जाकर वह सूची जारी होती है। ऐसे में कई बार सूची पर आम सहमति बनाने में देर रात हो जाती है। वहीं कुछ लोगों का कहना है कि किसी प्रकार के हस्तक्षेप से बचने के लिए शासन-प्रशासन देर रात को तबादला सूची जारी करता है, ताकि जब सुबह अधिकारी-कर्मचारी जगे तो उसे इसकी सूचना मिले। ऐसा करने से जब सूची सार्वजनिक हो जाती है तो कोई कुछ भी करने की स्थिति में नहीं होता है। वजह कुछ भी हो, लेकिन अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए रात को जारी होने वाली तबादला सूची जरूर परेशान कर जाती है। प्रदेश में नई सरकार बनने के बाद कई तरह की परंपराएं टूटती दिख रही हैं। ऐसे में कयास लगाए जा रहे थे कि आधी रात को जारी होने वाले तबादलों की परंपरा पर भी ब्रेक लगेगा। लेकिन इस सरकार में भी रात को ही तबादले के आदेश जारी हो रहे हैं। अब प्रदेश की मोहन सरकार नए सिरे से प्रशासनिक जमावट करने जा रही है। मंत्रालय से लेकर जिलों में पदस्थ अफसरों के तबादले किए जाएंगे। इसके लिए सूचियां तैयार कर ली गई हैं। सूत्रों का कहना है कि मुख्यमंत्री मोहन यादव के दिशा-निर्देश पर तैयार की गई तबादले की सूचियां जल्द जारी की जाएंगी। गौरतलब है कि प्रदेश में नई सरकार के गठन के बाद से अभी तक कुछ जरूरी अफसरों के ही तबादले किए गए हैं। अब बड़े स्तर पर तबादले होंगे। इसमें 31 जिलों के कलेक्टर और इतने ही पुलिस अधीक्षक, 3 संभागायुक्त, रेंज आईजी, भोपाल-इंदौर के पुलिस आयुक्त बदले जा सकते हैं। इसके अलावा मंत्रालय एवं विभागाध्यक्ष कार्यालय प्रमुखों को भी बदला जाना है। इसको लेकर मंत्रालय स्तर पर बड़ी तैयारी हो चुकी है। मंत्रालयीन सूत्रों के अनुसार, डॉ. मोहन यादव सरकार ने मंत्रालय के 6 अतिरिक्त मुख्य सचिव, 8 प्रमुख सचिव और कुछ सचिव के नामों की लिस्ट तैयार करा ली है। बस इस लिस्ट को अंतिम रूप देकर अफसरों को यहां से वहां किए जाने के आदेश जारी होना ही बाकी है। इसके साथ ही प्रदेश के 15 ऐसे कलेक्टरों की दूसरी लिस्ट बनवाई गई है जो कि शिवराज सरकार के कार्यकाल में मुख्य सचिव और उनके ओएसडी के खास रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देश पर अफसरों की तबादला लिस्ट बनाए जाने को प्रक्रिया आरंभ भी हो चुकी है। इसका नतीजा बड़ी प्रशासनिक सर्जरी के रूप में जल्द ही सामने आ सकता है। बताया जा रहा है कि सामान्य प्रशासन विभाग ने पुरानी सरकार के मुख्य सचिव व उनके ओएसडी के खास अधिकारियों की लिस्ट बनाई है। इसी तरह से तीसरी लिस्ट भी तैयार हो रही है, जिसमें प्रदेश के 4 संभागीय कमिश्नर और लगभग आधा दर्जन कार्पोरेशन के एमडी, 3 नगर निगम आयुक्तों के नाम दर्ज हैं। इनका तबादला किए जाने के आदेश शीघ्र जारी हो सकते हैं।

**- राजेन्द्र आगाल**


पाक्षिक अक्स

**वर्ष 22, अंक 8, पृष्ठ-48, 16 से 31 जनवरी, 2024**

**प्रकाशक एवं संपादक : राजेन्द्र आगाल**

**सम्पादकीय कार्यालय :**
प्लाट नम्बर 150, जोन-1 मनोरमा कॉम्पलेक्स,
एफ-03, 04, प्रथम तल, एम.पी. नगर
भोपाल- 462011 ( म.प्र. ),
फोन नं. 0755-2557777, टेलीफेक्स - 0755-4017788
email : akshmagazine@gmail.com
Website : www.akshnews.com
RNI NO. HIN/2002/8718 MPBPL/642/2021-23

**ब्यूरो**
**कोलकाता:**- इंद्रकुमार, **छत्तीसगढ़:**- संजय शुक्ला, मार्केण्डेय तिवारी, **जयपुर:**- आर.के. बिन्नानी, **लखनऊ :**- मधु आलोक निगम।

**प्रदेश संवाददाता**
094251 25096 ( इंदौर ) विकास दुबे
098276 18400 ( जबलपुर ) धर्मेन्द्र कथूरिया
094259 85070, ( उज्जैन ) श्यामसिंह सिकरवार
089823 27267, ( रतलाम ) सुभाष सोमानी
075666 71111, ( विदिशा ) मोहित बंसल

**क्षेत्रीय कार्यालय**
**नई दिल्ली :** ईसी 294 माया इंक्लेव मायापुरी फोन : 9811017939
**जयपुर :** सी-37, शांतिपथ, श्याम नगर (राजस्थान) मोबाइल-09829 010331
**रायपुर :** एमआईजी 1 सेक्टर-3 शंकर नगर, फोन : 0771 2282517
**भिलाई :** नेहरू भवन के सामने, सुपेला, रामनगर, भिलाई, मोबाइल 094241 08015
**इंदौर :** नवीन रघुवंशी, रघुवंशी कॉलोनी, इंदौर, मो.-9827227000
**देवास :** जय सिंह, देवास मो.-7000526104, 9907353976

**स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक, राजेन्द्र आगाल द्वारा आगाल प्रिंटर्स, प्लाट नं. 150, जोन-1, प्रथम तल, एफ-03, मनोरमा काम्पलेक्स, एम.पी. नगर भोपाल 462011 (म.प्र.), से मुद्रित एवं प्रकाशित**



**इस अंक में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने विचार हैं इनसे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**

# पत्र–संपादक के नाम

akshnews.com

## जागरूकता जरूरी

प्रदेश में ग्रामीण आबादी में साक्षरता दर बढ़ने के बावजूद आधुनिक चिकित्सा के प्रति भरोसा उस अनुपात में नहीं बढ़ा है। गांवों में जागरूकता अभियान को गहन करना होगा। लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने के साथ ही उन्हें जागरूक करना चाहिए।

● **पूजा शिवहरे,** इंदौर (म.प्र.)

## पेड़ ही जीवन है

मप्र सहित देशभर में पेड़ों की कटाई आम बात हो गई है, देशभर से रोजाना लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं। लोगों को यह समझना होगा कि पेड़ जीवन के लिए कितने आवश्यक हैं। लोगों को समझना होगा और गांवों से लेकर शहरों तक में लोगों को पेड़ लगाने होंगे।

● **वीरज तोमर,** ग्वालियर (म.प्र.)

## विपक्ष की दरकार

देश में सशक्त विपक्ष की दरकार है, जो भाजपा को दमदार चुनौती दे सके। लेकिन जनता का दुर्भाग्य है कि विपक्ष खंड-खंड बंटा हुआ है। सब के सब महत्वकांक्षी हैं, जो प्रधानमंत्री पद के मंसूबे पाले हुए हैं। आम जनता को विपक्षी दलों से ही आशा है। विपक्ष को इस बारे में सोचना चाहिए।

● **अश्विन पाल,** सीहोर (म.प्र.)

## कानूनों में बदलाव क्यों है जरूरी?

देश में शांति कायम रखने के लिए जब भी कानून बनाए जाते हैं, तो उस कानून की कुछ अच्छी और कुछ बुरी बातों को लेकर बहस शुरू हो जाती है। भारतीय न्याय संहिता विधेयक, 2023 में राजद्रोह से लेकर फर्जी खबरों और मॉब लिंचिंग तक में सजा के प्रावधान बदले गए हैं। आईपीसी में धारा 124ए में राजद्रोह को लेकर प्रावधान किया गया है। इसमें दोषी को 3 साल से लेकर उम्रकैद की सजा का प्रावधान था। इस कानून को निरस्त कर दिया है। अब बीएनएस में राजद्रोह की जगह देशद्रोह लाया गया है। इसकी व्यापक परिभाषा दी गई है। देशद्रोह में प्रावधान किया गया है कि देश के खिलाफ कोई नहीं बोल सकता है और इसके हितों को नुकसान नहीं पहुंचा सकता है।

● **देव साहू,** भोपाल (म.प्र.)

## प्रवासियों के संकट को गंभीरता से ले सरकार

सरकार को प्रवासियों के संकट को गंभीरता से लेना होगा। वर्ष 1991 की जनगणना के बाद समस्या और बढ़ गई जब सीमावर्ती राज्यों असम और पश्चिम बंगाल में मुसलमानों का असामान्य रूप से उच्च विकास दर का एक भयंकर प्रतिरूप देखा गया। 1991 में असम और पश्चिम बंगाल में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर स्थानीय हिंदू जनसंख्या की वृद्धि दर से बहुत अधिक थी। 1991 तक असम में चार जिले ऐसे थे (धुरी, ग्वालपाड़ा, बरपेटा और हैलाकंदी) जहां मुस्लिम आबादी का प्रतिशत सबसे अधिक था।

● **कमलेश यादव,** नई दिल्ली

## मिलेगा रोजगार

सरकार की योजना है कि पीथमपुर की तरह मध्यभारत के भोपाल को बड़ा औद्योगिक केंद्र बनाया जाए। इसके लिए सरकार ने तैयारी शुरू कर दी है। दरअसल, देश-विदेश के कई बड़े निवेशक भोपाल के आसपास औद्योगिक इकाईयां स्थापित करना चाहते हैं। ऐसे निवेशकों के लिए सरकार ने राजधानी के आसपास के इंडस्ट्रियल एरिया में निवेश करने के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। इससे लाखों बेरोजगारों को रोजगार मिल सकेगा।

● **रविकांत राजपूत,** रायपुर (छ.ग.)

## पाठकों से निवेदन

कृपया अपनी प्रतिक्रियाएं पक्ष या विपक्ष जो भी संभव हो इस पते पर भेजें

**अक्स**

150 जोन-1, मनोरमा काम्पलेक्स,
एफ-02, 03, एमपी नगर, भोपाल

## राजनीतिक दल बनाएंगे पीके

बिहार विधानसभा चुनाव में भले ही अभी एक साल का समय शेष है लेकिन राज्य की राजनीति अभी से गरमाने लगी है। चुनावी रणनीतिकार एवं जनसुराज के संयोजक प्रशांत किशोर ने 2025 का विधानसभा चुनाव लड़ने की तैयारी कर ली है। उन्होंने ऐलान किया है कि बिहार चुनाव में वे सभी 243 सीटों पर प्रत्याशी उतारेंगे। कयास लगाए जा रहे हैं कि पीके जल्द ही अपने जनसुराज अभियान को राजनीतिक दल के रूप में गठित करेंगे। प्रशांत किशोर अभी पूरे बिहार में जनसुराज पदयात्रा निकाल रहे हैं। उनकी यह यात्रा साल अक्टूबर 2022 में शुरू हुई थी। पीके गांव-गांव, ढाणी-ढाणी जाकर लोगों से मिल रहे हैं और उन्हें जागरूक कर रहे हैं। अब पीके ने बिहार में विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला लिया है। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि प्रशांत किशोर के चुनावी मैदान में आ जाने के बाद बिहार की राजनीति में नया मोड़ देखने को मिल सकता है। पीके अभी गांव-कस्बों में जाकर कांग्रेस, भाजपा, आरजेडी, जेडीयू समेत सभी पार्टियों के खिलाफ प्रचार कर रहे हैं। वे लोगों को जाति से ऊपर उठकर वोट करने के लिए जागरूक कर रहे हैं। पीके अगर पार्टी बनाकर बिहार की सभी सीटों पर चुनाव लड़ते हैं तो इससे एनडीए और महागठबंधन दोनों को ही चुनौती मिलेगी। हालांकि, बिहार चुनाव में वक्त बचा है ऐसे में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी।

## लोकसभा चुनाव लड़ेंगे जेपी नड्डा

आम चुनाव 2024 को लेकर देश की सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा जीत की हैट्रिक लगाने के मकसद से चुनावी तैयारियों में जुटी है। यहां तक कि राज्यसभा से जुड़े सभी बड़े दिग्गज लोकसभा चुनाव मैदान में नजर आएंगे। पार्टी ने ऐसे ज्यादातर दिग्गजों को उनके मूल राज्य से ही चुनाव मैदान में उतारने का फैसला लिया है। वहीं पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को लेकर राजनीतिक गलियारों में चर्चा जोरों पर है कि वे अपने गृह राज्य हिमाचल प्रदेश से ही लोकसभा चुनाव लड़ेंगे। नड्डा का राज्यसभा में दूसरा कार्यकाल इसी साल पूरा हो रहा है। इसलिए कहा जा रहा है कि नड्डा अब पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ेंगे। पार्टी सूत्रों की मानें तो राज्यसभा के दिग्गजों के मैदान में उतरने से लोकसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में वातावरण बनेगा। वर्तमान मोदी सरकार में कई वरिष्ठ मंत्री राज्यसभा के सदस्य हैं। इन मंत्रियों के साथ कई वरिष्ठ नेताओं को पहले ही लोकसभा की अपनी पसंदीदा सीट बताने के लिए तीन विकल्प दिए गए थे। ज्यादातर मंत्रियों और सांसदों ने इससे पार्टी नेतृत्व को अवगत करा दिया है। गौरतलब है कि पार्टी ने राज्यसभा में एक नेता को दो से अधिक कार्यकाल नहीं देने की नीति बनाई है। इसके तहत केंद्र सरकार में मंत्री रहते मुख्तार अब्बास नकवी को राज्यसभा का टिकट नहीं दिया गया। पार्टी सूत्रों का कहना है कि अगर नड्डा लोकसभा चुनाव में उतरे तो इस नीति के प्रति सकारात्मक संदेश जाएगा।

## अब क्या करेंगे सोरेन?

ईडी ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को अपने सातवें समन में बयान दर्ज कराने के लिए इस बार यह सुविधा दी है कि वे खुद समय, तिथि और जगह बताएं। ईडी के अधिकारी उनसे उनके बताए स्थान, समय और तिथि को आकर पूछताछ करेंगे। ईडी ने हेमंत सोरेन को जारी नोटिस में यह भी लिखा है कि वे जान-बूझकर इस मामले की जांच से बच रहे हैं और ईडी की ओर से जारी किए गए समन की अवहेलना कर रहे हैं। अब ईडी ने सातवां समन जारी कर कहा कि अगर अब जान-बूझकर समन की अवहेलना की जाती है तो ईडी के पास इस संबंध में पीएमएलए एक्ट की धारा के तहत उचित कार्रवाई करने का अधिकार है। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं अब क्या करेंगे सीएम सोरेन? ईडी के अनुसार सात दिनों के भीतर पूछताछ कर लेनी है। ईडी ने यह भी लिखा है कि एजेंसी का कोई भी समन दुर्भावनापूर्ण या राजनीति से प्रेरित नहीं है। ईडी ने हेमंत सोरेन को भेजे नोटिस में यह भी लिखा है कि बड़गाई अंचल के गिरफ्तार अंचल उपनिरीक्षक भानू प्रताप प्रसाद के घर से छापेमारी के दौरान ईडी को जमीन के कई अहम दस्तावेज मिले थे, जिसके बाद ईडी ने उक्त मामले में ईसीआईआर (आरएनजेडओ 25-23) दर्ज किया था जिसका अनुसंधान ईडी कर रहा है।

## कांग्रेस की चिंता

इंडिया गठबंधन में सीट शेयरिंग को लेकर चर्चाओं का दौर जारी है। कांग्रेस पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने घटक दलों के साथ सीट बंटवारे को लेकर उन्हें टटोलने की कवायद शुरू कर दी है। इस बीच खबर है कि कांग्रेस पर सहयोगी दलों ने दबाव बढ़ाना भी शुरू कर दिया है। एक ओर जहां जेडीयू ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को विपक्षी गठबंधन के सूत्रधार के रूप में पेश कर कहा कि भारतीय राजनीति में केवल कुछ ही नेता हैं जो उनके जैसे अनुभवी हैं। जेडीयू की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कहा गया कि इंडिया गठबंधन में बड़ी पार्टियों की जिम्मेदारी है कि वे गठबंधन को सफल बनाने के लिए बड़ा दिल दिखाएं। वहीं दूसरी तरफ शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि वह महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीटों में से 23 पर चुनाव लड़ेगी और कांग्रेस के साथ उसकी बातचीत शून्य से शुरू होगी। इन दोनों पार्टियों के बयानों से पहले पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने ऐलान किया था कि उनकी पार्टी राज्य में भाजपा से मुकाबला करेगी।

## एनडीए में जाएंगे राज ठाकरे!

आगामी आम चुनाव की पृष्ठभूमि में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों तरफ से हलचल देखने को मिल रही है। वहीं दूसरी तरफ एक बड़ा सवाल उठ रहा है कि महाराष्ट्र की सबसे चर्चित पार्टी और मराठी लोगों के मुद्दों के लिए लड़ने वाले प्रभावी नेता के रूप में जाने जाने वाले मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे इस चुनाव में किसका पक्ष लेंगे? राजठाकरे ने हाल ही में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से मुलाकात की है। इसके बाद सामने आया है कि इन नेताओं के बीच इस बात पर चर्चा हुई कि महाराष्ट्र में राम मंदिर के उद्घाटन का जश्न कैसे मनाया जाए। इस बीच सत्ताधारी पार्टियों के नेताओं की ओर से परोक्ष रूप से राज ठाकरे को अपने साथ आने की पेशकश करने वाले बयान भी आने लगे हैं। मुख्यमंत्री शिंदे की पार्टी के दो बड़े नेताओं ने राज ठाकरे को लेकर अहम बयान दिया है। इन नेताओं ने राज ठाकरे और मुख्यमंत्री शिंदे की मुलाकात पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि हम राज ठाकरे का स्वागत करने के लिए तैयार हैं।

## बड़ी मैडम की नैय्या चार के भरोसे

प्रदेश की प्रशासनिक वीथिका में इन दिनों एक वरिष्ठ महिला आईएएस अधिकारी बड़ी मैडम के नाम से चर्चा में हैं। इसकी वजह यह है कि मैडम वर्तमान में प्रशासन की सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठी हैं। मैडम भले ही प्रशासन की बड़ी कुर्सी की जिम्मेदारी संभाल रही हैं, लेकिन उनकी नैय्या चार आईएएस अधिकारियों के भरोसे चल रही है। सूत्रों का कहना है कि जब भी विषम परिस्थिति आती है तो मैडम इन अफसरों को मोर्चे पर तैनात कर देती हैं। खासकर जब भी दिल्ली दरबार के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग होती है तो मैडम परेशान हो उठती हैं। एक-दो बार तो वीसी के दौरान मैडम का माइक ही गड़बड़ा गया। ऐसे में मैडम के साथ वीसी में बैठने वाले दो एसीएस स्तर के अधिकारी मामले को संभालते हैं। दरअसल, मैडम भले ही प्रशासनिक मुखिया की कुर्सी पर बैठ गई हैं, लेकिन वे अपने पद के कर्तव्य को नहीं जानती हैं। इसलिए उन्होंने दो एसीएस और दो प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारियों को साध रखा है और जब भी दिल्ली दरबार से बात करनी होती है, इन्हें आगे कर दिया जाता है। ये अफसर भी मैडम के लिए पूरी निष्ठा से काम कर रहे हैं। इन अफसरों के कारण बड़ी मैडम की चमक अभी तक बरकरार है। गौरतलब है कि मैडम एक-दो महीने में रिटायर होने वाली हैं। ऐसे में मैडम की पूरी कोशिश है कि जैसे भी हो कुर्सी की साख बरकरार रहे।

## माफिया की गिरफ्त में माननीय

प्रदेश में नई सरकार सुशासन की राह पर तेजी से चल रही है। सरकार के मुखिया के आक्रामक तेवरों को देखकर हर कोई सहमा हुआ है। वहीं जनता खुश है। सरकार के मुखिया के रुख को देखते हुए आम जनता की चाहत यही है कि पूरी सरकार इसी तर्ज पर काम करे। लेकिन सुशासन के इस दौर में प्रदेश सरकार के एक मंत्रीजी एक माइनिंग किंग के घेरे में फंस गए हैं। माननीय पहली बार मंत्री बने हैं, इसलिए उन्हें राजनीतिक दांवपेंच की शायद इतनी समझ नहीं है। इसलिए अभी अपनी मंत्री की पारी ठीक से शुरू भी नहीं कर पाए हैं कि वे माइनिंग किंग के भाई के गिरफ्त में फंस गए हैं। माननीय संघ पृष्ठभूमि के हैं और कहा जा रहा है कि संघ की पहल पर ही उन्हें मंत्री बनाया गया है। जिस विभाग का उन्हें मंत्री बनाया गया है, उस विभाग में कई तरह के माफिया सक्रिय रहते हैं। ऐसे में मंत्री को जानने वाले कहते हैं कि हमें इस बात का डर है कि जाने-अनजाने मंत्रीजी कहीं इन माफिया के चक्कर में फंसकर अपनी साख न गंवा दे। यहां बता दें कि मंत्रीजी जिस माफिया के घेरे में हैं, वे अल्पसंख्यक समुदाय से आते हैं। इसलिए मंत्रीजी अभी से सत्ता, संगठन और संघ के निशाने पर आ गए हैं।

## पकड़ में आया था तो रगड़ देते...

नई सरकार के नए मुखिया ने अपनी सरकार को पाक साफ बने रहने के लिए मंत्रियों के स्टाफ को लेकर नीति बनाई है कि किसी भी अधिकारी-कर्मचारी को पदस्थ करने से पहले उसकी ठीक से स्क्रीनिंग की जाए। इसकी वजह यह है कि पूर्ववर्ती सरकारों में मंत्रियों के स्टाफ के कारण सरकार की साफ पर भी सवाल उठते रहे हैं। ऐसे में इस बार मंत्रियों के स्टाफ को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। लेकिन इसी दौरान प्रदेश सरकार के एक मंत्री का ओएसडी एक दागदार को बना दिया गया। उप श्रमायुक्त इंदौर लक्ष्मीप्रसाद पाठक के खिलाफ डेढ़ माह पहले लोकायुक्त ने शासन से अभियोजन की मंजूरी मांगी है। लोकायुक्त में विशेष पुलिस स्थापना के महानिदेशक ने 10 नवंबर 2023 को एक चिट्ठी शासन को भेजी थी, जिसमें लिखा है कि उप श्रमायुक्त इंदौर लक्ष्मीप्रसाद पाठक के खिलाफ कोर्ट में चालान पेश करना है, इसलिए अभियोजन की मंजूरी दी जाए। मंत्रीजी को जैसे ही इस बात की खबर लगी, उन्होंने सोशल मीडिया पर इस बात का उल्लेख करते हुए उन्हें हटाने की मांग कर डाली। इसके बाद जब बवाल मच गया तो उप श्रमायुक्त पाठक को श्रम मंत्री की निजी पदस्थापना में ओएसडी पदस्थ करने का आदेश सरकार ने वापस ले लिया। लेकिन लोग इस मामले में सरकार और मंत्री पर सवाल उठा रहे हैं कि जब भ्रष्टाचारी पकड़ में आ गया था तो उसे उसी समय रगड़ देना चाहिए था, ताकि अन्य भ्रष्टों को इससे सबक मिलता।

## आखिर कहां अटकी फाइल?

प्रदेश में नई सरकार के गठन के साथ ही मैदानी अफसरों के तबादले की चर्चा तेज होगी। लेकिन विडंबना यह देखने को मिल रही है कि आजकल-आजकल करते हुए करीब महीनेभर का समय गुजर गया है, लेकिन डीआईजी-आईजी की पदस्थापना नहीं हो पाई है। रोज प्रशासनिक तबादलों को लेकर नई-नई बातें सामने आ रही हैं। आलम यह है कि कुछ अधिकारी वर्षों से फील्ड में पदस्थ हैं और चुनाव आयोग की गाइडलाइन के अनुसार उनका तबादला होना है। लेकिन सरकार अभी तक कोई कदम नहीं उठा पाई है। हैरानी तो इस बात की भी है कि परिवहन आयुक्त का पद खाली हुए भी 15-16 दिन हो गए हैं, लेकिन सरकार ने अभी तक इस महत्वपूर्ण पद पर कोई पदस्थापना नहीं की है। प्रदेश में पहली बार ऐसा देखने को मिल रहा है, जब परिवहन आयुक्त का पद इतने दिनों तक खाली है। वह भी तब जब वित्तीय वर्ष समाप्ति की ओर है और विभाग को समयसीमा के अंदर राजस्व का टारगेट पूरा करना है। अब तो आलम यह है कि अधिकारी यह कहने लगे हैं कि न जाने कहां तबादले की फाइल अटक गई है।

## इससे अच्छी तो लूपलाइन

प्रदेश में नई सरकार का सख्त रुख देखकर नौकरशाही में हड़कंप मचा हुआ है। एक तरफ अफसरों को निर्देश दिया गया है कि वे कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सख्त कदम उठाएं और दूसरी तरफ स्थिति यह है कि अफसरों के खिलाफ थोड़ी सी शिकायत मिलने के बाद उन्हें तत्काल पद से हटा दिया जाता है। अभी तक जिस तरह अफसरों को हटाया गया है, उससे नौकरशाही में अंदर ही अंदर आक्रोश पनप रहा है। कई अफसर तो अब यह कहने लगे हैं कि मुख्य धारा में आने से अच्छा है हमें लूपलाइन में ही भेज दिया जाए। सूत्रों का कहना है कि जिस तरह पिछले एक महीने के अंदर आईएएस, आईपीएस के साथ ही अन्य अफसरों पर बिना जांच-पड़ताल के कार्यवाही की गई है, उससे लोग भी अफसरों पर फब्तियां कसने लगे हैं। लोग अपनी बात तो सरकार के पास पहुंचाकर अपना हित साध लेते हैं, लेकिन अब ये अफसर बेचारे करें तो क्या करें। इसलिए इस नई सरकार में पहली बार यह देखने को मिल रहा है कि अधिकारियों-कर्मचारियों को अपना तबादला कराने में कोई रूचि नहीं है।

# सौभाग्य घोटाले की जांच तेज

मप्र पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी में प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) की जांच एक बार फिर तेज हो गई है। नई सरकार बनने के बाद मामले पर कार्रवाई तेज करने के निर्देश मिले हैं। अब तक की जांच में सात जिलों में 44 करोड़ रुपए की वित्तीय अनियमितता सामने आई है। सौभाग्य योजना की जांच चार साल से चल रही है। इसमें अभी तक आठ अभियंताओं को दोषी मानकर बर्खास्त किया गया था लेकिन पांच अभियंता आदेश के खिलाफ कोर्ट गए जहां से उन्हें राहत मिली। इनके खिलाफ नए सिरे से जांच शुरू हुई। पूरे मामले में फिलहाल 102 अभियंता जांच के दायरे में है। कंपनी प्रबंधन ने जनवरी में आरोपितों के खिलाफ जांच नतीजों के आधार पर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

वर्ष 2018 में पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के अंतर्गत हुए प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य) का काम पूरा हुआ। कंपनी क्षेत्र में करीब 900 करोड़ रुपए का काम किया गया। इसमें दूर दराज के बिजली विहीन गांव, मजरे, टोलों में इन्फ्रास्ट्रक्चर खड़ा कर बिजली पहुंचाना था। केंद्र सरकार की इस योजना में समय सीमा में काम करने पर अभियंताओं को पुरस्कार भी बांटा गया। अभियंता ने अपने-अपने क्षेत्र में तेजी से काम करवाने के लिए ठेकेदारों को मनमाने तरीके से काम बांटा। कई कार्य बिना निविदा निकाले ही दिए गए। काम का भौतिक सत्यापन कराए बगैर ही ठेकेदारों को भुगतान हुआ। डिंडौरी और मंडला में सबसे पहले सौभाग्य योजना में घोटाले की शिकायत हुई। जहां पर कई अनियमितता मिली। उस वक्त प्रदेश में तत्कालीन कमलनाथ सरकार ने इस मामले की जांच शुरू करवाई। विधानसभा में मामला उठा तो ऊर्जा विभाग ने विस्तृत जांच के आदेश दिए। बाद में शिवराज सरकार में भी जांच हुई, कुछ इंजीनियरों के खिलाफ कार्रवाई हुई लेकिन बाद में मामला ठंडे बस्ते में चला गया।

सौभाग्य योजना में सात जिलों में 44 करोड़ रुपए बिना कार्य के ठेकेदारों को भुगतान हुए हैं यह बात जांच में सामने आई। इसके बाद ठेकेदारों से अतिरिक्त भुगतान की राशि की वसूली के आदेश पूर्व में हुए थे। सीधी, सिंगरौली और सतना जिले से अभी तक 18 करोड़ रुपए वसूल लिए गए हैं। 26 करोड़ रुपए मंडला, डिंडौरी, सागर, रीवा जिले में काम करने वाले ठेकेदारों से वापस लिया जाना शेष है। सौभाग्य योजना के घोटाले में अभी 10 अफसरों के खिलाफ जांच पूरी हो गई है इनके खिलाफ विभागीय स्तर पर कार्रवाई का निर्णय लिया जाना है। इसमें दो अधीक्षण यंत्री अलीम खान सीधी और जौके द्विवेदी सतना भी शामिल है। ये दोनों सेवानिवृत्त हो चुके हैं। इसके अलावा आठ अन्य में कार्यपालन अभियंता और सहायक अभियंता स्तर के अधिकारी हैं। ये सभी सागर, सतना और सीधी जिले में कार्यरत हैं।

सौभाग्य योजना में अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री, सहायक अभियंता और कनिष्ठ अभियंता स्तर के अधिकारियों के खिलाफ जांच हो रही है। इन्होंने ही योजना का कार्य ठेकेदारों को दिया और भुगतान संबंधी कार्रवाई का सत्यापन किया। बता दें कि रीवा जिले की जांच शहडोल संभाग के मुख्य अभियंता शिशिर श्रीवास्तव, सिंगरौली जिले की जांच रीवा संभाग के मुख्य अभियंता देवेंद्र कुमार और सतना-सीधी जिले की जांच मुख्य अभियंता सतर्कता रीवा, मंडला की जांच मुख्य अभियंता जबलपुर संभाग जीडी वासनिक, डिंडौरी जिले की जांच मुख्य अभियंता सतर्कता अरविंद चौबे कर रहे हैं।

गौरतलब है कि 102 अभियंता जांच के दायरे में हैं, जो सीधे तौर पर सौभाग्य योजना में आरोपित बने हुए हैं। आठ अभियंताओं को कंपनी प्रबंधन ने बर्खास्त करने की कार्रवाई की थी। पांच जांच प्रक्रिया के खिलाफ कोर्ट गए और राहत ले ली। इनके खिलाफ नए सिरे से जांच होगी। 44 करोड़ की वित्तीय अनियमितता हुई, 18 करोड़ बिजली ठेकेदारों से वसूल किया गया, शेष 26 करोड़ की वसूली प्रक्रियाधीन है। जानकारी के अनुसार सौभाग्य योजना में सुनियोजित तरीके से गड़बड़ी की गई है। सौभाग्य योजना का काम कागजों में पूरा दिखाया जबकि जमीनी स्तर पर बिजली के पोल मिले न लाइन खींची गई। ठेकेदार ने कार्य पूर्णत: का आवेदन किया जिसे बिना सत्यापित किए ही अभियंताओं ने सही मानकर भुगतान स्वीकृति दी। जिन स्थानों पर बिजली चालू होने का दावा कागजों में हुआ वहां बिजली की अधोसंरचना ही नहीं तैयार की गई। कई जगह नए ट्रांसफार्मर और पोल लगाने की बजाय पुरानी कंपनी के ही उपकरण लगाए गए थे।

पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सीजीएम मानव संसाधन नीता राठौर का कहना है कि कंपनी प्रबंधन ने सौभाग्य योजना की जांच में तेजी लाने के निर्देश मैदानी अमले को दिए हैं। प्रबंध संचालक का कहना है कि इस मामले में आरोपित अफसरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। सौभाग्य मामले में कुछ अफसरों की जांच अंतिम चरण में है दिसंबर अंत तक हम और जांच पूरी कर निर्णय कर लेंगे। 2019 में भले जांच शुरू हुई लेकिन पुराने आदेश पर कोर्ट से कई ने आदेश पारित करवा लिया था जिसके बाद अगस्त 2022 में नए सिरे से मामले की जांच शुरू करवाई गई।

● **कुमार विनोद**

## काजगों पर पहुंचा दी बिजली

दरअसल मप्र के सरकारी अफसर और बाबू द्वारा प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना में बड़ी लूट सामने आई है। सौभाग्य योजना के तहत प्रदेश के जबलपुर पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण में अधिकारियों द्वारा जमीनी स्तर को छोड़ कागजों पर काम किए गए हैं। दरअसल कर्मचारियों द्वारा कागजों पर बिजली के खंभे खड़े कर गांव को रौशन बता दिया गया। हालांकि मामले की सच्चाई सामने आने के बाद जांच के निर्देश दिए गए थे। जांच रिपोर्ट में जो खुलासे हुए हैं वह चौंकाने वाले हैं। जांच के बाद के तथ्यों की मानें तो मंडला डिंडौरी जिले में 25,000 से अधिक घर ऐसे हैं, जहां अभी बिजी कनेक्शन नहीं पहुंचे हैं। हालांकि अधिकारी कर्मचारियों द्वारा सरकारी कागजों में इन घरों में बिजली के कनेक्शन दिखाए गए हैं। वहीं सौभाग्य योजना के तहत पूर्व क्षेत्र में करीबन 7 लाख 26 हजार घरों को रौशन बताया गया था, जबकि हकीकत में महज 40 फीसदी घर ही बिजली से चमक रहे हैं जबकि 60 फीसदी आज भी बिजली के इंतजार में हैं। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गांव-गांव में बिजली पहुंचाने के लिए सौभाग्य योजना की शुरुआत की गई थी। इसके तहत देशभर के 4 करोड़ घरों को मुफ्त बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया था। हालांकि मप्र में तेजी से यह काम पूरा हुआ था। जिसके बाद घोटाले की खबर आने के बाद जांच टीम गठित की गई थी।

# कौन होगा मप्र का नया मुख्य सचिव?

मप्र में अगला प्रशासनिक मुखिया कौन होगा इसको लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। इस दौड़ में सबसे आगे अनुराग जैन और राजेश राजौरा का नाम शामिल है। माना जा रहा था कि इनमें से ही किसी एक को प्रदेश का अगला मुख्य सचिव बनाया जाएगा। लेकिन इस दौड़ में जिन आईएएस अधिकारियों के नाम सीएस के दावेदार के रूप में चर्चा में हैं उनमें एसीएस मोहम्मद सुलेमान, डॉ. राजेश राजौरा, एसएन मिश्रा और मलय श्रीवास्तव भी शामिल हैं। ये सभी 1990 बैच के अफसर हैं। इनके साथ ही 1989 बैच के एसीएस विनोद कुमार, जेएन कंसोटिया के नाम की भी चर्चा है। विनोद कुमार मई 2025 और कंसोटिया अगस्त 2025 में रिटायर होंगे। वहीं केंद्र सरकार ने प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष, 1988 बैच के मप्र कैडर के आईएएस अधिकारी संजय बंदोपाध्याय का नाम भी लिया जा रहा है। दरअसल, केंद्र सरकार ने उनकी सेवाएं राज्य सरकार को लौटा दी हैं। इसके साथ ही प्रदेश में एक बार फिर मुख्य सचिव बदलने की अटकलें तेज हो गई हैं। अब देखना यह है कि मप्र का नया मुख्य सचिव कौन बनता है।

मप्र की मौजूदा मुख्य सचिव वीरा राणा 31 मार्च को रिटायर हो रही हैं, लेकिन डॉ. मोहन यादव की सरकार नए सीएस के बारे में लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लगने से पहले निर्णय ले लेगी। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि सरकार नहीं चाहेगी कि आचार संहिता लागू होने के बाद नए सीएस की नियुक्ति का मामला चुनाव आयोग पहुंचे। नए सीएस को लेकर अनुराग जैन के अलावा 1988 बैच के अधिकारी संजय बंदोपाध्याय का नाम भी सामने आया है। केंद्र ने उनकी सेवाएं कुछ दिन पहले ही मप्र को वापस कर कर दी हैं। मौजूदा सीएस वीरा राणा की नियुक्ति 30 नवंबर को चुनाव आयोग की सहमति से हुई थी, क्योंकि तब प्रदेश में विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लागू थी। वीरा राणा ने 1 दिसंबर को चार्ज लिया था। अब फिर वैसी स्थिति नहीं बने, इसके लिए यह माना जा रहा है कि फरवरी के पहले हफ्ते तक नए सीएस की नियुक्ति हो जाएगी। ऐसे में नए मुख्य सचिव के लिए हलचल तेज हो गई है। नए अफसर को सीएस बनाने का फैसला लेने के लिए भी सरकार के पास ज्यादा समय नहीं है। माना जा रहा है कि 15 फरवरी के बाद कभी भी लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लग सकती है। ऐसे में सरकार इससे पहले ही फैसला ले लेगी, ताकि नए सीएस को चुनाव से पहले प्रशासनिक जमावट और अफसरों से तालमेल के लिए पूरा समय मिल सके। आचार संहिता लागू होने तक यदि सरकार ने नए सीएस के बारे में फैसला नहीं लिया तो गेंद चुनाव आयोग के पाले में चली जाएगी। ऐसी स्थिति में आयोग सबसे सीनियर आईएएस को मुख्य सचिव का प्रभार देगा, जैसा कि वीरा राणा के मामले में हुआ।

केंद्र सरकार ने प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष, 1988 बैच के मप्र कैडर के आईएएस अधिकारी संजय बंदोपाध्याय की सेवाएं राज्य सरकार को लौटा दी हैं। इसके साथ ही प्रदेश में एक बार फिर मुख्य सचिव बदलने की अटकलें तेज हो गई हैं। बंदोपाध्याय अगले एक हफ्ते में मप्र में आमद दर्ज करा देंगे। इसके बाद संभव है, उन्हें राज्य मंत्रालय में ओएसडी बना दिया जाए। एक संभावना प्रभारी मुख्य सचिव वीरा राणा की जगह नया मुख्य सचिव बनाने की भी है। पूरे घटनाक्रम को लेकर प्रशासनिक गलियारों में चर्चाएं तेज हो गई हैं। प्रशासनिक फेरबदल की यह पूरी कवायद 29 फरवरी से पहले पूरी होना है। बता दें कि संजय बंदोपाध्याय प्रदेश के सबसे वरिष्ठ आईएएस अधिकारी हैं। प्रभारी मुख्य सचिव वीरा राणा भी 1988 बैच की हैं, लेकिन पदक्रम सूची में उनसे नीचे हैं। मुख्य सचिव बदलने की संभावना इसलिए भी प्रबल है, क्योंकि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अभी तक सचिवालय में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया है। संभव है कि नया मुख्य सचिव या ओएसडी बनने के बाद अधिकारियों की जमावट की जाए। जल्द ही इसको लेकर स्थिति साफ हो जाएगी। बंदोपाध्याय इसी साल अगस्त में सेवानिवृत्त होंगे। यदि वे मुख्य सचिव बनते हैं तो उनका कार्यकाल बढ़ाया भी जा सकता है। वे जुलाई 2018 से केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर हैं। प्रभारी मुख्य सचिव वीरा राणा 31 मार्च को सेवानिवृत्त होंगी। माना जा रहा है कि वे अपना कार्यकाल पूरा कर लेंगी। ऐसे में बंदोपाध्याय को पहले ओएसडी बना दिया जाएगा। यदि नया मुख्य सचिव बनाने की प्रक्रिया लोकसभा की आचार संहिता लगने के बाद शुरू होती है तो फिर फैसला चुनाव आयोग करेगा। जिसमें वरिष्ठता के आधार पर ही मुख्य सचिव तय होगा।

● **रजनीकांत पारे**

## बंदोपाध्याय वरिष्ठता की श्रेणी में सबसे ऊपर

संजय बंदोपाध्याय के मप्र लौटने के बाद वे वरिष्ठता की श्रेणी में सबसे ऊपर रहेंगे। यदि किसी कारण से बंदोपाध्याय मुख्य सचिव की दौड़ में नहीं रहते हैं तो फिर दूसरे सबसे वरिष्ठ अधिकारी 1989 बैच के मोहम्मद सुलेमान हैं। तब वरिष्ठता के आधार पर चुनाव आयोग ही मुख्य सचिव का फैसला करेगा। विधानसभा चुनाव की आचार संहिता के दौरान 30 नवंबर 2023 को इकबाल सिंह बैस के सेवानिवृत्त होने पर चुनाव आयोग ने वरिष्ठता के आधार पर ही वीरा राणा के नाम पर मुख्य सचिव पद के लिए मुहर लगाई थी। फिलहाल प्रदेश के मुख्य सचिव की दौड़ से दूसरी बार आईएएस अनुराग जैन बाहर नजर आ रहे हैं। उन्होंने तब दौड़ लगाई थी जब जरूरत नहीं थी, अब केंद्र में पदस्थ होने से उनका नाम शायद पक्ति में आखिरी नंबर पर आ गया है। इस रेस में नंबर दो पर अभी भारत सरकार में पदस्थ आशीष उपाध्याय का नाम है। यदि मप्र में घटनाक्रम और मंथन का दौर चला, तो उसमें अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य मेडिकल चिकित्सालय मोहम्मद सुलेमान, अपर मुख्य सचिव पशुपालन जेएन कंसोटिया, अपर मुख्य सचिव गृह डॉ. राजेश राजौरा और नर्मदा घाटी के अपर मुख्य सचिव एसएन मिश्रा में से कोई एक नाम सामने आ सकता है।

*भारतीय संस्कृति में एक प्रमुख लोकोक्ति है पूत के पांव पालने में दिख जाते हैं। यानी किसी व्यक्ति के भविष्य का अनुमान उसके वर्तमान लक्षणों से लगाया जा सकता है। इस लोकोक्ति को मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने लगभग 30 दिन के कार्यकाल में ही सिद्ध कर दिया है। 30 दिन के मोहन 'राज' में सुशासन की पूरी झलक देखने को मिली है।*

# सुशासन की राह पर मोहन 'राज'

जैसा नाम वैसा शासन का आगाज कर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश की साढ़े आठ करोड़ आबादी का मन मोह लिया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का अब तक का कार्यकाल ऐसा रहा है जिसमें सुशासन की पूरी झलक देखने को मिली है। जहां उन्होंने विकास कार्यों को गति दी है, वहीं नए कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण भी किया है। साथ ही जनता के मन में अपनी सरकार होने का भाप भरा है। यानी मोहन यादव सरकार ने अपनी लकीर बड़ी करने की कोशिश की है। भाजपा की नई सरकार के मुख्यमंत्री मोहन यादव का स्टाइल थोड़ा डिफरेंट है। जीरो टॉलरेंस नीति पर काम कर रहे मुख्यमंत्री यादव को प्रदेश में एक महीने का भी समय नहीं हुआ लेकिन अभी तक अपनी गलती के चलते दो कलेक्टर कुर्सी गवां चुके हैं। मुख्यमंत्री मोहन यादव की ऐसी नीति की विपक्ष भी तारीफ करते नहीं थक रहा है। नई भाजपा सरकार में मुख्यमंत्री पद की दौड़ में डॉ. मोहन यादव को शुरू में भले ही डार्क हॉर्स माना जा रहा हो, लेकिन अपने 30 दिन के कार्यकाल में उन्होंने जिस तेजी से और जिस संकल्प शक्ति के साथ फैसलों की झड़ी लगा दी है, उससे राज्य में साफ संदेश गया है कि कोई उन्हें हल्के में न ले। खास बात यह है कि डॉ. मोहन यादव के कुछ फैसलों में कई छोटी-छोटी लेकिन गंभीर जमीनी समस्याओं की निदान की चिंता भी दिखाई पड़ती है यानी ये समस्याएं तो बरसों से चली आ रही हैं, लेकिन किसी भी मुख्यमंत्री ने इन्हें अब तक बहुत संजीदगी से नहीं लिया। दूसरे, यादव सरकार के फैसलों में राजनीतिक दूरदर्शिता के साथ-साथ प्रशासनिक कसावट का आग्रह भी साफ नजर आता है।

पद संभालने के बाद नए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सामने वही चुनौतियां थीं, जो किसी भी नए नवेले और अचर्चित मुख्यमंत्री के सामने होती हैं। उन्हें तय करना था कि वो पुरानी सरकार की छाया और प्रशासनिक शैली से बाहर निकलकर नई पिच पर कैसी बैटिंग करते हैं। जनता देख रही है कि उनकी अपनी सोच, संघ से तालमेल, भाजपा के एजेंडे को क्रियान्वित करने का संकल्प, नौकरशाही में धमक कायम करने का जज्बा और प्रशासनिक तंत्र को नई और सही दिशा में हांकने की क्षमता कितनी है। इस दृष्टि से इतना तो कहा ही जा सकता है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस वनडे मैच के शुरूआती ओवर दमदारी से सधे हाथों से खेले हैं और इस बात के पुष्ट प्रमाण भी हैं। मसलन मुख्यमंत्री बनने के तत्काल बाद जारी उनका पहला आदेश प्रदेश में धार्मिक स्थानों पर जोर से लाउडस्पीकर बजाने और खुले में मांस और अंडे की बिक्री पर सख्ती से रोक। इस फैसले को उप्र में योगी आदित्यनाथ सरकार के दूसरे कार्यकाल के मंगलाचरण की नकल के रूप में भी देखा गया, लेकिन धार्मिक स्थलों और अन्य कार्यक्रमों में कई बार बहुत ज्यादा शोर और कानफोड़ू लाउडस्पीकर आम जनता की परेशानी का सबब बन गए थे। चूंकि मामला धार्मिक था, इसलिए इसके खिलाफ कोई बोलने की हिम्मत नहीं कर पाता था।

नई सरकार अब एक महीने पुरानी हो गई है। 13 दिसंबर को मोहन यादव ने मप्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। अपने अब तक के कार्यकाल में उन्होंने हिंदुत्व की चाहत और जनता को राहत की अपनी मंशा को दिखा दिया है। जनता के बीच सरकार को स्थापित करने के लिए उन्होंने अलग-अलग संभाग पर कैबिनेट की बैठक करने का निर्णय लिया है, जिसकी शुरुआत जबलपुर से हो चुकी है। अब अलग-अलग संभाग में कैबिनेट मीटिंग के जरिए

## ऑन द स्पॉट फैसला

नए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इन दिनों एक्शन में दिखाई दे रहे हैं। शपथ लेने के बाद अधिकारियों के साथ हुई बैठक में मुख्यमंत्री ने साफ-साफ कह दिया था कि प्रशासन में सुशासन जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा था कि हर शासकीय काम आसान होना चाहिए और जनता को किसी भी तरह की परेशानी नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री पद का दायित्व संभाले अभी 30 दिन ही हुए हैं। इस बीच, अब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रशासन को सख्त संदेश दे रहे हैं। मुख्यमंत्री मोहन यादव ऑन द स्पॉट फैसला लेने वाले मुख्यमंत्री के रूप में प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। 3 जनवरी को उन्होंने शाजापुर कलेक्टर किशोर कान्याल को जिले से हटा दिया। आईएएस अधिकारी कान्याल ने ट्रक-बस ड्राइवरों की बैठक में उन्हें औकात देखने की बात कही थी। इसके बाद मुख्यमंत्री मोहन ने कहा कि यह सरकार गरीबों की सरकार है। सबके काम का सम्मान होना चाहिए और भाव का भी सम्मान होना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम गरीबों के कल्याण के लिए काम कर रहे हैं। हम लगातार गरीबों की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्यता के नाते ऐसी भाषा हमारी सरकार में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सरकार की रणनीति यह संदेश देने की है कि हम हर क्षेत्र को समान रूप से तरजीह दे रहे हैं। प्रदेश के किसी भी अंचल की उपेक्षा नहीं की जाएगी। सरकार ने इस कदम के साथ ही यह भी साफ कर दिया है कि आदिवासी वोटबैंक को अपने पाले में करने की, अपने पाले में बनाए रखने की कवायद जारी रहेगी। मोहन सरकार गठन के बाद से ही लगातार हिंदुत्व पर फोकस कर चल रही है। 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामलला की भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होनी है और उससे पहले यह संभावना है कि मोहन कैबिनेट की एक मीटिंग चित्रकूट में हो सकती है। चित्रकूट का भगवान श्रीराम से भी कनेक्शन है और मप्र सरकार राम वन गमन पथ का निर्माण करा रही है। मप्र के विंध्य क्षेत्र के सतना जिले में स्थित चित्रकूट सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और पुरातात्विक महत्व रखता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने वनवास के 14 में से 11 साल चित्रकूट में बिताए थे। कैबिनेट की एक बैठक 14 जनवरी को उज्जैन में होनी है। उज्जैन के बाद ओरछा और मैहर में कैबिनेट बैठक की तैयारी है। मप्र के धार्मिक स्थलों में मुख्यमंत्री की कैबिनेट बैठक से हिंदुत्व को लेकर सरकार का मैसेज बहुत क्लीयर है।

मोहन सरकार ने अपने पहले ही फैसले में लाउडस्पीकर की तेज आवाज पर लगाम लगा दी। धार्मिक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर लाउडस्पीकर की आवाज निर्धारित डेसिबल के अंदर रखनी होगी। इसके साथ ही सरकार ने खुले में अंडे और मांस की बिक्री पर भी रोक लगा दी है। यह दोनों फैसले हिंदुत्व के मुद्दे पर मोहन सरकार का लाउड मैसेज बताए जा रहे हैं। मोहन सरकार ने कमान संभालने के बाद पहले ही महीने में ताबड़तोड़ फैसले लिए और एक तरह से यह संदेश भी दे दिया कि हिंदुत्व पर ही सरकार का फोकस रहने वाला है। करीब 66 साल के बाद मप्र के सरकारी कैलेंडर से विक्रम संवत को जोड़ दिया गया है। अब माह के नाम विक्रम संवत के अनुसार लिखे जाएंगे। यह कैलेंडर सभी सरकारी विभागों में जाएगा। गौरतलब है कि राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए तिथि और मुहूर्त भी विक्रम संवत वाले कैलेंडर से ही निर्धारित किया गया है।

मोहन सरकार ने संभाग और जिलों की सीमा का निर्धारण भी नए सिरे से कराने का ऐलान किया है। इससे प्रदेश का राजस्व नक्शा भी बदल जाएगा। दरअसल, समस्या यह थी कि कई कस्बे और गांव थे किसी और शहर या जिला मुख्यालय के करीब, लेकिन उनका जिला मुख्यालय कहीं और था जहां की दूरी अधिक थी। इसकी वजह से लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ता था। जैसे पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह का क्षेत्र बुधनी और मंडीदीप जैसे कस्बे हैं तो भोपाल के करीब लेकिन उनका जिला मुख्यालय सीहोर है, जिसकी दूरी इन जगहों से लगभग 70 किलोमीटर है। जिला मुख्यालय पास होने से लोगों के लिए आवागमन सुविधाजनक होगा और समय भी कम लगेगा। लोग जमीन खरीद तो लेते हैं लेकिन नामांतरण बड़ी चुनौती बन जाता है। नामांतरण के लिए लोगों को चक्कर काटने पड़ते हैं। इसमें बहुत भ्रष्टाचार के आरोप भी लगते रहे हैं। मोहन सरकार ने इसे लेकर भी बड़ा फैसला लिया है। अब रजिस्ट्री के साथ ही नामांतरण भी हो जाएगा। इससे आम जनता को राहत मिलेगी। आम जनता से जुड़े इस मुद्दे पर सरकार ने अब फोकस किया है। अपना घर, अपनी जमीन एक आम नागरिक का सबसे बड़ा सपना होता है। इसमें भ्रष्टाचार से लोगों की पूरी जिंदगी की कमाई संकट में पड़ जाती है। इसे दुरुस्त करने से आमजन को बहुत सुविधा हो जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शपथ ग्रहण करने के बाद ही मप्र में अवैध रूप से सड़क किनारे संचालित हो रही मांस और मछली की दुकानों को हटाने के निर्देश जारी किए थे। इस पर अमल भी तेजी के साथ शुरू हो गया। पूरे मप्र में अब तक 25000 दुकानों पर अवैध दुकानों पर ताले लग चुके हैं। इसके अलावा जो भी दुकानें संचालित हो रही हैं वह लाइसेंसी होकर सड़क से दूर पर्दे के अंदर चल रही हैं। इस पर मुख्यमंत्री का कहना है कि मुझे इस बात का गर्व है कि मप्र में अवैध रूप से नियम विरूद्ध सड़क किनारे संचालित होने वाली मांस मछली की 25000 दुकानें बंद हुई हैं। खुले में मांस व अंडों की बिक्री पर रोक से उन छोटे दुकानदारों और ठेले वालों को जरूर परेशानी हुई है, जो सरेआम सड़क किनारे दुकान लगाकर ये सामग्री बेचकर अपना पेट भरते हैं, लेकिन ज्यादातर लोगों ने इसे इसलिए सही माना, क्योंकि खुले में मांस बिक्री वैसे भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। ऐसी कुछ अवैध दुकानों को तोड़ा भी गया। यही नहीं सरकार ने ध्वनि प्रदूषण के मामलों की जांच के लिए फ्लाइंग स्क्वॉड भी गठित किया है, जो निर्धारित सीमा से अधिक ध्वनि प्रदूषण की शिकायत मिलने पर क्षेत्र में जाकर कार्रवाई करेगा। धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकरों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण की हर हफ्ते समीक्षा की जाएगी।

● **कुमार राजेन्द्र**

## मोहन यादव सबसे पावरफुल मुख्यमंत्री

मप्र की राजनीति पर दशकों से नजर रखने वाले विश्लेषकों का मानना है कि मोहन यादव अब तक के सबसे पावरफुल मुख्यमंत्री हैं। इसकी वजह उनके पास सामान्य प्रशासन, गृह, जेल और जनसंपर्क विभागों जैसे 10 अहम विभाग होना है। जानकार कहते हैं कि मुख्यमंत्री समेत इस मंत्रिमंडल में कुल 31 सदस्य हैं, लेकिन महत्वपूर्ण विभागों का बंटवारा सिर्फ सात मंत्रियों के बीच ही किया गया है इनमें दो उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला और जगदीश देवड़ा के अलावा कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद पटेल, राकेश सिंह और राव उदय प्रताप सिंह शामिल हैं। मोहन यादव के मंत्रिमंडल को देखकर स्पष्ट रूप से समझ में आता है कि संगठन का भाव प्रभावी है। जबकि शिवराज सिंह चौहान में मंत्रियों को अपनी तरह से काम करते देखा गया था। इसी वजह से मंत्री अपने तरीके से चलते थे और प्रशासन पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की पकड़ ढीली दिखती रही। मप्र में नई सरकार के मुखिया डॉ. मोहन यादव की सरकार दिग्विजय सिंह, शिवराज सिंह चौहान और कमलनाथ से अलग है। साल 2018 में जब कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस ने मप्र में सरकार बनाई थी, तब सरकार में कोई भी राज्यमंत्री या स्वतंत्र प्रभार का मंत्री नहीं था। मंत्रिमंडल के सभी सदस्य कैबिनेट रैंक के मंत्री थे।

# मामा ने पकड़ ली कौन सी राह?

## उमा भारती की राह पर तो नहीं मामा?

मप्र में दिग्विजय सिंह के नेतृत्व वाली 10 साल की कांग्रेस सरकार को सत्ता से बेदखल करने का श्रेय भाजपा की फायरब्रांड नेता उमा भारती को दिया जाता है। उमा को मुख्यमंत्री कैंडिडेट घोषित कर भाजपा ने 2003 का विधानसभा चुनाव लड़ा था और सरकार बनाई थी। पार्टी तब से 2018 तक लगातार सूबे की सत्ता में रही लेकिन उमा भाजपा की कुर्सी पर पांच साल भी काबिज नहीं रह पाईं। मुख्यमंत्री की कुर्सी गंवाने के बाद उमा ने बागी तेवर अख्तियार कर लिए, अलग पार्टी भी बनाई लेकिन लौटकर भाजपा में ही आईं। उमा पार्टी के नेताओं से नाराजगी खुलकर जाहिर करती रहती हैं लेकिन साथ ही प्रधानमंत्री मोदी और पार्टी नेतृत्व की उतनी ही तारीफ भी करती हैं। शिवराज सिंह चौहान भी उमा भारती के पार्टी नेतृत्व से बैर नहीं, स्थानीय नेताओं की खैर नहीं... वाले फॉर्मूले पर ही बढ़ते नजर आ रहे हैं। शिवराज केंद्रीय नेतृत्व के हर फैसले को पार्टी के निष्ठावान सिपाही की तरह स्वीकार करने की बात कर रहे हैं लेकिन मप्र के नेताओं को लेकर अपना दर्द जाहिर करने से भी नहीं चूक रहे।

मप्र की सियासत में भाजपा का पर्याय थे शिवराज सिंह चौहान। यहां थे इसलिए कहा जा रहा है कि क्योंकि अब नहीं रहे। मप्र के चुनाव में प्रचंड जीत के साथ भाजपा ने सत्ता में वापसी तो कर ली लेकिन सूबे की सत्ता के शीर्ष से शिवराज की विदाई हो गई। मुख्यमंत्री पोस्ट पर मोहन यादव की ताजपोशी को करीब एक महीने होने को आए हैं लेकिन शिवराज हैं कि अपने अंदाज, अपने बयान से सूबे की सियासत का फोकस पॉइंट बने हुए हैं। अब शिवराज का एक बयान आया है जिसमें कुर्सी जाने के बाद बदली परिस्थितियों का दर्द है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज ने एक कार्यक्रम में हैं और थे के बीच का अंतर बताया और साथ ही प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ कर बयान को बैलेंस करने की कोशिश भी की। शिवराज ने कहा कि राजनीति में बहुत अच्छे कार्यकर्ता और मोदीजी जैसे नेता हैं जो देश के लिए जीते हैं लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो रंग देखते हैं। मुख्यमंत्री हो तो चरण कमल के समान हैं और नहीं हो तो होर्डिंग से फोटो भी ऐसे गायब हो जाती है जैसे गधे के सिर से सींग। उन्होंने यह भी कहा कि लगातार काम में लगा हूं और मुझे एक मिनट की भी फुरसत नहीं है। अच्छा है कि राजनीति से हटकर काम करने का मौका मिल रहा है।

शिवराज सिंह चौहान जब से मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री की कुर्सी से उतरे हैं, उनका अलग ही अंदाज नजर आ रहा है। शिवराज मप्र के अलग-अलग इलाकों के ताबड़तोड़ दौरे कर रहे हैं। शिवराज कभी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी को 29 सीटों की माला पहनाने की बात करते हैं तो कभी अपनी ही सरकार के फैसलों के खिलाफ लाइन लेते भी नजर आ रहे हैं। कभी शिवराज का जोश हाई नजर आता है तो कभी निराशा भी छलकती है। कभी वह अपने बयानों से भाजपा के समर्पित सिपाही नजर आते हैं तो कभी दूरी भी झलकती है। ऐसे में सवाल यह भी उठ रहे हैं कि मुख्यमंत्री की कुर्सी से उतरने के बाद मामा ने कौनसी राह पकड़ ली है? शिवराज साल 2005 से ही मप्र में भाजपा का पर्याय रहे हैं। अब वह मुख्यमंत्री की कुर्सी पर भले ही नहीं रहे लेकिन उनके एक्शन से यह सवाल भी उठने लगे हैं कि क्या वह सुपर सीएम वाली इमेज चाहते हैं? ये सवाल इसलिए भी उठ रहे हैं क्योंकि लाड़ली बहना योजना के भविष्य को लेकर सस्पेंस हो या लाउडस्पीकर की तेज आवाज पर रोक लगाने का मोहन यादव सरकार का फैसला, शिवराज के बयान ही कुछ ऐसे रहे हैं। सीहोर जिले के भेरुंदा पहुंचे शिवराज ने लाड़ली बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि चिंता मत करना, 10 तारीख को खाते में पैसा आएगा। उन्होंने यह भी कहा कि बहन-भाई का रिश्ता विश्वास का होता है और इस विश्वास की डोर कभी टूटेगी नहीं। शिवराज का ये बयान लाड़ली बहना योजना के भविष्य को लेकर संदेह के बादल दूर करने और बहनों को यह संदेश देने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है कि वह भले ही मुख्यमंत्री न हों लेकिन चलेगी उनकी भी। वह लगे हाथ यह संदेश देना भी नहीं भूले कि नेता नहीं परिवार की तरह सबका ख्याल रखेंगे और सबकी सेवा का अभियान निरंतर जारी रहेगा।

मोहन यादव की कैबिनेट ने पहला आदेश जारी किया लाउडस्पीकर की तेज आवाज पर अंकुश को लेकर। मोहन सरकार के आदेश में सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन का जिक्र करते हुए यह साफ कहा गया कि धार्मिक और सार्वजनिक स्थलों पर निर्धारित डेसिबल के भीतर ही लाउडस्पीकर बजाना होगा। भेरुंदा में ही बैंड संचालकों ने सरकार के इस आदेश को लेकर शिवराज को ज्ञापन सौंपा। शिवराज ने बैंड संचालकों को आश्वस्त करते हुए कहा कि आप बैंड बजाएं, ढोल बजाएं, ताशे बजाएं। कोई रोकेगा तो मैं देख लूंगा। शिवराज के बयान में मैं देख लूंगा के मायने क्या हैं ये तो मामा ही जानें, लेकिन इसे मोहन सरकार को आंख दिखाने की तरह देखा जा रहा है। शिवराज के बयानों में पार्टी की प्रचंड जीत के बावजूद मुख्यमंत्री पद से विदाई का दर्द है तो तल्खी भी। उन्होंने पिछले दिनों यह कहा था कि कई बार राजतिलक होते-होते वनवास भी हो जाता है। वनवास और अब पोस्टर से फोटो गायब होने का बयान, दोनों ही मुख्यमंत्री नहीं बन पाने की कसक जाहिर कर रहे हैं। शिवराज साथ ही यह भी कह रहे हैं कि पार्टी जो भी जिम्मेदारी देगी, उसे पूरी निष्ठा से निभाऊंगा। उनका दर्द सामने आ रहा है तो साथ ही पार्टी के प्रति निष्ठा भी।

मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भाजपा के बैनर पोस्टर से फोटो गायब होने पर दर्द छलका है। इसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। यह वीडियो भोपाल के नीलबड़ स्थित ब्रह्माकुमारी सुख शांति भवन के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का है, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री शामिल हुए थे। वीडियो में पूर्व मुख्यमंत्री कह रहे हैं कि जीवन में जब हम लक्ष्य तय कर दूसरों के लिए काम करते हैं तो जिंदगी आनंद से भर जाती है। मैं लगातार काम कर रहा हूं, ये अच्छा हुआ कि राजनीति से हटकर काम करने का मौका भी थोड़ा मिल रहा है। राजनीति में भी बहुत अच्छे समर्पित कार्यकर्ता हैं। मोदीजी जैसे नेता हैं, जो देश के लिए जीते हैं। लेकिन कई लोग ऐसे भी होते हैं, जो रंग देखते हैं। शिवराज ने कहा कि आप मुख्यमंत्री हैं तो भाई साहब आपके चरण भी कमल के समान हैं, बाद में नहीं रहे तो होर्डिंग से फोटो ऐसे गायब होते हैं जैसे गधे के सिर से सींग। यह बड़ा मजेदार क्षेत्र है।

● **प्रवीण सक्सेना**

*मप्र विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने किसानों के साथ ही अन्य वर्गों के लिए बड़ी-बड़ी घोषणाएं की थीं। पार्टी ने दावा किया था कि सरकार बनते ही संकल्प पत्र में किए गए वादे पूरे किए जाएंगे, लेकिन सरकार बनने के एक माह बाद भी किसानों को बढ़े समर्थन मूल्य का लाभ नहीं दिया गया है।*

# किसानों को मिलेगा धान बोनस

मप्र में इन दिनों समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी हो रही है। लेकिन विडंबना यह है कि प्रदेश की नई सरकार ने अपने संकल्प पत्र में 3100 रुपए प्रति क्विंटल धान खरीदी की घोषणा की थी, लेकिन उसे लागू नहीं किया है। इससे किसानों को 917 रुपए कम मिल रहे हैं। हालांकि भाजपा सूत्रों का कहना है कि सरकार किसानों को बाद में यह राशि बोनस के रूप में देगी। यानी प्रदेश के किसानों को धान पर मिलने वाले बोनस के लिए अभी कम से कम बजट तक इंतजार करना होगा, क्योंकि राज्य सरकार के खजाने में इतना पैसा नहीं है कि वह फिलहाल धान पर किसानों को बोनस दे सके।

साल 2022 और 2023 में प्रदेश में लगभग 46 लाख मैट्रिक टन धान की खरीदी की गई थी। इस साल 46 लाख मैट्रिक टन लक्ष्य के साथ धान की खरीदी की जा रही है। इस साल लगभग 8 लाख किसानों ने धान बेचने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाया है। अब तक 35 लाख मीटिक टन धान की खरीदी की जा चुकी है। खास बात यह है कि भाजपा ने संकल्प पत्र में 3100 रुपए प्रति क्विंटल धान खरीदी की घोषणा की थी, लेकिन इस पर अभी अमल नहीं किया जा रहा है। किसानों को धान खरीदी पर समर्थन मूल्य 2183 रुपए प्रति क्विंटल के मान से राशि का भुगतान किया जा रहा है। इससे किसानों में नाराजगी है। समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी 19 जनवरी तक की जाएगी। प्रदेश सरकार ने एक दिसंबर से समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी शुरू की थी। शुरुआती 15 दिन तक खरीदी केंद्रों पर न के बराबर किसान धान बेचने पहुंचे, क्योंकि धान की खरीदी 2183 या 3100 रुपए किए जाने को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं थी, लेकिन जब बाद में इस संबंध में सरकार ने स्थिति स्पष्ट नहीं की तो किसानों ने खरीदी केंद्रों पर जाकर धान बेचनी शुरू कर दी। धान बेचने के बाद 3100 रुपए प्रति क्विंटल भुगतान की आस लगाए बैठे किसानों को झटका तब लगा, जब उन्हें 2183 रुपए के हिसाब से भुगतान किया गया। संचालक खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम तरुण पिथोड़े का कहना है कि प्रदेश में निर्धारित केंद्रों पर धान की खरीदी जारी है। अब तक 35 लाख मीट्रिक टन से ज्यादा धान की खरीदी की जा चुकी है। निर्धारित तिथि तक लक्ष्य से ज्यादा धान खरीदी के आसार हैं।

खाद्य आपूर्ति और उपभोक्ता संरक्षण विभाग के अफसरों का कहना है कि फिलहाल धान खरीदी पर मिलने वाले बोनस को लेकर सरकार ने कोई आदेश जारी नहीं किया है। इसलिए अभी केवल समर्थन मूल्य पर ही किसानों की धान खरीदी जा रही है। हालांकि पड़ोस के ही राज्य छत्तीसगढ़ में भाजपा ने धान खरीदी के साथ ही किसानों को बोनस का भुगतान भी शुरू कर दिया है। मप्र में वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है, इसलिए हो सकता है कि किसानों को बोनस के लिए बजट के बाद तक इंतजार करना पड़े, क्योंकि लगभग 46 लाख टन धान खरीदने के बाद यदि 900 प्रति क्विंटल के हिसाब से सरकार किसानों को बोनस देगी, तो राज्य सरकार के खजाने पर लगभग 400 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। सतना जिले के ग्राम कोटर निवासी रामजी शर्मा का कहना है कि उन्होंने करीब 250 क्विंटल धान समर्थन मूल्य पर बेची है। चूंकि भाजपा ने संकल्प पत्र में 3100 रुपए में खरीदी का वादा किया था, इसलिए भाजपा की सरकार बनने पर सभी किसानों को उम्मीद थी कि सरकार 3100 रुपए प्रति क्विंटल धान की खरीदी करेगी, लेकिन सरकार ने अपना वादा पूरा नहीं किया। किसानों को 2183 रुपए प्रति क्विंटल भुगतान किया जा रहा है। यह किसानों के साथ धोखा है। सरकार को प्रति क्विंटल 917 रुपए बोनस की राशि तत्काल किसानों के खाते में डालना चाहिए। भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष दर्शन सिंह चौधरी का कहना है कि संकल्प पत्र की घोषणाएं पूरी करने को लेकर हमारी सरकार गंभीर है। धान की खरीदी 3100 रुपए प्रति क्विंटल किए जाने को लेकर चर्चा चल रही है। जल्द ही इसका हल निकाल लिया जाएगा।

**● विकास दुबे**

## करना होगा 4,584 करोड़ का अतिरिक्त भुगतान

भाजपा ने अपने चुनावी संकल्प पत्र में किसानों के लिए अहम घोषणाएं की थीं। संकल्प पत्र में धान 3100 रुपए प्रति क्विंटल और गेहूं 2700 रुपए प्रति क्विंटल खरीदने की घोषणा की गई थी। सरकार ने इस साल समर्थन मूल्य पर 50 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य निर्धारित किया है। यदि सरकार 2183 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से धान की खरीदी करती है, तो उसे किसानों को कुल 10 हजार 915 करोड़ रुपए का भुगतान करना होगा और यदि सरकार संकल्प पत्र के वादे के अनुसार 3100 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से धान की खरीदी करती है, तो उसे किसानों को 15 हजार 500 करोड़ रुपए का भुगतान करना होगा। इस तरह सरकार को किसानों को बोनस के रूप में करीब 4 हजार 585 करोड़ रुपए का अतिरिक्त भुगतान करना होगा। पूर्व कांग्रेस विधायक कुणाल चौधरी का कहना है कि सरकार संकल्प पत्र में जनता से किए गए वादे पूरे करने की बजाय मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए इधर-उधर की बातें कर रही है। धान खरीदी पर 2183 रुपए का भुगतान किसानों के साथ धोखा है। सरकार किसानों को तत्काल धान का भुगतान 3100 रुपए करने के साथ ही यह भी स्पष्ट करे कि गेहूं की समर्थन मूल्य पर खरीदी 2700 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से की जाएगी।

# लेखानुदान से 4 माह चलेगी सरकार

मप्र में विधानसभा का बजट सत्र 7 फरवरी से शुरू होगा। इस सत्र के दौरान सरकार लेखानुदान बजट लाएगी। उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव के चलते मप्र की नई सरकार अपना वित्तीय बजट जुलाई माह में पेश कर सकती है। जुलाई माह तक के खर्चों के लिए लेखानुदान बजट लाया जाएगा। इसमें जून 2024 तक के व्यय के लिए आवश्यक प्रावधान किया जाएगा। इसके बाद मानसून सत्र में पूर्ण बजट प्रस्तुत किया जाएगा। सरकार लेखानुदान के साथ ही वर्ष 2023-24 के लिए द्वितीय अनुपूरक बजट प्रस्तुत करेगी। दरअसल लोकसभा चुनाव के चलते पूर्ण बजट को टाला गया है।

लोकसभा चुनाव इस साल होने हैं, जिसकी आचार संहिता फरवरी या मार्च में लागू हो सकती है। इसलिए सरकार तीन से चार माह के खर्च के लिए लेखानुदान लेकर आएगी। यह लेखानुदान करीब 1.30 लाख करोड़ रुपए का अनुमानित है। आमतौर पर बजट सत्र की अवधि लंबी होती है। सत्र फरवरी के अंत में शुरू होकर मार्च के आखिर तक चलता है। सामान्यत: बजट मार्च के पहले सप्ताह में पेश किया जाता है। इस बार बजट सत्र फरवरी में बुलाए जाने के आसार हैं। इसकी वजह मार्च में लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने के आसार हैं। वित्त विभाग के अधिकारियों का कहना है कि इस बार बजट सत्र सीमित अवधि का होगा। फरवरी में सत्र के दौरान लेखानुदान लाए जाने के आसार हैं। गौरतलब है कि केंद्र सरकार 1 फरवरी को संसद में बजट लेखानुदान यानी वोट ऑन अकाउंट लाएगी। लोकसभा चुनाव होने के बाद नई सरकार बनने पर पूर्ण बजट पेश होगा।

लोकसभा चुनाव की फरवरी के अंतिम सप्ताह में या मार्च के पहले सप्ताह में लगने वाली आचार संहिता के मद्देनजर राज्य सरकार ने अगले वर्ष का वित्तीय बजट जुलाई में लाने का निर्णय लिया है। इसके पहले शुरुआती चार माह तक राज्य सरकार के खर्च के इंतजाम के लिए लेखानुदान लाया जाएगा। इसमें सभी विभागों को आवश्यक होने पर वित्त विभाग के अफसरों के साथ डिस्कशन करने के लिए कहा गया है। वित्त विभाग की तरफ से सभी विभागों को निर्देश जारी किए गए हैं। इसमें 2023-24 के पुनरीक्षित अनुमान और वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान व लेखानुदान के आंकड़े आईएफएमआईएस के बजट माड्यूल में देना है। इसमें प्राप्त होने वाले राजस्व और खर्च दोनों के लिए पुनरीक्षित अनुमान और बजट अनुमान के आंकड़े बीसीओ स्तर पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। वित्त विभाग ने विभागों को कहा कि पहले चार माह के लिए लेखानुदान को आवश्यक खर्चों के लिए लाया जा रहा है। इसके लिए संबंधित विभाग के अधिकारियों को जरूरत होने पर वित्त विभाग के अधिकारियों से तारीख और समय तय कर चर्चा करने को कहा गया है। साथ ही कहा गया है कि लेखानुदान में कोई नया खर्च या मद शामिल नहीं किया जाएगा। वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान के लिए वेतन मद में 2023-24 के पुनरीक्षित अनुमान में तीन प्रतिशत की वृद्धि की गई है। मजदूरी के खर्च में वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट अनुमान में पांच प्रतिशत की वृद्धि कर प्रस्ताव रखा गया है। महंगाई भत्ता में बजट अनुमान 2024-25 के वेतन मद में प्रस्तावित राशि का 56 प्रतिशत, विभागों के वेतन मद में पिछले बजट के मुकाबले तीन प्रतिशत की वृद्धि, संविदा कर्मचारियों के पारिश्रमिक में वित्त वर्ष 2023-24 की तुलना में 8 प्रतिशत की वृद्धि, पेट्रोल व्यय में 5 प्रतिशत की वृद्धि, विभाग सुरक्षा, सफाई और परिवहन व्यवस्था में 10 प्रतिशत की वृद्धि की अनुमति दी गई है। वित्त विभाग के निर्देश के अनुसार विभागाध्यक्ष/बजट नियंत्रण अधिकारी एवं वित्तीय सलाहकार बजट प्रस्तावों के लिए स्थापना व्यय के सटीक आंकलन के लिए उत्तरदायी होंगे। विभागों के अनुसार बजट अनुमान 2024-25 के लिए आईएफएमआईएस में आंकड़ों की वित्त विभाग द्वारा 5 जनवरी तक एंट्री की गई। प्रशासकीय विभागों द्वारा 12 जनवरी तक आवश्यक कार्रवाई की गई। विभाग के अधिकारी वित्त विभाग के साथ 13 जनवरी से 27 जनवरी तक चर्चा कर सकेंगे। इसके बाद विभागवार कैलेंडर जारी किया जाएगा। वहीं, वित्त विधायक के वरिष्ठ अधिकारियों से विभागों के अधिकारी 28 जनवरी से 2 फरवरी के बीच चर्चा कर सकेंगे।

मप्र लेखानुदान के लिए वित्त विभाग दिन-रात इसकी तैयारी में जुटा है। विभाग जल्द ही मुख्यमंत्री के समक्ष लेखानुदान के संबंध में प्रेजेंटेशन देगा। वित्त विभाग के सूत्रों का कहना है कि लेखानुदान करीब 1 लाख 30 हजार करोड़ का होगा। विधानसभा में लेखानुदान के साथ सरकार द्वितीय सप्लीमेंट्री बजट भी पेश करेगी। इसमें करीब 25 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान होगा। पिछले दिनों हुए 16वीं विधानसभा के सत्र में द्वितीय सप्लीमेंट्री बजट पेश नहीं किया गया था। मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि अमूमन लेखानुदान में पिछले वित्त वर्ष में बजट राशि के करीब 40 प्रतिशत राशि का प्रावधान किया जाता है। मप्र सरकार ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए विधानसभा में 3.14 लाख करोड़ का बजट पेश किया था। यह पहला मौका था, जब मप्र सरकार का बजट 3 लाख करोड़ से ऊपर पहुंचा था।

● **लोकेंद्र शर्मा**

## लोकसभा चुनाव बनेगा रोड़ा

साल 2024 में लोकसभा के चुनाव होने हैं। केंद्र सरकार द्वारा भी इस बार बजट चुनाव के बाद प्रस्तुत किया जाएगा। ऐसी स्थिति में मप्र सरकार का बजट प्रस्ताव भी अब जुलाई में पेश किए जाने का निर्णय सरकार ने लिया है। 4 माह तक लेखानुदान से ही काम चलाया जाएगा। हालांकि मुख्यमंत्री मोहन यादव भी पहले कह चुके हैं कि प्रदेश में सरकार चलाने बजट की किसी भी तरह की कोई कमी आड़े आने नहीं दी जाएगी। वित्त विभाग ने सभी विभागों को 2023-24 के पुनरीक्षित अनुमान और 2024-25 के लेखानुदान अनुमान, अप्रैल से जुलाई तक के लिए सिस्टम के माध्यम से ब्यौरा भेजने के निर्देश जारी किए हैं। सरकार द्वारा 4 माह के लिए लेखानुदान लाया जाएगा। 4 माह तक के लिए जो कार्य चल रहे हैं, सरकार उसी के लिए लेखानुदान में विभागों को बजट उपलब्ध कराएगी। लेखानुदान में कोई भी नए खर्च शामिल नहीं किए जाएंगे। महंगाई को देखते हुए बजट में खास प्रावधान किए जाएंगे। इसके तहत मजदूरी के खर्चे में पांच फीसदी वृद्धि की छूट का ध्यान रखा जाएगा। पेट्रोल खर्च एवं साफ-सफाई इत्यादि के खर्चे में भी पांच फीसदी की वृद्धि स्वीकार होगी। संविदा कर्मचारियों के लिए वर्ष 2023-24 की तुलना में 8 प्रतिशत की वृद्धि को, वित्त विभाग लेखानुदान में स्वीकृत मिलेगी।

# क्या 'लोकसभा' को साध पाएंगे राहुल?

आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए राजनीतिक पार्टियां तैयारियों में जुट गई हैं। इसी कड़ी में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी मतदाताओं को साधने के लिए अब न्याय यात्रा निकालने जा रहे हैं। यह यात्रा मप्र की 5 लोकसभा सीटों से होकर गुजरेगी। राहुल गांधी की यात्रा को लेकर कयासों का दौर शुरू हो गया कि न्याय यात्रा लोकसभा चुनाव पर कितना प्रभाव डालेगी। गौरतलब है कि इससे पूर्व राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा निकाली थी। इस यात्रा में भीड़ भी खूब जुटी। यात्रा में उमड़ी भीड़ को देखकर कांग्रेसी काफी उत्साहित भी हुए और दावा किया जाने लगा कि मप्र के विधानसभा चुनाव में इस यात्रा का असर पड़ेगा। लेकिन कांग्रेस के दावों के विपरीत भारत जोड़ो यात्रा बेअसर रही। ऐसे में सवाल उठने लगा है कि क्या न्याय यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी लोकसभा को साध पाएंगे?

गौरतलब है कि देश में आने वाले साल में लोकसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसके लिए देखा जाए तो अब महज कुछ ही महीनों का समय बचा हुआ है। इसी बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी एक बार फिर पैदल यात्रा पर निकलने वाले हैं। कांग्रेस ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के बाद अब दूसरी यात्रा निकालने की घोषणा की है। कांग्रेस ने इस यात्रा का नाम भारत न्याय यात्रा रखा है, जो कि 14 जनवरी से शुरू होगी। मणिपुर से मुंबई तक होने वाली इस यात्रा में कांग्रेस 6,200 किलोमीटर की देरी तय करेगी।

भारत जोड़ो की तरह राहुल की न्याय यात्रा भी मप्र से होकर भी गुजरेगी। पिछले साल 23 नवंबर से चार दिसंबर 2022 के बीच भारत जोड़ो यात्रा ने मप्र के मालवा-निमाड़ क्षेत्र के छह जिलों बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन, इंदौर, उज्जैन और आगर मालवा से होकर 380 किमी की दूरी तय की थी। इस बार रूट दूसरा होगा। सूत्रों का कहना है कि न्याय यात्रा मप्र की पांच लोकसभा सीटों को कवर करेगी। एआईसीसी ने यात्रा का जो मैप जारी किया है, उसके मुताबिक राहुल की न्याय यात्रा मप्र की गुना-शिवपुरी लोकसभा सीट, विदिशा, सागर, टीकमगढ़, और खजुराहो लोकसभा सीट से निकलेगी। अब कहने को तो कांग्रेस कह रही है कि राहुल गांधी की ये यात्रा आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक न्याय के लिए होगी, लेकिन असल सवाल तो ये है कि क्या राहुल गांधी अपनी इस यात्रा के जरिए अपनी खुद की पार्टी कांग्रेस के साथ न्याय कर पाएंगे। और उससे भी बड़ा सवाल कि क्या राहुल गांधी इस यात्रा के जरिए कांग्रेस की सीटों में कम से कम इतना इजाफा कर पाएंगे कि लोकसभा में पार्टी के सांसदों की संख्या तीन अंकों तक पहुंच जाएगी। यूं तो पहले कर्नाटक और फिर तेलंगाना में सरकार बनने के बाद कांग्रेस के नेता दावा करते हैं कि इन राज्यों में मिली सफलता की सबसे बड़ी वजह राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा रही है। हालांकि इसी यात्रा के बावजूद कांग्रेस राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मप्र क्यों हार गई, इसका जवाब कोई भी कांग्रेसी नहीं देना चाहता। असफलता से मुंह मोड़कर सफलता के दो उदाहरण सामने रख अब कांग्रेस राहुल गांधी के लिए एक और 6600 किलोमीटर लंबी यात्रा के लिए तैयार है, जिसे नाम दिया गया है न्याय यात्रा।

राहुल गांधी की जो यात्रा मणिपुर से लेकर महाराष्ट्र तक होने वाली है, उसमें लोकसभा की कुल सीटें हैं 355। और इनमें फिलवक्त कांग्रेस के पास हैं महज 14 सीटें। सहयोगी दलों को भी जोड़ लें, जो अब इंडिया गठबंधन का हिस्सा हो चुके हैं तो ये सीटें पहुंचती हैं 67। ऐसे में न्याय यात्रा के जरिए 355 में से राहुल गांधी की नजर कम से कम 200 सीटों पर होगी ताकि वो दक्षिण भारत के सहयोगियों के जरिए आंकड़े को 272 के पार लेकर जा सकें। लेकिन क्या ये इतना आसान है, इसका जवाब अब भी राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में खोजने पर मिल जाता है। इस मेगा यात्रा में बस का इस्तेमाल किया जाएगा, जिनके जरिए 14 राज्यों के 85 जिलों का कवर किया जाएगा। 6200 किलोमीटर की इस यात्रा में कांग्रेस जिन राज्यों को कवर करेगी, उनमें मणिपुर, नागालैंड, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, उप्र, छत्तीसगढ़, मप्र, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र शामिल हैं। इस यात्रा में अधिकतम लोगों तक पहुंचने वाली बस होगी। इसके अलावा यात्रा में शामिल नेता समय-समय पर कुछ देर तक पैदल भी चलेंगे।

● **अरविंद नारद**

## न्याय यात्रा पर राजनीति

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की अगले महीने से शुरू हो रही भारत न्याय यात्रा पर मप्र में राजनीति शुरू हो गई है। भाजपा नेताओं ने कटाक्ष किया है। प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा का कहना है कि जहां-जहां पैर पड़े राहुल के, वहां-वहां जमानत हुई जब्त। हाल ही में राहुल गांधी के नेतृत्व में एक यात्रा निकली थी, उस यात्रा का क्या हुआ। यात्रा के दौरान राहुल गांधी जहां से निकले, उन क्षेत्रों मैं पार्टी के उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। कांग्रेस पार्टी ने इतने वर्षों तक देश की जनता के साथ जो अन्याय किया है, राहुल गांधी यदि उसके लिए माफी यात्रा निकालें, तो बेहतर होगा। कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार ने इस देश के गरीबों के साथ अन्याय किया है और ऐसे लोगों को न्याय दिलाने का काम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। वहीं मप्र कांग्रेस के अध्यक्ष जीतू पटवारी का कहना है कि राहुल गांधी ने इससे पहले देश में भारत जोड़ो यात्रा की थी। राहुल गांधी आधुनिक भारत के पहले शख्स थे जिन्होंने देश में भाईचारे के लिए, प्रेम के लिए, प्यार के लिए भगवान राम-कृष्ण और भारत वर्ष के जो मूल विचार हैं, इंसानियत की रक्षा के लिए, प्राणियों में सद्भावना हो इस विश्वास के लिए यात्रा निकाली थी। पूरे देश ने उसे आत्मसात किया था। अब न्याय यात्रा निकाली जा रही है। पटवारी का कहना है कि राजनीतिक रूप से जो तानाशाही देश में चल रही है, लोकतंत्र की हत्या करने का जो दुष्चक्र चल रहा है। विधायकों और सांसदों को अपने अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। वोट की ताकत को कम किया जा रहा है। व्यापक रूप से दलबदल किया गया। इसके खिलाफ और सामाजिक जनजागरण के लिए न्याय यात्रा है।

मप्र में विधानसभा चुनाव के बाद अब लोकसभा चुनाव का घमासान शुरू हो गया है। प्रदेश में राजनीतिक नेतृत्व में भी बदलाव हो चुका है। अब लोकसभा चुनाव में भाजपा की तरफ से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तो कांग्रेस की ओर से प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी की रणनीतिक परीक्षा होगी। भाजपा ने जहां सभी 29 सीटें जीतने का लक्ष्य बनाया है, वहीं कांग्रेस के सामने प्रदर्शन सुधारने की चुनौती है।

# मिशन 2024 में अग्निपरीक्षा

मप्र में विधानसभा चुनाव के बाद अब भाजपा और कांग्रेस का फोकस मिशन 2024 पर है। भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के नेतृत्व में लोकसभा का चुनाव लड़ा जाएगा। वहीं कांग्रेस नए चेहरे यानी प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और नई टीम के साथ लड़ेगी। ऐसे में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही प्रमुख दलों को कई चुनौतियों का सामना करना होगा। हालांकि विधानसभा चुनाव में मिली बंपर जीत के बाद भाजपा का उत्साह सातवें आसमान पर है। हमेशा मिशन मोड में रहने वाली भाजपा ने विधानसभा चुनाव के बाद से ही लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। भाजपा के रणनीतिकार लगातार बैठकें करके रणनीति बना रहे हैं। खुद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा प्रदेशभर में दौरे कर रहे हैं। भाजपा की सक्रियता को देखते हुए कांग्रेस ने भी मैदानी मोर्चा संभाल लिया है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी जिलों का दौरा कर रहे हैं। वहीं पीसीसी में प्रदेश प्रभारी जीतेंद्र सिंह भी प्रदेश अध्यक्ष व पदाधिकारियों के साथ बैठकें करके चुनावी रणनीति में जुट गए हैं।

लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल जीतने के बाद भाजपा की नजरें अब इस साल होने वाले फाइनल पर है। चुनाव नतीजों ने पार्टी का मनोबल बढ़ाया है। ऐसे में पार्टी अब केंद्र में सत्ता की हैट्रिक बनाने की कोशिश में जुट गई है। भाजपा चुनाव में अपने वोट प्रतिशत को बढ़ाने पर जोर दे रही है। पार्टी का लक्ष्य अगले चुनाव में वोट प्रतिशत को बढ़ाकर 60 फीसदी से अधिक करने का है। ऐसे में विपक्ष के पास भाजपा को हराने का रास्ता बंद हो जाएगा। भाजपा ने अपने कार्यकर्ताओं को 10 प्रतिशत वोट बढ़ाने का लक्ष्य दिया है। विपक्षी कांग्रेस ने भी प्रदेश में अपने पुराने नेतृत्व को बदल दिया है और पिछले प्रमुख कमलनाथ को हटाकर जीतू पटवारी को प्रदेश अध्यक्ष के रूप में लाया गया है। इस बीच, कांग्रेस खेमे में दो बार के विधायक और पूर्व मंत्री जीतू पटवारी के लिए भी यही स्थिति होगी। अनुभवी नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को राज्य इकाई के अध्यक्ष के रूप में बदलने के बाद, पटवारी को कांग्रेस नेतृत्व के फैसले को सही ठहराने के लिए राज्य में आने वाली सभी चुनौतियों का सामना करना होगा। विपक्षी दल के प्रमुख होने के नाते, उनकी चुनौती विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की भारी हार के बाद संगठन का पुनर्निर्माण करना, पार्टी कैडर को एकजुट रखना और आगामी लोकसभा चुनावों के लिए प्रेरित करना है।

## भाजपा का बूथ मैनेजमेंट पर जोर

लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल जीतने के बाद भाजपा की नजरें अब फाइनल यानी लोकसभा चुनाव पर हैं। भाजपा मिशन 2024 की तैयारी में पूरी तरह जुट गई है। इसके लिए भाजपा विधानसभा चुनाव वाली रणनीति पर ही काम कर रही है। यानी भाजपा फिर बूथ पर फोकस कर रही है। लोकसभा चुनाव में प्रदेश की सभी 29 सीटों को जीतने के लिए पार्टी ने वरिष्ठ नेताओं को बूथों की जिम्मेदारी सौंपने की रणनीति बनाई है। जल्द ही नेताओं को जिम्मेदारी सौंपकर उन्हें मैदान में उतारा जाएगा। प्रदेश में अधिकांश पोलिंग बूथ ऐसे हैं जो भाजपा की दृष्टि से बेहद मुफीद हैं। पिछले कई चुनावों से इन बूथों पर भगवा ही लहरा रहा है। ऐसे में पार्टी का फोकस अब उन पोलिंग बूथ पर है जहां भाजपा लड़ाई में रहती है। कभी जीत मिलती है तो कभी हार। इन बूथों को मजबूत करने रणनीति के तहत हर लोकसभा क्षेत्र में बूथों को चिन्हित किया गया है। सांसद-विधायकों सहित हर सीट पर कुछ लोगों की टीम लगाई जाएगी। विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत के बाद अब भाजपा उससे आगे बढ़कर लोकसभा इलेक्शन में क्लीन स्वीप की तैयारियों में जुट गई है।

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मप्र की नई सरकार की सक्रियता देखकर साफ लग रहा है कि भाजपा मिशन 2024 के लिए मिशन मोड में आ गई है। इस कम समय के कार्यकाल में ही मोहन सरकार के एक्शन ने हिंदुत्व से चाहत, आहत को राहत और ब्यूरोक्रेसी को हद में रहने का मैसेज दे दिया है। सरकार के कामकाज पर प्रधानमंत्री मोदी के विजन और लोकसभा इलेक्शन, दोनों को साधने की रणनीति की छाप भी नजर आ रही है। मुख्यमंत्री मोहन के सत्ता संभालते ही यह साफ था कि लोकसभा चुनाव में अब अधिक समय नहीं बचा है। ऐसे में सरकार के लिए तुरंत एक्शन और एग्जीक्यूशन की चुनौती होगी। मोहन सरकार शुरुआती करीब एक महीने के सफर में ही इसी ट्रैक पर चलती नजर आ रही है। मोहन सरकार ने इस तरह से काम किया है कि मोदी

का विजन और लोकसभा इलेक्शन, दोनों को साधा जा सके। हाल में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत में मोदी की गारंटी को काफी अहम माना जा रहा है। ऐसे में पार्टी ने मोदी की गारंटी को लोकसभा चुनाव में प्रमुखता से लोगों के बीच पहुंचाने का फैसला किया है। पार्टी आने वाले समय में मोदी की गारंटी को जनता के बीच अधिक से अधिक पहुंचाने पर केंद्रित रहेगी। भाजपा ने 2024 में चुनाव प्रचार की थीम भी मोदी की गारंटी पर फोकस करने पर फैसला लिया है। भाजपा के चुनावी वादों और भारत के प्रति उसके दृष्टिकोण को मोदी की गारंटी के नारे के तहत ही फोकस किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी यह कहते रहे हैं कि जब सभी से उम्मीद खत्म हो जाती है, तब मोदी की गारंटी शुरू होती है।

भाजपा की तरफ से प्रधानमंत्री मोदी की सलाह पर पार्टी का जोर गरीबों, युवाओं, किसान और महिलाओं पर होगा। पदाधिकारियों के सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाएं यदि गरीबों, युवाओं, किसानों और महिलाओं तक सही से पहुंच जाएं तो इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। भाजपा के इस कदम को विपक्ष के जाति आधारित जनगणना के विषय को तूल देने की कोशिशों की काट के रूप में देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी यह कह चुके हैं कि उनके लिए देश में गरीब, युवा, किसान और महिलाएं ही चार जातियां हैं। प्रधानमंत्री ने साफ कहा कि अगर इनका कल्याण हो जाए तो 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र होने से कोई नहीं रोक सकता। मप्र में भाजपा विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से लोकसभा क्षेत्रों में मतदाताओं को साध रही है। चुनाव में जीत हासिल करने में भाजपा का यह कदम काफी अहम माना जा रहा है। भाजपा का मानना है कि देश में चल रही विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर काफी पॉजिटिव रिएक्शन मिल रहा है। इसका उद्देश्य अपनी कई कल्याणकारी योजनाओं की अहर्ता वाले लाभार्थी तक पहुंच प्रधानमंत्री करना है। भाजपा ने अपने सदस्यों से यह प्रधानमंत्री करने को कहा है कि अधिक से अधिक संख्या में लोगों को इसका लाभ मिले। मुख्यमंत्री मोहन लगातार इन यात्राओं में शामिल हो रहे हैं।

विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद अब कांग्रेस का फोकस लोकसभा चुनाव पर है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने पदभार ग्रहण कार्यक्रम में शक्ति प्रदर्शन कर इस बात का संकेत दे दिया है कि हार को भुलाकर कांग्रेस नए जोश के साथ लोकसभा चुनाव में उतरेगी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी लोकसभा चुनाव की तैयारी के लिए नई टीम के साथ मैदान में उतरेंगे। क्षेत्रीय और जातीय समीकरण के आधार पर युवाओं को आगे किया जाएगा। यह ठीक उसी प्रकार से होगा जिस तरह से कमलनाथ के स्थान पर जीतू पटवारी को अध्यक्ष और उमंग सिंघार को विधायक दल का नेता बनाकर संदेश दिया है। लेकिन पटवारी के लिए लोकसभा चुनाव आसान नहीं होने वाला है। उनके सामने कई चुनौतियां हैं। पटवारी की मुख्य परीक्षा मप्र में कांग्रेस के वोट शेयर को बरकरार रखना होगा और 2024 का लोकसभा चुनाव उनके नेतृत्व की असली परीक्षा होगी। हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में, भाजपा ने 163 सीटें जीती और 48.55 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया। कांग्रेस का वोट शेयर 2018 में 40.89 के मुकाबले लगभग 40.40 प्रतिशत पर रहा, भले ही उसकी सीटें 114 से गिरकर 66 सीटों पर आ गईं। मप्र में पिछले चार चुनावों (2003, 2008, 2013 और 2018) में कांग्रेस का वोट शेयर बढ़ा है, जो 2003 में 32 प्रतिशत, 2008 में 32 प्रतिशत, 2013 में 36 प्रतिशत और 2018 में 40.89 प्रतिशत था। राज्य में भाजपा का वोट शेयर 44.88 फीसदी (2003), 38 फीसदी (2008), 45 फीसदी (2013) और 41 फीसदी (2018) रहा है। 2023 के विधानसभा चुनाव में, भाजपा ने 50 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर के साथ 101 सीटें जीती और लगभग 50 सीटों पर उसने 40 से 50 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया। कुल मिलाकर, सात प्रतिशत से अधिक की बढ़त ने मप्र में भाजपा की जीत पुख्ता कर दी, जिसे उसके मूल संगठन आरएसएस की प्रयोगशाला कहा जाता है।

गौरतलब है कि पिछले दो लोकसभा चुनावों, 2014 और 2019, में भाजपा मप्र में सीटों और वोट शेयर के मामले में कांग्रेस से काफी आगे रही है। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 54 फीसदी से ज्यादा वोट शेयर के साथ 28 में से 26 सीटें जीतीं। 2019 में 58 प्रतिशत वोट शेयर के साथ 29 में से 28 सीटें जीतीं। जबकि, कांग्रेस ने 34.5 प्रतिशत वोट शेयर के साथ जीत हासिल की। 2019 में कांग्रेस को भाजपा से 86 लाख वोट कम मिले थे। अंतर का यह आंकड़ा 2014 में 56 लाख और प्रतिशत में 19.13 था। अब कांग्रेस को भी चिंता सता रही है कि लोकसभा चुनाव तक मप्र का माहौल राममय होने के कारण वह वोटों के अंतर को कैसे पाटेगी।

● **सुनील सिंह**

## क्षेत्रीय संतुलन साधने पर जोर

संभवतः लोकसभा चुनाव फरवरी में घोषित हो जाएंगे। इस हिसाब से देखा जाए तो पटवारी के सामने पहले चुनौती कार्यकर्ताओं को लोकसभा चुनाव के लिए तैयार करने की होगी। उन्हें निराशा के भाव से निकालकर भाजपा से मुकाबले के लिए प्रेरित करना होगा। प्रत्याशी चयन के साथ-साथ चुनिंदा लोकसभा सीटों पर अभी से काम करना होगा। विधानसभा चुनाव में पार्टी जरूर हार गई पर छिंदवाड़ा सहित दस लोकसभा क्षेत्र ऐसे हैं, जहां विधानसभा चुनाव 2023 के परिणाम के हिसाब से भाजपा को पराजय मिली है। इनमें मुरैना, भिंड, ग्वालियर, टीकमगढ़, मंडला, बालाघाट, रतलाम, धार और खरगोन सीट शामिल हैं। कांग्रेस को इसको देखते हुए रणनीति बनाने की जरूरत है। कांग्रेस ने पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और दिग्विजय सिंह से नेतृत्व छीनकर भले ही युवा नेताओं को कमान सौंप दी है, लेकिन आने वाले लोकसभा चुनाव में मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस जहां 96 सीटों से घटकर 66 पर आ गई, वहीं पिछले लोकसभा चुनाव के परिणाम को देखा जाए तो वह भाजपा से 23 प्रतिशत मतों से पीछे है। अब कांग्रेस को भी चिंता सता रही है कि लोकसभा चुनाव तक मप्र का माहौल राममय होने के कारण वह वोटों के अंतर को कैसे पाटेगी। जाहिर है कि मप्र के विधानसभा चुनाव परिणामों को देखें तो कांग्रेस दस लोकसभा क्षेत्रों में बढ़त बनाए हुए है लेकिन वह इसे लोकसभा चुनाव परिणामों में बरकरार रख पाएगी, यह कह पाना मुश्किल है।

# भोपाल को लगेंगे विकास के पंख

नए साल में आप भोपाल में सुन सकेंगे कि अगला स्टेशन डीबी मॉल है। दरवाजें बाईं ओर खुलेंगे...कृपया दरवाजों से हटकर खड़े हों। मेट्रो ट्रेन मई-जून तक दौड़ने लगेगी और आप उसमें सफर कर सकेंगे। जीजी फ्लाई ओवर ब्रिज भी पूरा हो जाएगा, जबकि कोलार सिक्सलेन, ऐशबाग ब्रिज लास्ट स्टेज तक पहुंच जाएंगे। इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े कई नए प्रोजेक्ट शुरू भी होंगे, जो आपकी जिंदगी में बदलाव ला देंगे। इनके बारे में सिलसिलेवार जानते हैं...। मेट्रो का प्रॉयोरिटी कॉरिडोर सुभाषनगर से एम्स तक करीब 6.22 किमी लंबा है। ऑरेंज लाइन में आने वाले 8 स्टेशनों में से पांच स्टेशन-सुभाषनगर, केंद्रीय स्कूल, डीबी मॉल, एमपी नगर और रानी कमलापति स्टेशन के बीच 3 अक्टूबर को ट्रायल रन हो चुका है। इसके बाद ट्रेन को ट्रैक पर दौड़ाया जा रहा है। जनवरी में दूसरी ट्रेन भी आ जाएगी। मेट्रो स्टेशन के बाकी बचे कामों पर भी फोकस है।

मई-जून 2024 में मेट्रो को आम लोगों के लिए चलाने का टारगेट है। इसलिए मेट्रो के बाकी बचे कामों पर फोकस किया जा रहा है। खासकर अलकापुरी, एम्स और डीआरएम ऑफिस के स्टेशनों के काम में तेजी लाई गई है। वहीं, सुभाषनगर, डीबी मॉल के सामने, एमपी नगर, रानी कमलापति और केंद्रीय स्कूल स्टेशनों पर सिविल वर्क पूरे होने के बाद फिनिशिंग वर्क भी पूरे किए जा रहे हैं। डीबी मॉल, केंद्रीय स्कूल और एमपी नगर स्टेशनों पर शेड का काम भी हो रहा है। मेट्रो के संचालन की शुरुआत जून में हो जाएगी। आरकेएमपी से सुभाष नगर तक के रूट पर विधानसभा चुनाव से पहले ही ट्रायल रन हो चुका है। सुभाष नगर, डीबी सिटी मॉल, प्रगति और रानी कमलापति स्टेशन के सामने बनने वाले मेट्रो स्टेशनों का काम 80 प्रतिशत तक काफी हद तक पूरा हो चुका है। ऐसा पहली बार है जब किसी रेलवे क्रॉसिंग पर रेलवे ओवरब्रिज और एफओबी एक साथ बन रहे हैं। ऐशबाग में 648 मीटर लंबे और 8.40 मीटर चौड़े आरओबी के साथ फुटओवर ब्रिज भी बन रहा है। 25 करोड़ की लागत से हो रहा काम मार्च तक पूरा हो जाएगा।

जीजी फ्लाईओवर ब्रिज (गायत्री मंदिर से गणेश मंदिर तक) का करीब 90 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। अभी सर्विस लेन एमपी नगर थाने से डाक भवन के बीच बनाई जा रही है। वहीं, ब्रिज के दोनों तरफ एंटर पाइंट पर स्लैब भी डाला जा रहा है। 2 से 3 महीने बाद ट्रैफिक शुरू हो सकता है। फ्लाईओवर की लागत 138 करोड़ रुपए है। 20 दिसंबर 2020 को इसकी शुरुआत हुई थी। ब्रिज दो साल में यानी दिसंबर 2022 तक बनकर तैयार हो जाना था, लेकिन कोरोनाकाल, नर्मदा लाइन की शिफ्टिंग नहीं होने समेत अन्य अड़चनों की वजह से फ्लाईओवर पूरा नहीं हो सका। अफसरों का कहना है कि इन्हीं अड़चनों को दूर कर लिया गया है और काम ने फिर रफ्तार पकड़ी है। फ्लाईओवर करीब 90 प्रतिशत पूरा हो चुका है। ट्रैफिक के लिहाज से शहर का सबसे व्यस्त इलाका है- आरकेएमपी से बोर्ड ऑफिस चौराहा होते हुए सुभाष नगर तक का हिस्सा। शहर के डेवलपमेंट के समय बोर्ड ऑफिस चौराहा और आसपास की सड़कें केवल 3500 पीसीयू (पैसेंजर कार यूनिट यानी हर घंटे गुजरने वाली गाड़ियों की संख्या) के हिसाब से डिजाइन की गई थी। अब यहां पीसीयू 15000 से अधिक है। दिनभर में कई बार ट्रैफिक जाम यहां आम है। अब इस इलाके में गणेश मंदिर से गायत्री मंदिर तक जीजी फ्लाईओवर का काम मार्च में पूरा हो जाएगा और सुभाष नगर से आरकेएमपी तक मेट्रो ट्रेन भी शुरू हो जाएगी। यानी ये इलाका इंफ्रास्ट्रक्चर के नजरिए से शहर का सबसे समृद्ध इलाका होगा। गणेश मंदिर से गायत्री मंदिर तक 126 करोड़ से बन रहे जीजी फ्लाईओवर का 90 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। आने वाले तीन महीनों में यह निर्माण पूरा हो जाएगा। यानी 2024 में शहरवासियों को जीजी फ्लाईओवर की सुविधा मिलने लगेगी। 60 प्रतिशत ट्रैफिक तो फ्लाईओवर से ही गुजर जाएगा। जीजी फ्लाईओवर और मेट्रो के पिलर के बीच मौजूदा रोड नए सिरे से व्यवस्थित होगी। केवल एमपी नगर के भीतर और बोर्ड ऑफिस चौराहा से न्यू मार्केट या चेतक ब्रिज जाने वाले वाहन ही नीचे की सड़क का इस्तेमाल करेंगे। पिलर्स के किनारे सर्विस रोड बनेगी। पिलर्स के बीच ग्रीनरी डेवलप होगी।

ऐशबाग में 17.37 करोड़ रुपए से फ्लाईओवर ब्रिज बनाया जा रहा है। इसकी लंबाई 648 मीटर और चौड़ाई साढ़े 8 मीटर रहेगी। ब्रिज बनने के बाद हर रोज एक लाख लोगों को फायदा होगा। ऐशबाग शहर का काफी पुराना इलाका है। यहीं पर रेलवे गेट है, जो अंडरब्रिज बनने के बाद बंद कर दिया गया। ऐसे में ऐशबाग दो हिस्सों में बंट गया। रहवासियों को काफी घूमकर गुजरना पड़ता है। ऐसे में रेलवे ओवरब्रिज बनाने की मांग की जा रही थी। आखिरकार यह मांग पूरी हो गई है। भोपाल में मप्र के पहले एलिवेटेड डबल-डेकर 6 लेन फ्लाईओवर ब्रिज के निर्माण में कुल 306 करोड़ रुपए खर्च होंगे। बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) में बनने वाले ओवरब्रिज की लंबाई 3 किलोमीटर होगी और यह 33 मीटर चौड़ा रहेगा। नीचे गाड़ियां तो ऊपर मेट्रो दौड़ेगी। वहीं, इंदौर-भोपाल आना-जाना आसान होगा। बैरागढ़ में जाम में गाड़ियां नहीं फंसेंगी। अगले 3 महीने में इसका काम शुरू हो सकता है। बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) में 27 करोड़ रुपए से फ्लाई ओवरब्रिज बन रहा है। इससे लगभग 5 लाख आबादी को फायदा मिलेगा। संत नगर की ओर उतरने वाला फ्लाइओवर 7.50 मीटर चौड़ा एवं 300 मीटर लंबा होगा। सर्विस रोड के साथ लगभग 10 करोड़ की अतिरिक्त राशि इसमें खर्च होगी।

● **जितेंद्र तिवारी**

## कोलार सिक्सलेनः 80 प्रतिशत तक काम पूरा होने की उम्मीद

राजधानी का पहला सिक्सलेन कोलार रेस्ट हाउस से गोल जोड़ तक कुल 15.10 किलोमीटर लंबा है। कुल 222 करोड़ रुपए लागत सिक्सलेन बन रहा है। गोल जोड़ से डी-मार्ट तक दोनों ओर लेन कम्पलीट हो चुकी है, जबकि एक लेन सर्व-धर्म ब्रिज तक बन चुकी है। साल 2024 में 80 प्रतिशत तक काम पूरा होने का टारगेट है। कोलार सिक्स लेन के बीचोंबीच 3 मीटर जगह छोड़ी जा रही है। ताकि, फ्यूचर में मेट्रो के काम में कोई दिक्कतें न हो। वहीं, सीसीटीवी कैमरे और ट्रैफिक सिग्नल भी लगेंगे। सर्विस लेन के साथ 27 पुल-पुलियाएं भी बनाई जा रही है। सबसे बड़ा पुल सर्व-धर्म कॉलोनी के पास कलियासोत नदी पर 5 करोड़ रुपए में बन रहा है, जो मौजूदा ब्रिज से जोड़कर बनाया गया है। तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 29 अक्टूबर 2022 को भूमिपूजन किया था।

# इंदौर सातवीं बार अव्वल

स्वच्छता सर्वेक्षण-2023 में इंदौर के साथ इस बार सूरत को भी नंबर वन का खिताब मिला। देशभर के 4477 शहरों के बीच यह कड़ी प्रतिस्पर्धा हुई, जिसमें 56 लाख से अधिक फोटो सर्वेक्षण के दौरान खींचे गए और पौने 2 करोड़ नागरिकों ने ऑनलाइन और प्रत्यक्ष में अपनी प्रतिक्रियाएं दीं। हालांकि जनता से मिली प्रतिक्रिया में इंदौर पीछे रहा और सूरत को ज्यादा अंक मिले। 900 जीबी पीडीएफ दस्तावेजों की फाइलें दिल्ली भेजी गईं और नगर निगम ने पूर्व के वर्षों में स्वच्छता को लेकर जो सफलताएं अर्जित की, उसके परिणाम स्वरूप ही इंदौर सातवीं बार नंबर वन आ सका।

शहरी स्वच्छता का यह आठवां संस्करण है, जिसमें सात बार लगातार इंदौर नंबर वन आया। मगर गत वर्ष की तरह इस बार भी सूरत ने न सिर्फ कड़ी टक्कर दी, बल्कि इंदौर की बराबरी में आ खड़ा हुआ। 1 करोड़ 58 लाख 80 हजार से अधिक लोगों ने फेसबुक, ट्विटर या अन्य तरीके से ऑनलाइन प्रतिक्रियाएं इस सर्वेक्षण के दौरान दीं, तो 19 लाख 82 हजार से अधिक प्रतिक्रियाएं आमने-सामने प्राप्त हुईं। यानि इस तरह पौने 2 करोड़ से अधिक नागरिकों ने स्वच्छता को लेकर अपने सुझाव दिए। इस पूरे सर्वेक्षण के दौरान देशभर से केंद्रीय मंत्रालय को 56 लाख 26 हजार 805 फोटो प्राप्त हुए। इस बार छावनी बोर्ड भी 61 शामिल किए गए, जिसमें महू केंटोन्मेंट बोर्ड ने बाजी मारी और वह भी नंबर वन रहा। सर्विस लेवल प्रोग्रेस के मामले में ही इंदौर नगर निगम ने 6 अंक सूरत से ज्यादा हासिल किए, मगर पब्लिक फीडबैक यानि जनता से मिले सुझाव में वह सूरत से पीछे रहा। दरअसल परिणाम घोषित होने के बाद भी सोशल मीडिया पर इंदौर की जनता की भी यही प्रतिक्रिया सामने आई कि इस बार इंदौर एक नंबर के लायक नहीं था, क्योंकि सफाई व्यवस्था पटरी से उतर गई। जगह-जगह कचरे-कूड़े के ढेर नजर आते हैं। सर्विस लेवल प्रोग्रेस में इंदौर को 4709 तो सूरत को 4703 नंबर हासिल हुए, लेकिन सिटीजन वाइस स्कोर में सूरत ने बाजी मारी। उसे 2145 नंबर हासिल हुए तो इंदौर को 2139 नंबर ही मिल सके। दस्तावेजीकरण में अवश्य इंदौर और सूरत 2500 नंबरों के साथ बराबरी पर रहा, लेकिन सर्विस लेवल प्रोग्रेस में 6 अंक ज्यादा हासिल कर इंदौर बराबरी पर कायम रहा।

यहां तक कि पब्लिक फीडबैक यानि जनता से मिले सुझावों में भी सूरत आगे रहा। इंदौर को 2139 अंक मिले, तो सूरत को 2145 अंक सिटीजन वाइस स्कोर में प्राप्त हुए हैं। दरअसल इंदौर की तरह ही सूरत ने सफाई पर पूरा फोकस किया और वहां की जनता ने भी सफाई को जनआंदोलन के रूप में ले लिया है और जो इंदौर के लोग सूरत होकर आए वे भी स्वीकार करते हैं कि बीते कुछ दिनों में इंदौर से बेहतर सफाई सूरत में नजर आती है। दरअसल बीते सालभर से इंदौर की सफाई व्यवस्था पटरी से उतरी। महापौर और आयुक्त में तालमेल न बैठ पाने और अन्य कारणों से भी स्वच्छता प्रभावित हुई। यह तो गनीमत है कि इंदौर नगर निगम ने पूर्व के वर्षों में स्वच्छता को लेकर जो उपलब्धियां हासिल कर रखी हैं, उसके परिणाम स्वरूप इस बार वह नंबर वन पर कायम रहा, अन्यथा सूरत के साथ नवी मुंबई भी इसे कड़ी टक्कर दे रहे हैं और अब जो आठवीं बार स्वच्छता में नंबर वन बनने का दावा महापौर भार्गव ने किया है, उसके लिए इंदौर निगम को कसकर मेहनत करनी पड़ेगी और नए कचरा वाहनों के साथ-साथ कई नए प्रयोग भी करने होंगे, क्योंकि स्वच्छता इंदौर की यूएसपी भी है, जिसने देश और दुनिया में उसका नाम रौशन किया है और इससे निवेश सहित अन्य क्षेत्रों पर भी काफी फर्क पड़ा।

वहीं स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 में 5 स्टार रेटिंग के साथ भोपाल देश का पांचवां सबसे साफ शहर रहा। जैसे ही ये खबर लगी भोपाल में नगर निगम के कर्मचारी जश्न मनाने लगे। बीएमसी कार्यालय के सामने सफाई कर्मचारी डांस करने लगे। इस दौरान नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी ने ढोल भी बजाया और कर्मचारियों का मुंह मीठा कराया। पिछली रैंकिंग छठवीं थी। इससे पहले शहर ने वर्ष 2017 और 2018 में लगातार दो साल देश में दूसरी रैंक हासिल की थी। स्वच्छता से जुड़े अफसरों की मानें तो गीले, सूखे, मेडिकल समेत 5 तरह के कचरे की प्रोसेसिंग में भोपाल में बेहतर काम हुआ है। दिल्ली में भारत मंडपम में कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। इस मौके पर मप्र के मुख्यमंत्री मोहन यादव मौजूद रहे।

स्वच्छता सर्वे में देश के सबसे साफ शहर इंदौर को कचरे के सोर्स सेग्रीगेशन पैरामीटर पर 98 प्रतिशत अंक मिले हैं। वहीं भोपाल कचरे के सोर्स सेग्रीगेशन के मामले में इंदौर से 3 अंक पीछे हैं। भोपाल कचरे के सोर्स सेग्रीगेशन के पैरामीटर को 95 प्रतिशत ही पूरा कर रहा है। स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 की रिपोर्ट के मुताबिक पब्लिक टॉयलेट में साफ-सफाई के पैरामीटर पर इंदौर शत-प्रतिशत खरा साबित हुआ है। जबकि भोपाल को पब्लिक टॉयलेट की साफ-सफाई 97 प्रतिशत ही पैरामीटर्स के अनुरूप हो रही है। रिपोर्ट के मुताबिक पब्लिक टॉयलेट की साफ-सफाई कैटेगरी में इंदौर को 100 और भोपाल को 97 प्रतिशत अंक मिले हैं। इस पैरामीटर के मूल्यांकन में भोपाल इंदौर से 3 अंको से पीछे रह गया।

● **डॉ. जय सिंह सेंधव**

## दुनिया को लुभा रही इंदौर की स्वच्छता

देश के सबसे स्वच्छ शहर का सतत् सात बार तमगा पाने वाले इंदौर की छवि वैश्विक पटल पर उभरकर आई है। ऐतिहासिक महत्व वाले इस शहर में पर्यटकों की आवाजाही यूं तो पहले भी ज्यादा थी लेकिन जब से शहर स्वच्छता का सिरमोर बनना शुरू हुआ तब से यहां आने वालों की संख्या में खासा इजाफा हो गया। अभी तक जिन ऐतिहासिक इमारतों को ही देखने यदा-कदा पर्यटक शहर आते थे वहीं अब यहां की स्वच्छता देखकर, उसे कायम रखने की नीति को समझने और स्वच्छ हुए शहर की खूबसूरती को निहारने के लिए पिछले कुछ वर्षों में पर्यटकों की संख्या बढ़कर तीन गुना हो गई है। यहां आने वाले पर्यटक केवल आम लोग ही नहीं बल्कि देश-विदेश के प्रशासनिक अधिकारी, नेता, सामाजिक संगठन और एजेंसियां भी हैं। शहर को महानगर बनाने की घोषणा के बाद तो विकास के पंख ही लग गए और आसपास के शहर भी अब इंदौर से जुड़ने के लिए लालायित हैं। वैसे शहर की ओर पर्यटकों और निवेशकों की बढ़ती रूचि की वजह कई हैं। इंदौर के एक तरफ महाकाल ज्योतिर्लिंग है तो दूसरी तरफ ओंकारेश्वर-ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग जहां अविस्मरणीय विकास हो रहा है। उज्जैन में महाकाल कॉरिडोर बनने के बाद तो लाखों दर्शनार्थी प्रतिदिन आ रहे हैं और ओंकारेश्वर में आदिगुरु शंकराचार्य की 108 फीट ऊंची प्रतिमा के अनावरण और वहां हो रहे अद्वितीय विकास ने आकर्षण और भी बढ़ा दिया है।

# बीमार गोवंश को नोंच रहे कुत्ते-कौवे

राजगढ़ जिले की गोशालाओं में आए दिन गाय और बछड़े तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहे हैं। बीमार पड़ी गाय को कुत्ते और कौवे नोंचकर खा रहे हैं। गायों की दुर्दशा के ऐसे दृश्य ज्यादातर गोशालाओं में देखने को मिल जाएंगे। मौतों का आंकड़ा इतना ज्यादा हो गया है कि अब इसे रजिस्टर में लिखना बंद कर दिया गया है। ऐसे हालात की वजह कड़ाके की ठंड के साथ ही गोशाला का कुप्रबंधन भी माना जा रहा है। इसके बावजूद प्रशासन ने कोई एक्शन नहीं लिया है। राजगढ़ जिले में 128 सरकारी गोशालाएं हैं। इतनी संख्या में यहां गोशालाएं होने के बाद भी आखिर गायों की ऐसी दुर्दशा क्यों हो रही है। इसकी झलक खिलचीपुर में सरकार से अनुदान प्राप्त सबसे बड़ी श्रीकृष्ण गोशाला में देखने को मिला। जब पड़ताल की गई तो गोशाला के अंदर खुले मैदान में सैकड़ों गाय कीचड़ में खड़ी हुई थीं। गोबर नहीं उठाने की वजह से मिट्टी के साथ मिलकर यह पूरा एरिया दलदल सा बन गया है। गोशाला के अंदर बने कमरे और टीन शेड लगे हॉल में गाय और बछड़ों के जगह-जगह शव पड़े थे। इलाज नहीं मिलने से कई गाय बुरी तरह तड़प रही थीं। कुत्ते और कौवे, बीमार गाय को नोंच रहे थे। उनसे बचने के लिए गाय छटपटा रही थी, लेकिन उसे बचाने वाला कोई नहीं था। रजिस्टर को देखने पर पता चला कि अगस्त, सितंबर और अक्टूबर के तीन महीने में यहां 300 से ज्यादा गायों की मौत हुई है। लगातार मौतें होने से पिछले दो-तीन महीने से रिकॉर्ड में मौतों को शामिल ही नहीं किया गया है। गोशाला के चौकीदार रतनलाल कहते हैं- यहां गाय की मौत होने पर रजिस्टर में एंट्री की जाती है। ठंड के बाद गायों की मौत की संख्या बढ़ गई है। मृत गायों को उठाकर ले जाने वाले नगर परिषद के कर्मचारियों ने रजिस्टर में अब संख्या लिखना बंद कर दिया है।

श्रीकृष्ण गोशाला समिति के सचिव राधेश्याम गुप्ता का कहना है कि हमारी गोशाला की कैपेसिटी 630 गाय की है, लेकिन वर्तमान में यहां 1100 से अधिक गाय मौजूद हैं। इतनी गाय आईं कहां से, यह पूछने पर कहते हैं कि इस समय खेतों में फसल लहलहा रही है। ग्रामीण फसलों को बचाने के लिए गायों को गोशाला में छोड़कर जा रहे हैं। जगह नहीं होने का हवाला देते हैं तो वे विवाद करते हैं। हमें धमकाकर गायों को छोड़ जाते हैं। जिन गायों को लोग लेकर आ रहे हैं, उनमें से ज्यादातर की हालत खराब होती है। वे इतनी कमजोर होती हैं कि इतनी गायों के बीच रहना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। ग्रामीण तो यहां गाय लेकर आते ही हैं। खिलचीपुर नगर से भी बीमार और घायल गायों को नगर परिषद के कर्मचारी छोड़कर चले जाते हैं। इनके लिए हमने अलग हॉल बना रखा है। अब तक जो गाय यहां पर मरी हैं, उनमें बीमार या फिर कमजोर गाय जो पॉलीथिन खाती हैं, उनकी हुई है। हम गोशाला में गायों को रोज चारा डालते हैं। गायों के लिए सेंधा नमक तक मंगवा रखा है। यहां पर गाय की मौत भूख या प्यास से हुई है, यह कहना पूरी तरह से गलत है। पिछले कुछ दिनों से खराब मौसम और बारिश की वजह से कुछ गाय निमोनिया से पीड़ित हुई हैं, उनकी जरूर मौत हुई है।

गुप्ता का कहना है कि मृत गायों को यहां से लेकर जाने का काम खिलचीपुर नगर परिषद के कर्मचारी करते हैं। तीन कर्मचारी गायों के शवों को उठाने के लिए लगे हुए हैं। ये नगर परिषद के वाहन से शवों को खिलचीपुर से करीब 3 किलोमीटर दूर ट्रेंचिंग ग्राउंड पर लेकर जाते हैं। ट्रेंचिंग ग्राउंड के बारे में पता चलने पर टीम वहां पर भी पहुंची। यहां का दृश्य भी विचलित करने वाला था। खुले मैदान में जगह-जगह मृत गाय पड़ी हुई थीं। शवों को चील-कौवे और कुत्ते नोंच रहे थे। टीम ने शवों के पास जाने की कोशिश की तो खूंखार हो चुके कुत्तों ने हमला करने की कोशिश की। इतना ही नहीं, ट्रेंचिंग ग्राउंड पर कचरे के ढेर के बीच सैकड़ों भूखी गाय तड़पती नजर आईं। कुछ तो पॉलीथिन खा रही थीं। खिलचीपुर में पदस्थ पशु चिकित्सक डॉ. मधुसूदन शाक्यवार का कहना है कि पॉलीथिन खाने के बाद गाय कमजोर हो जाती हैं और ठंड में शरीर का तापमान मेंटेन नहीं कर पाती हैं। यही मौत की वजह बनती है। खिलचीपुर एसडीएम अंकिता जैन का कहना है कि गोशाला का मैटर मेरे संज्ञान में आया था। मैं पशु चिकित्सा अधिकारी के साथ मौके पर खुद गई थी। गोशाला में क्षमता से अधिक गाय हैं। वहां के अध्यक्ष से बात की और उन्हें नोटिस भी जारी किया है। इस संदर्भ में आगे कार्रवाई की जाएगी। गांवों में जो गोशालाएं हैं, वहां संख्या से आधी गाय भी नहीं हैं। ऐसा है तो इस पर भी उचित कार्रवाई की जाएगी। नगर परिषद के कर्मचारियों द्वारा यदि खुले में गायों के शवों को फेंका जा रहा है तो यह पूरी तरह से गलत है। मैं खुद जाकर देखूंगी। ऐसा मिला तो सख्त कार्रवाई करूंगी।

सेमली कांकड़ में गोशाला के मेन गेट पर ताला लटक रहा था। चौकीदार अपने खेत पर काम कर रहा था। आगे ताला देख टीम गोशाला के पिछले हिस्से में पहुंची। यहां मैदान में जगह-जगह गाय की हड्डियां पड़ी हुई थीं। कुछ गायों के शव को कुत्ते नोंच रहे थे। टीम पीछे से गोशाला में घुसी तो 25 से 30 गाय नजर आईं। उनकी हालत भी बहुत बेहतर नहीं थी। गांव में घूमे तो गोशाला के चौकीदार इंदर सिंह मिल गए, उन्होंने बताया कि गोशाला में 35 गाय हैं। यहां 143 गाय दर्ज हैं, जबकि सिर्फ 30 गाय ही मिलीं। मुंडला में कुछ साल पहले बनाई गई इस गोशाला के हाल तो और ज्यादा खराब हैं। मेन गेट टूटा हुआ था और उस पर भी ताला लटका था। एक हॉल में करीब 30 गाय थीं, जबकि दूसरा खाली पड़ा था। न इनके खाने के लिए यहां चारा-भूसा नजर आया, न कोई इनकी देखभाल के लिए मौजूद था। गोशाला के एक कोने में बछड़े का शव पड़ा हुआ था।

**● धर्मेंद्र सिंह कथूरिया**

## लाइट तक नहीं, सभी गेट टूटे मिले

हिनोतिया में 2023 में बनकर तैयार इस गोशाला का मेन गेट रस्सी से बंधा हुआ है। चौकीदार मांगीलाल ने रस्सी खोली। भीतर जाने पर पता चला कि यहां के सभी गेट टूटे हुए हैं। गायों को चारा-भूसा डालने के लिए बनाई गई ढेल भी टूट चुकी है। लाइट की व्यवस्था नहीं है। भीतर अंधेरे में कुछ गाय जमीन पर तड़पती मिलीं। मांगीलाल का कहना है कि लाइट नहीं होने से यहां अंधेरे में रहने को मजबूर हैं। रिकॉर्ड में 138 गाय दर्ज हैं, जबकि 60 गाय थीं। अभयपुर में दूसरी गोशालाओं जैसा ही नजारा था। एक हॉल में कुछ गाय थीं। दूसरा कमरा खाली पड़ा था। इन गायों को देखने वाला कोई नहीं था। यहां पर 183 गाय रजिस्टर में दर्ज हैं, लेकिन गोशाला में 70 गाय मिलीं।

# 'ईमानदार' पर पड़ेगी बिजली की मार

## दिन में सस्ती और रात में महंगी बिजली

मप्र में दिन में सस्ती और रात में मंहगी बिजली देने की तैयारी की जा रही है। मप्र पॉवर मैनेजमेंट कंपनी (पीएमसी) ने पहली बार वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए नया इलेक्ट्रिसिटी टैरिफ प्रस्ताव विद्युत नियामक आयोग को दिया है। माना जा रहा है कि अप्रैल 2024 से मप्र के लोगों को बिजली 3.86 फीसदी महंगी मिल सकती है। मप्र विद्युत नियामक आयोग ने एमपी पॉवर मैनेजमेंट कंपनी की वित्तीय वर्ष 2024-25 की टैरिफ पिटीशन स्वीकार कर ली है। आयोग वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस टैरिफ पर दावे-आपत्तियां बुलाकर 29 जनवरी को जबलपुर, 30 जनवरी को भोपाल और 31 जनवरी को इंदौर में जनसुनवाई करेगा। इसके बाद अप्रैल महीने से प्रदेश के लोगों को बिजली 3.86 फीसदी महंगी मिल सकती है। कहा जा रहा है कि बिजली कंपनी उपभोक्ताओं को शाम 5 बजे के बाद से सामान्य से बढ़ी हुई दर पर बिजली देगी। इसके अलावा चार्ज भी वसूला जाएगा। इस मामले में फैसला अब मप्र विद्युत नियामक आयोग के ऊपर है। हालांकि, इस नियम को केंद्र सरकार के संशोधित विद्युत अधिनियम के तहत लागू होने का दावा किया जा रहा है। दरअसल बिजली कंपनी के नए प्रस्ताव को टाइम ऑफ डे (टीओडी) कहा जा रहा है। केंद्र सरकार के उपभोक्ता अधिकार अधिनियम में टीओडी टैरिफ लागू करने का प्रावधान है, जिसे राज्यों में लागू किया जाना है। इसमें सौर ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाना है।

बिजली कंपनियों ने नए टैरिफ में दरों की बढ़ोतरी करने की याचिका नियामक आयोग में दाखिल की है, जिस पर 22 जनवरी को आयोग आम उपभोक्ताओं से दावे और आपत्तियां लेगा। जबकि केंद्र सरकार ने 14 जून 2023 को दिन में कोयले से उत्पन्न बिजली की जगह पर सस्ती और सौर ऊर्जा का उपयोग ज्यादा होने से दिन के बिजली के दाम 20 फीसदी घटाने संबंधी निर्देश संशोधित बिजली नियम के तहत लागू कर दिए थे। लेकिन बिजली कंपनियों ने इन्हें केवल औद्योगिक और गैर-घरेलू उपभोक्ताओं पर लागू करने के लिए प्रस्तावित किया है, जो कि भेदभावपूर्ण है। माना जा रहा है कि इससे ईमानदार उपभोक्ताओं पर सबसे अधिक मार पड़ने वाली है।

गौरतलब है कि प्रदेश में मध्यमवर्ग को ईमानदार उपभोक्ता माना जाता है। यह वर्ग ईमानदारी से अपने बिलों का भुगतान करता है। इसको देखते हुए बिजली कंपनियां उपभोक्ताओं को एक और करंट लगाने की तैयारी कर रही हैं। अभी तक 100 यूनिट, 200 यूनिट और 300 यूनिट तक बिजली का घरेलू इस्तेमाल करने वालों के पे स्लैब अलग-अलग होते हैं। प्राय: घरेलू छोटे उपभोक्ता 100-150 यूनिट बिजली का इस्तेमाल करते हैं लेकिन अब ऐसी जानकारी मिली है कि 150 यूनिट के बाद कोई स्लैब नहीं होगा। अगर 151 यूनिट बिजली का उपयोग किया गया तो हायर स्लैब में चला जाएगा जिससे उपभोक्ताओं को अब बड़े-बड़े बिल मिलेंगे। इस समय सबसे ज्यादा आपत्ति 151 यूनिट खपत को हाइस्लैब करना है। इसमें सीधे तौर पर प्रतियूनिट दर 6.61 रुपए से बढ़कर 6.87 रुपए हो गई। अन्य टैक्स मिलाकर दर एक रुपया तक बढ़ी है। इसमें फिक्स चार्ज की राशि का अंश भी शामिल है। यदि बिजली कंपनी का प्रस्ताव लागू होता है तो 151 यूनिट से ज्यादा खपत करने वालों को बिजली बिल का झटका लगना तय है, क्योंकि उनका चार्ज बढ़ने के साथ हर 15 यूनिट बढ़ने पर 28 रुपए का फिक्स चार्ज भी जुड़ता जाएगा। इससे जिसकी जितनी ज्यादा खपत होगी उसका बिल उतना और ज्यादा बढ़ता जाएगा।

बिजली कंपनियों ने बिजली का टैरिफ बढ़ाने के लिए याचिका विद्युत विनियामक आयोग में दायर कर दी है। कंपनियों ने 2046 करोड़ के घाटे की भरपाई के लिए 3.86 फीसदी टैरिफ बढ़ाने की मांग की है। प्रस्तावित टैरिफ में बिजली कंपनियों ने अमीर बिजली उपभोक्ताओं को राहत और मध्यमवर्गीय को झटका देने की तैयारी की है। नए टैरिफ में 151 से 300 यूनिट बिजली जलाने वालों का 26 पैसे और 300 यूनिट से ज्यादा बिजली जलाने वालों का सिर्फ 7 पैसे बढ़ाने का प्रस्ताव दिया। विद्युत विनियामक आयोग ने बिजली कंपनियों की इस याचिका को मंजूर कर लिया है। दावे-आपत्तियों की सुनवाई 29 जनवरी से 31 जनवरी तक होगी। इसके बाद आयोग याचिकाओं का सत्यापन करेगा और नए टैरिफ को मंजूरी देगा। नया टैरिफ प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं के लिए 1 अप्रैल से लागू हो जाएगा। बिजली कंपनियों द्वारा प्रस्तावित टैरिफ में इस बार मध्यम वर्गीय बिजली उपभोक्ताओं के लिए बिजली महंगी करने की तैयारी है। एक टैरिफ स्लैब को खत्म करने का प्रस्ताव कंपनियों ने दिया है। इससे उन बिजली उपभोक्ताओं को सबसे ज्यादा झटका लगेगा, जो सबसे ज्यादा बिजली का बिल देने वाले हैं।

बिजली कंपनियों के 30 फीसदी से ज्यादा बिजली उपभोक्ता 151 से 300 यूनिट बिजली जलाने वाले होते हैं। ये वे उपभोक्ता हैं, जिनके घरों में एसी, गीजर जैसे महंगी बिजली उपकरण नहीं होते। इन बिजली उपभोक्ताओं को महंगी बिजली होने पर असर पड़ता है। 300 यूनिट से ज्यादा बिजली जलाने वाले बिजली उपभोक्ता वे हैं, जिनके घरों के हर कमरे में एसी सहित अन्य बिजली के उपकरण लगे होते हैं। इन बिजली उपभोक्ताओं को ज्यादा बिजली बिल आने पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। वर्तमान बिजली के टैरिफ में 151 से 300 यूनिट बिजली जलाने वाले बिजली उपभोक्ताओं को 6.61 रुपए यूनिट के हिसाब से बिजली मिलती है। वहीं 300 यूनिट से ज्यादा बिजली जलाने वाले बिजली उपभोक्ताओं को 6.80 रुपए यूनिट के हिसाब से बिल देना होता है। प्रस्तावित टैरिफ में 151 से 300 यूनिट बिजली जलाने वालों के लिए 6.87 रुपए यूनिट के हिसाब से बिजली बिल देना होगा। यानी इनकी बिजली को 26 पैसे महंगी करने की तैयारी है। वहीं 300 यूनिट से ज्यादा बिजली जलाने वाले बिजली उपभोक्ताओं को भी 6.87 रुपए के हिसाब से बिजली दी जाएगी। यानी इनकी बिजली में सिर्फ 7 पैसे प्रति यूनिट का इजाफा होगा।

● **श्याम सिंह सिकरवार**

# बांध-बैराज की बनेगी डीपीआर

राजस्थान में भाजपा की सरकार बनने के बाद मप्र से होकर गुजरने वाली पार्वती, चंबल और कालीसिंध नदी को जोड़ने और इस प्रोजेक्ट को राष्ट्रीय परियोजना बनाने पर सहमति बनने लगी है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र शेखावत ने इस परियोजना को लेकर मप्र और राजस्थान के अफसरों के साथ गत दिनों दिल्ली में बैठक करके इसकी डीपीआर बनाने के निर्देश दोनों ही राज्यों के अफसरों को दिए हैं। मप्र में इस परियोजना से ग्वालियर-चंबल और मालवा रीजन के 14 जिलों को फायदा होगा। केन-बेतवा के बाद मप्र के लिए नदी जोड़ो का यह दूसरा प्रोजेक्ट माना जा रहा है।

राजस्थान में यह परियोजना पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के नाम से तैयार की जा रही है जिसमें अब नदी जोड़ो प्रोजेक्ट के अंतर्गत मप्र से होकर गुजरने वाली पार्वती, चंबल और कालीसिंध नदी के पानी को एकत्र कर बांध और बैराज बनाने का काम किया जाएगा। इस परियोजना के लिए 90 फीसदी पैसा केंद्र सरकार देगी। दिल्ली में हुई बैठक में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने ईआरसीपी को नदी जोड़ो प्रोजेक्ट के जरिए आगे बढ़ाने के लिए कहा है जिसमें मप्र के जल संसाधन विभाग के अधिकारी शामिल हुए हैं। बैठक में ईआरसीपी के ड्राफ्ट को संशोधित कर एमओयू के बिंदुओं पर राजस्थान और मप्र के अफसरों ने सहमति जताई है। इसके बाद अब मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आपस में बैठक कर फाइनल रूपरेखा तैयार करेंगे। फिर परियोजना का फाइनल एमओयू साइन होगा।

चंबल, पार्वती और कालीसिंध नदियों को जोड़ने वाली इस परियोजना के बाद मप्र के 11 जिलों को फायदा होगा। इससे इन जिलों में दो लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र की सिंचाई क्षमता बढ़ जाएगी। ये जिले इंदौर, सीहोर, गुना, धार, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, भिंड, मुरैना, देवास, शाजापुर, राजगढ़, श्योपुर व शिवपुरी हैं। इसको लेकर दिल्ली में हुई बैठक के बाद एक अधिकारी ने बताया कि इसकी डीपीआर बनाने के बाद ही फायदे के मुख्य मसले सामने आएंगे। इस पर अमल होने पर ग्वालियर चंबल और मालवा के कई जिलों की सिंचाई क्षमता को फायदा जरूर पहुंचेगा।

पार्वती नदी की उत्पत्ति सीहोर जिले की विंध्याचल पहाड़ियों के पश्चिमी श्रेणियों में घने जंगल से सिद्दीकगंज ग्राम के पास 610 मीटर की ऊंचाई पर होती है। सीहोर जिले से यह गुना जिले में प्रवेश करती है और फिर राजस्थान में प्रवेश कर बारां से निकलकर सवाई माधोपुर जिले के पाली ग्राम के निकट में चंबल नदी में विलय होती है। दूसरी ओर, चंबल नदी मप्र के धार, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, भिंड, मुरैना आदि जिलों से होकर बहती है। कालीसिंध नदी मप्र के देवास जिले में बागली गांव के पास विंध्याचल की पहाड़ियों से निकलती है और अपना मार्ग पूरा करके चंबल नदी में विलय हो जाती है, यह नदी सोनकच्छ के समीप से गुजरती है और शाजापुर जिले में प्रवेश करती है। यहां से यह राजगढ़ जिले से निकलकर, राजस्थान के झालावाड़ व अन्य जिलों में जाती है।

दो राज्यों के बीच की इस परियोजना को लेकर राजस्थान की कांग्रेस सरकार में मुख्यमंत्री रहे अशोक गहलोत ने कई बार केंद्र को लेटर लिखे थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विधानसभा चुनाव में ईआरसीपी को राष्ट्रीय परियोजना का दर्जा देने पर सहानुभूति से विचार करने का आश्वासन दिया था। इसके बाद अब चुनाव के बाद इसको लेकर केंद्र सरकार ने बैठक कर योजना फाइनल करने की कवायद तेज की है। सूत्रों का कहना है कि चूंकि पहले राजस्थान में कांग्रेस सरकार थी। इस कारण राजस्थान और मप्र की सरकार और अफसरों के बीच इस मुद्दे को लेकर सहमति नहीं बन पा रही थी। केंद्र सरकार भी इसमें सहयोग नहीं कर रही थी लेकिन अब दोनों ही राज्यों में भाजपा की सरकार है तो लोकसभा चुनाव के पहले इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए डीपीआर बनाने का काम करने को कहा गया है। राजस्थान में इस परियोजना को लेकर बांध बैराज बनाने का काम शुरू भी हो गया है।

● **बृजेश साहू**

## राजस्थान सरकार पहले से कर रही थी काम

राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के दूसरे कार्यकाल में साल 2017 में पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना का खाका तैयार किया गया था। इसके अंतर्गत पार्वती, चंबल और कालीसिंध नदी को जोड़ने की रूपरेखा तैयार की गई थी। इसके जरिए पूर्वी राजस्थान के 14 जिलों को जल संकट से छुटकारा मिलने की बात कही गई थी। पेयजल के साथ किसानों को सिंचाई के लिए भी जरूरत का पानी मिलने का मामला भी सामने आया था। राजस्थान में ईआरसीपी के लिए बांध बनाने व पानी के शेयर को लेकर मप्र और राजस्थान के बीच विवाद के कारण प्रोजेक्ट पर असर पड़ रहा था। राजस्थान सरकार का तर्क था कि 2005 में हुए समझौते के अनुसार ही बांध बना रहे हैं। यदि परियोजना में आने वाले बांध और बैराज का डूब क्षेत्र दूसरे राज्य की सीमा में नहीं आता हो तो ऐसे मामलों में राज्य की सहमति जरूरी नहीं है। दूसरी ओर मप्र सरकार ने कहा था कि मप्र से होकर जाने वाली नदियों के पानी में मप्र की भी हिस्सेदारी रहेगी। इसलिए मप्र सरकार ने ईआरसीपी के लिए एनओसी नहीं दी थी। इसके बाद राजस्थान सरकार ने बांध बनाना शुरू किया तो मप्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। दोनों ही राज्यों के बीच 50 और 75 प्रतिशत शेयर को लेकर विवाद था जो केंद्र के हस्तक्षेप के बाद खत्म हो सकेगा।

# जंगलों में आग का खतरा

## जलवायु में आते बदलावों से साल-दर-साल बढ़ रहा है खतरा

शोधकर्ताओं के मुताबिक बढ़ते तापमान और जलवायु में आते बदलावों के चलते यह समस्या कहीं ज्यादा गंभीर रूप ले रही है। इसकी वजह से साल दर साल जलते जंगलों में इक्कीसवीं सदी के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जो टिम्बर उद्योग को भी नुकसान पहुंचा रही है। ऐसे में यदि भविष्य में इसकी बढ़ती जरूरतों को पूरा करना है तो इससे जुड़ी चुनौतियों को भी गंभीरता से लेना होगा। यदि 2001 और 2019 के बीच जंगल में लगी आग को देखें तो उससे 11 करोड़ हेक्टेयर से अधिक जंगल नष्ट हो गए थे। रिसर्च में यह भी कहा गया है कि जलवायु में आते बदलावों के चलते आग के मौसम की अवधि और उसकी सीमा में भी सदी के अंत तक काफी वृद्धि होने की आशंका है। इसकी वजह से जंगलों में भीषण आग का खतरा भी बढ़ जाएगा। शेफील्ड विश्वविद्यालय और अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता डॉ. क्रिस बॉसफील्ड का कहना है कि, इससे सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलिया, पश्चिमी अमेरिका, कनाडा, साइबेरियाई रूस और ब्राजील शामिल हैं। उनके मुताबिक ऑस्ट्रेलिया जैसे देश, जिन्होंने इस सदी में अपने लकड़ी उत्पादक जंगलों में पहले से ही काफी ज्यादा नुकसान का अनुभव किया है, उन्हें अब स्थानीय लकड़ी की आपूर्ति में उल्लेखनीय कमी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में उनके अनुसार सबसे बड़ा सवाल यह है कि बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अतिरिक्त लकड़ी कहां से आएगी और इसकी पर्यावरण को कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी।

जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के चलते भारतीय जंगलों में आग लगने का खतरा बढ़ रहा है। यह जानकारी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली से जुड़े शोधकर्ताओं द्वारा किए नए अध्ययन में सामने आई है। इसमें कोई शक नहीं कि बढ़ता तापमान और जलवायु में आते बदलाव दुनिया के लिए बड़ा खतरा बनते जा रहे हैं, भारत भी उनसे सुरक्षित नहीं है। यही वजह है कि इसके अलग-अलग प्रभाव देश में अलग-अलग रूपों में सामने आ रहे हैं। इसमें से एक है जंगल में धधकती आग का खतरा। आईआईटी दिल्ली के वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है कि बढ़ते तापमान के साथ भारतीय जंगलों के आग से झुलसने का खतरा समय के साथ बढ़ता जाएगा।

अध्ययन के जो निष्कर्ष सामने आए हैं उनसे पता चला है कि सदी के अंत तक हिमालयी क्षेत्र के साथ-साथ मध्य और दक्षिण भारत में फायर वेदर इंडेक्स (एफडब्ल्यूआई) में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। मतलब कि इन क्षेत्रों में दावाग्नि की घटनाएं पहले के मुकाबले बढ़ जाएंगी। आशंका है कि इन क्षेत्रों में आग लगने का सीजन 12 से 61 दिन बढ़ जाएगा। कुल मिलाकर देखें तो अध्ययन के मुताबिक देश के शुष्क जंगलों में, आग लगने के गंभीर खतरे वाले दिनों की संख्या 60 फीसदी तक बढ़ जाएगी, जबकि नम, आर्द्र जंगलों में, यह आशंका 40 फीसदी तक कम हो जाएगी। वहीं यदि पूरे देश में जंगल में आग लगने की संभावना वाले समय की बात करें तो वो तीन से 61 दिनों के बीच बढ़ जाएगा, और मानसून से पहले, 55 फीसदी से अधिक जंगलों में आग का मौसम कहीं ज्यादा विकराल रूप ले लेगा। इस बढ़ते खतरे को समझने के लिए आईआईटी दिल्ली के शोधकर्ताओं ने भविष्य के जलवायु अनुमानों का एक बहुत ही हाई रिजॉल्यूशन डेटा सेट तैयार किया है। उन्होंने इन आंकड़ों का उपयोग भारत के वन क्षेत्रों के लिए फायर वेदर इंडेक्स (एफडब्ल्यूआई) की गणना के लिए किया है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक जो नतीजे सामने आए हैं वो इस तथ्य से मेल खाते हैं कि बढ़ते तापमान से जंगल में आग लगने का खतरा बढ़ जाता है। लेकिन साथ ही अध्ययन में एक और जो दिलचस्प बात सामने आई है वो यह है कि पश्चिमी घाट और उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों के आर्द्र उष्णकटिबंधीय वनों में बढ़ते तापमान के बावजूद बारिश और आद्रता बढ़ जाएगी। इसके चलते तापमान बढ़ने के बावजूद इन क्षेत्रों में फायर वेदर इंडेक्स में गिरावट देखने को मिलेगी। मतलब कि आग लगने की घटनाएं कम हो जाएंगी। इस अध्ययन के नतीजे जर्नल कम्युनिकेशन्स अर्थ एंड एनवायरनमेंट में प्रकाशित हुए हैं।

सेंटर फॉर एटमॉस्फेरिक साइंसेज के प्रमुख और अध्ययन से जुड़े प्रमुख शोधकर्ता प्रोफेसर डॉ. सोमनाथ बैद्य रॉय ने भारतीय जंगलों में आग लगने की घटनाओं की विस्तृत जांच करने की आवश्यकताओं पर जोर दिया है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला है कि भारतीय जंगलों में लगने वाली आग को समझने और उसे रोकने के लिए देश में जलवायु और जंगलों की विविधता को बहुत करीब से देखने की जरूरत है। उनके मुताबिक कम विवरण वाले व्यापक वैश्विक अध्ययन हमारी आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त नहीं हैं। देखा जाए तो वो हम इंसान ही हैं जो इन बदलावों के लिए जिम्मेवार हैं। आज इंसानी गतिविधियों के चलते पृथ्वी की जलवायु में बड़ी तेजी से बदलाव आ रहें हैं जिसका खामियाजा सभी जीवों को भुगतना पड़ रहा है। अनुमान है कि जिस तरह से वैश्विक उत्सर्जन में होती वृद्धि जारी है। उसकी वजह से धरती बड़ी तेजी से गर्म हो रही है और तापमान बढ़ने का यह सिलसिला भविष्य में भी जारी रहेगा। रिसर्च में सामने आया है कि जलवायु में आते बदलावों के चलते तापमान, बारिश, हवा की गति और सापेक्ष आर्द्रता में बदलाव आने की आशंका है, इसके साथ ही भविष्य में जंगलों में लगती आग की घटनाओं में भी बदलाव आ जाएगा।

एक तरफ जहां दुनिया भर में टिम्बर की मांग लगातार बढ़ रही है। वहीं जंगलों में लगती भीषण आग भी उन पर गहरा दबाव डाल रही है। इस बारे में द ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी (एएनयू), शेफील्ड विश्वविद्यालय और कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी द्वारा किए नए अध्ययन से पता चला है कि जंगल में लगने वाली भीषण आग, दुनियाभर में टिम्बर उत्पादन को खतरे में डाल रही है। यह अध्ययन 2001 से 2021 के आंकड़ों पर आधारित है। शोधकर्ताओं द्वारा आंकड़ों के किए इस विश्लेषण से पता चला है कि दो दशकों के दौरान 1.85 से 2.47 करोड़ हेक्टेयर के बीच लकड़ी उत्पादक जंगल आग की भेंट चढ़ गए थे। यह क्षेत्र कितना बड़ा है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह आकार में करीब-करीब ग्रेट ब्रिटेन के बराबर है।

● **राकेश ग्रोवर**

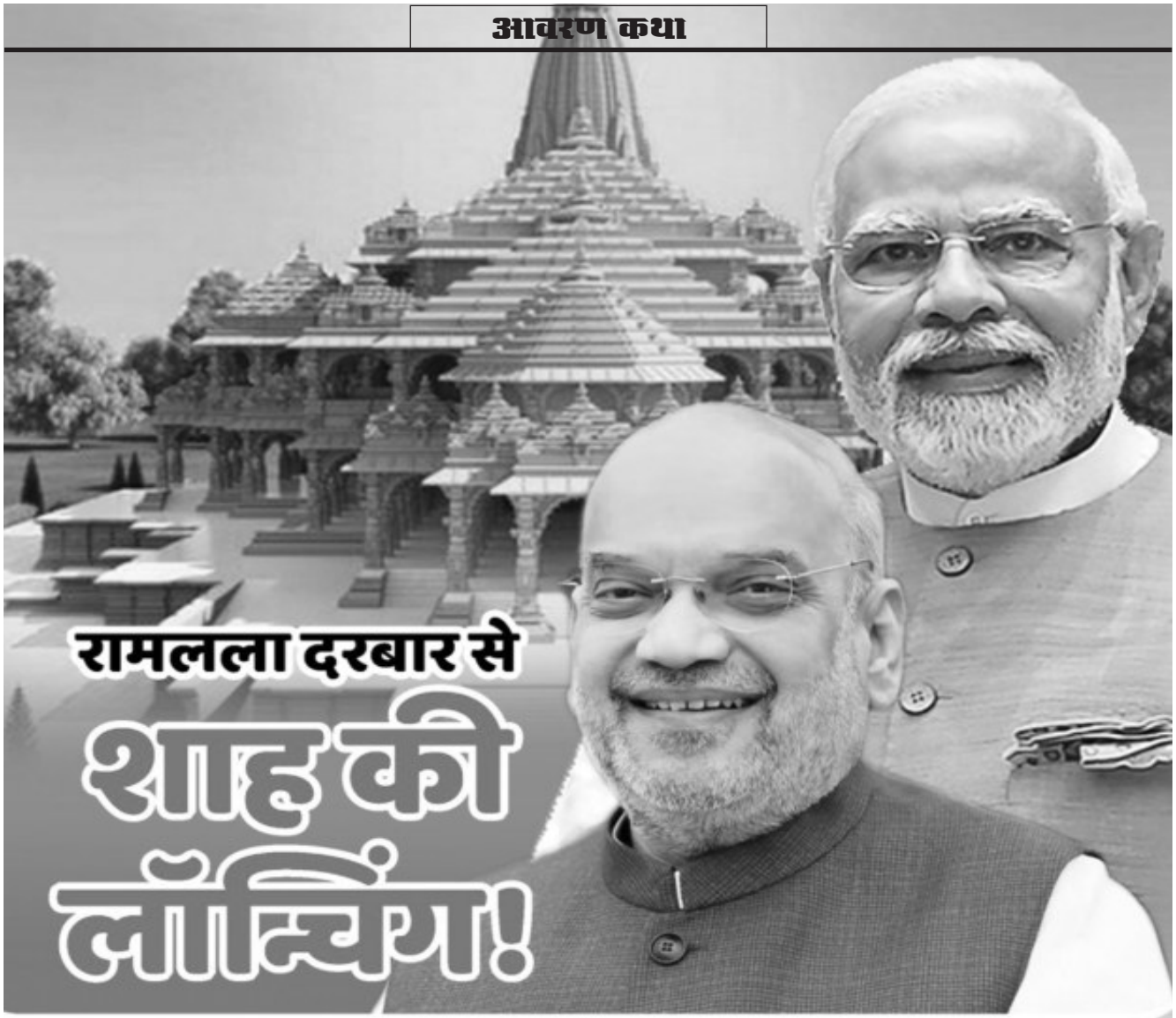

# रामलला दरबार से शाह की लॉन्चिंग!

**राम मंदिर से बनेगा माहौल, अमित शाह को बनाया जाएगा चुनावी ब्रांड**

**क्या अयोध्या देगी 2029 में भाजपा को चुनाव जीतने को ब्रह्मास्त्र?**

***यूं तो अयोध्या का मतलब होता है जिसे शत्रु न जीत सके। लेकिन इतिहास गवाह है कि इस नगर को लेकर कई बार लड़ाईयां हुईं, साजिशें हुईं। अयोध्या की इसी पावन भूमि पर रामलला का जन्म हुआ था। उनकी लीलाएं, चमत्कार और अवतार के भावपूर्ण किस्से कौन नहीं जानता। इसी भावपूर्ण प्रवाह पर सवार होकर भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। अब यह पार्टी 22 जनवरी को रामलला की स्थापना कराकर जहां मिशन 2024 में 400 पार के लक्ष्य को साधने में जुट गई है, वहीं रामलला दरबार से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए गृहमंत्री अमित शाह की लॉन्चिंग भी करेंगे।***

● राजेंद्र आगाल

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में इन दिनों अयोध्या में बन रहे राम मंदिर और उसमें रामलला की मूर्ति विराजित करने को लेकर उत्साह का माहौल है। यह आयोजन भले ही धार्मिक है, लेकिन भाजपा इससे अपना राजनीतिक हित साधने में जुट गई है। भाजपा जहां राम मंदिर आंदोलन के जरिए सत्ता में आई है, वहीं अब वह रामलला दरबार के माध्यम से नई राजनीतिक बिसात भी बिछा रही है। गौरतलब है कि वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियां भाजपा के पक्ष में हैं और मिशन 2024 में पार्टी की जीत आसान दिख रही है। यह नरेंद्र मोदी की आखिरी राजनीतिक पारी भी होगी। ऐसे में उनकी कोशिश है कि अपने उत्तराधिकारी के तौर पर अमित शाह को अभी से प्रस्तुत कर दिया जाए। यानी रामलला की स्थापना से भाजपा मिशन 2024 के साथ ही 2029 को भी साधेगी। भाजपा की इस रणनीति को भांपकर विपक्ष ने इंडिया गठबंधन बनाया है, जो पूरी तरह संगठित नहीं हो पाया है।

तकरीबन 500 साल के इंतजार के बाद राम जन्मभूमि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण जोरों पर है। अभी इस मंदिर को पूर्ण होने में कई साल लगेंगे। लेकिन मिशन 2024 को देखते हुए केंद्र और उप्र में बैठी भाजपा सरकार ने आधे बने मंदिर में रामलला की प्रतिमा स्थापित करने की तैयारी शुरू कर दी है। 22 जनवरी को राम मंदिर में रामलला विराजमान होंगे। इस आयोजन के जरिए भाजपा की रणनीति केंद्र की सत्ता पर लगातार तीसरी बार काबिज होने के लिए अपने अनुकूल पिच तैयार करने की है। लोकसभा चुनाव में भाजपा 50 फीसदी वोट शेयर के साथ 400 सीटें जीतने का लक्ष्य लेकर चल रही है। भाजपा यह लक्ष्य साध पाएगी कि नहीं यह तो चुनाव के बाद ही पता चलेगा, लेकिन राजनीतिक जानकारों का कहना है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के इस आयोजन के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2029 के लिए अपना उत्तराधिकारी तय करेंगे। यानी इस आयोजन के जरिए गृहमंत्री अमित शाह की भावी प्रधानमंत्री के रूप में लॉन्चिंग होगी।

## हैट्रिक पर मोदी की नजर

राम मंदिर... आस्था से जुड़ा यह मुद्दा दशकों तक देश की सियासत की धुरी रहा है। 22 जनवरी को रामलला की अयोध्या के भव्य राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होनी है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के साथ ही विश्व हिंदू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समेत तमाम संगठन इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाने, दिव्य-भव्य रूप देने में जुटे हुए हैं। वहीं, इस आयोजन के सियासी निहितार्थ और 2024 के चुनाव से कनेक्शन पर भी बात हो रही है। राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम से देशभर में जो माहौल बन रहा है उसे भाजपा के लिहाज से लोकसभा चुनाव में जीत की हैट्रिक लगाने के अनुकूल बताया जा रहा है। राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने या न होने को लेकर विपक्ष के असमंजस से भाजपा को और खुलकर फ्रंट फुट पर आने का मौका मिल गया है। भाजपा के तेवर देखकर लग रहा है कि पार्टी राम मंदिर की पिच पर आक्रामक बैटिंग करने वाली है। ऐसा हुआ तो 2024 के चुनावों में उसे विपक्ष पर बड़ी बढ़त मिल सकती है। गत दिनों दिल्ली में भाजपा की बड़ी बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृहमंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे। बैठक में राम मंदिर के 22 जनवरी के आयोजन को लेकर पार्टी की रणनीति पर चर्चा की गई।

भाजपा की पहचान माइक्रो लेवल पर काम करने वाली पार्टी की है। इसकी वही छाप रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर होने जा रहे आयोजन पर भी नजर आ रही है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होनी है लेकिन देश स्तर पर इसे लेकर आयोजनों की श्रृंखला करीब महीनेभर पहले से ही शुरू हो चुकी थी। राम मंदिर को लेकर फिलहाल भाजपा की रणनीति को कई पॉइंट में समझा जा सकता है। श्रीराम और राम मंदिर का मुद्दा आस्था से जुड़ा रहा है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले भाजपा की रणनीति राम मंदिर मुद्दे को लेकर हर जिले, हर गांव-मोहल्ले और घर तक पहुंचने की है। पूजित अक्षत कलश यात्राएं निकलीं तो अब अक्षत के साथ भगवान राम की फोटो और पत्र बांटे जा रहे हैं। नेपाल के जनकपुर धाम से अयोध्या तक घर वास यात्रा हो रही है। घर-घर, गांव-गांव रामलला की भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जानकारी पहुंच जाने के बाद भाजपा की रणनीति आस्था को धार देने की है। इसके लिए दर्शन की मुहिम चलाने से लेकर गांव-गांव मंदिर और अन्य धार्मिक स्थलों पर आध्यात्मिक आयोजन तक, बड़ी रणनीति पर काम चल रहा है। भाजपा ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद दो से ढाई महीने में दो से तीन करोड़ लोगों को राम मंदिर में दर्शन कराने का लक्ष्य रखा है। रामनवमीं भी अधिक दूर नहीं है। रामनवमीं में देश के अलग-अलग हिस्सों से बड़ी तादाद में श्रद्धालु अयोध्या पहुंचते हैं। ऐसे में कहा ये भी जा रहा है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की टाइमिंग भी लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा के मुफीद है।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन में शामिल होने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी के साथ ही लेफ्ट, टीएमसी समेत कई राजनीतिक दलों के शीर्ष नेताओं को न्यौता गया है। लेफ्ट पार्टियों ने

## राम को संप्रदायों में बांटने का प्रयास क्यों?

विश्व हिंदू परिषद के महासचिव चंपत राय श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सचिव भी हैं। इसलिए मंदिर निर्माण का काम काज देखने के साथ-साथ मीडिया को जानकारी देना भी उनका एक काम है। लेकिन अपने विवादित बोल से वो इस पूरी परियोजना में बार-बार विवाद पैदा करते रहते हैं। मंदिर निर्माण शुरू होते ही उन पर जमीनों की खरीदारी में भ्रष्टाचार का आरोप लगा। फिर उन्होंने राम मंदिर आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाने वाले लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को उम्र का हवाला देकर मंदिर उद्घाटन के दिन न आने वाला विवादित बयान दे दिया। उसके बाद सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के निमंत्रण पर एक टीवी चैनल पर बोल दिया कि वही बुलाए जाएंगे जो सन् 1985 से इस आंदोलन से जुड़े हैं। बुलावे से पहले मंदिर निर्माण में उनकी भूमिका देखी जाएगी। लेकिन राजनीतिक बयान देते-देते अब उन्होंने धार्मिक संप्रदायों के बीच कलह पैदा करने वाला बयान भी दे दिया है। एक इंटरव्यू में उन्होंने जोर देकर कहा है कि अयोध्या का राम मंदिर सिर्फ रामानंद संप्रदाय का है, न शैव, न शाक्त। सिर्फ रामानंद संप्रदाय। यह जवाब उन्होंने इस सवाल पर दिया था कि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद किस प्रकार से पूजन-अर्चन किया जाएगा। अव्वल तो इस सवाल पर इस तरह से जवाब देने का कोई अर्थ नहीं है। वैष्णव मंदिरों में वैष्णव विधि से ही पूजन होता है और शैव मंदिरों में शैव विधि विधान से। इसे अलग से उल्लेखित करने की कोई जरूरत ही नहीं होती। लेकिन उनके इस बयान की चर्चा इसलिए भी हो रही है क्योंकि पुरी के शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती ने कुछ दिन पहले ही अयोध्या राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में न जाने की बात कही थी। अब क्योंकि शंकराचार्य पीठ शैव मत की पीठ होती है इसलिए इसे इस तरह से भी देखा जा सकता है कि चंपत राय शंकराचार्यों के न आने को सही ठहराने के लिए यह बात बोल गए हैं।

इस आयोजन से दूरी बनाने का ऐलान कर दिया है। वहीं, कांग्रेस समेत कुछ पार्टियां इसे लेकर असमंजस में हैं। आरजेडी प्रमुख लालू यादव और राबड़ी देवी के आवास के बाहर एक पोस्टर लगा था जिसमें मंदिर को मानसिक गुलामी का मार्ग बताया गया था। विपक्षी पार्टियों के असमंजस और इस तरह को पोस्टर्स को लेकर भाजपा ने आक्रामक रुख अख्तियार कर लिया है। इसे इस बात का संकेत माना जा रहा है कि भाजपा की रणनीति विपक्ष को राम मंदिर की पिच पर घेरने की होगी।

## मंदिर आंदोलन की ब्रांडिंग

भाजपा राम मंदिर आंदोलन को लेकर बुकलेट छपवाकर वितरित करने की भी तैयारी में है। इस बुकलेट के जरिए पार्टी की रणनीति मंदिर आंदोलन में अपनी भूमिका बताने की है। इस बुकलेट में उन घटनाक्रमों का जिक्र करने की भी तैयारी है जो राम मंदिर आंदोलन की राह में रोड़े अटकाने के लिए हुए थे और जिनमें कथित रूप से विपक्ष की भूमिका थी। लोकसभा चुनाव में अब कुछ ही महीने बाकी हैं और सत्ताधारी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की अगुवाई कर रही भाजपा ने चुनावी तैयारियां शुरू कर दी हैं। भाजपा ने अबकी बार 400 के पार सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। पार्टी का टारगेट लोकसभा चुनाव में वोट शेयर 50 फीसदी के पार और एनडीए की सीटों की संख्या 543 सीटों के चुनाव में 400 के पार पहुंचाने का है। अब सवाल यह भी उठ रहे हैं कि भाजपा ने 50 फीसदी से अधिक वोट शेयर और 400 से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य निर्धारित किया है तो उसके पीछे कौन से फैक्टर्स हैं? भाजपा के तरकश में कौन-कौन से तीर हैं जिनके सहारे वह 400 सीटें और 50 फीसदी वोट शेयर का लक्ष्य भेदने की तैयारी कर रही है, भरोसा जता रही है?

## कांग्रेस का अयोध्याकांड

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का मुद्दा ऐसा है, जिसे लेकर कांग्रेस नेतृत्व हमेशा ही भाजपा नेताओं के निशाने पर रहा है। ऐसे में कांग्रेस के लिए कोई भी फैसला ले पाना मुश्किल भरा होता है। बीच-बीच में कांग्रेस की तरफ से आंकलन करने और फीडबैक लेने की भी कोशिश होती रही है। पिछले साल खबर आई थी कि कांग्रेस की तरफ से कुछ लोग अयोध्या जाकर राहुल गांधी के दौरे के लिए वस्तुस्थिति की पैमाइश कर रहे थे, लेकिन उससे ज्यादा कभी कुछ नहीं बताया गया। 22 जनवरी के कार्यक्रम का न्यौता भेजे जाने की बात जब सार्वजनिक हो गई तो कांग्रेस को आधिकारिक रूप से स्वीकार करना पड़ा कि सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे को बुलाया गया है। पहले तो कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने सस्पेंस कायम करने की कोशिश की, ये बोल कर कि 22 जनवरी को सबको मालूम पड़ जाएगा। लेकिन जैसे ही इंडिया ब्लॉक की नेता ममता बनर्जी ने समारोह के बहिष्कार का स्टैंड ले लिया, और दबाव में आकर कांग्रेस को कहना पड़ा कि पार्टी न्यौते को ससम्मान अस्वीकार करती है। कांग्रेस का रुख साफ होने के बाद आचार्य प्रमोद कृष्णम जैसे उप्र के नेता ने दुख का इजहार कर दिया, और हिमाचल प्रदेश सरकार में मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने हर हाल में अयोध्या जाने की घोषणा कर दी। दबाव में कांग्रेस को फिर बैकफुट पर आना पड़ा और समारोह से पहले ही एक प्रतिनिधिमंडल भेजने का फैसला हुआ। उप्र कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और प्रभारी महासचिव अविनाश पांडे के साथ दीपेंद्र हुड्डा, सुप्रिया श्रीनेत जैसे नेता भी पहुंचे, और सरयू में स्नान ध्यान के साथ मंदिरों में पूजा-अर्चना भी की गई। जब 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए कांग्रेस नेताओं के नहीं आने के बारे में पूछा गसर तो अजय राय का कहना था, क्या भगवान राम की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठित नहीं है?

भाजपा की स्थापना के समय से ही अयोध्या और राम मंदिर निर्माण पार्टी के एजेंडे में रहा है। भाजपा राम मंदिर पर फैसले से पहले यह नारा देती रही है कि रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे। भाजपा के इस नारे में तारीख नहीं बताएंगे जोड़कर विपक्ष भी हमलावर रहा है। अब अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारी चल रही है। 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होनी है, भाजपा के बड़े नेता विपक्ष के इसी नारे को आधार बनाकर लगातार हमलावर हैं। यह बता रहे हैं कि अब तो तारीख भी बता दिए। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के काफी पहले से ही पूजित अक्षत कलश यात्रा से अक्षत के साथ निमंत्रण पत्र घर-घर पहुंचाने तक, कई अभियान चले। भाजपा ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद मार्च तक करीब ढाई करोड़ लोगों को अयोध्या में श्रीराम के दर्शन कराने का लक्ष्य रखा है। भाजपा और उसके पितृ संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस राम मंदिर दर्शन अभियान के तहत अलग-अलग क्षेत्रों की नामचीन हस्तियों को अयोध्या ले जाने का प्लान बनाया है। इसमें यह भी ध्यान रखा जाना है कि संबंधित व्यक्ति गैरविवादित रहा हो और उसका एक व्यापक वर्ग पर अच्छा प्रभाव हो। इसके तहत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ ही कला-साहित्य, गीत-संगीत, नृत्य-अभिनय, सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग, साधु-संत-आचार्यों को राम मंदिर दर्शन कराने के लिए ले जाने का लक्ष्य भाजपा ने रखा है। राम मंदिर हिंदू आस्था से जुड़ा मुद्दा है। भाजपा की सियासत अपनी स्थापना के समय से ही इस मुद्दे के इर्द-गिर्द रही है। अयोध्या और राम मंदिर के इर्द-गिर्द दो से 303 सीटों तक का सफर तय करने वाली भाजपा ने 2024 में 400 पार का लक्ष्य निर्धारित किया है। पार्टी का टारगेट 50 फीसदी वोट शेयर पर भी है। भाजपा की रणनीति राम मंदिर के सहारे चुनावी वैतरणी पार करने की है।

## विपक्ष को घेरने का प्लान

भाजपा की रणनीति विपक्ष को सनातन की पिच पर घेरने की होगी। उदयनिधि स्टालिन के सनातन विरोधी बयान को लेकर भाजपा विपक्षी पार्टियों को घेर ही रही थी कि अब कांग्रेस और अन्य दलों ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर आयोजित कार्यक्रम का बहिष्कार कर भाजपा को हमले का मौका दे दिया है। भाजपा की रणनीति अब विपक्षी पार्टियों की इमेज सनातन विरोधी सेट करने की होगी, खासकर हिंदी बेल्ट में पार्टी के नेता इसे लगातार ईको करेंगे। पिछले कुछ दिनों में भाजपा ने न्यौता अस्वीकार करने को लेकर विपक्ष पर जिस तरह से हमला बोला है, वह भी इसी रणनीति की

तरफ इशारा करता है।

आधी आबादी यानी महिलाओं को भाजपा का साइलेंट वोटर तक कहा जाता है। महिलाओं को टारगेट कर शुरू की गई उज्ज्वला और अन्य योजनाओं के साथ ही तीन तलाक विरोधी कानून और महिला आरक्षण विधेयक संसद से पारित होने को भी भाजपा बड़ी उपलब्धि के रूप में जनता के बीच लेकर जा रही है। अब माना यह जा रहा है कि एक फरवरी को पेश किए जाने वाले अंतरिम बजट में भी सरकार महिलाओं के लिए विशेष ऐलान कर सकती है। कयास यह भी हैं कि बजट में महिला किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत सम्मान राशि 6000 रुपए से बढ़ाकर 12000 रुपए करने का ऐलान सरकार की ओर से अंतरिम बजट में किया जा सकता है। महिला किसानों के लिए किसान सम्मान निधि की राशि दोगुनी करने से सरकार पर 120 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बोझ पड़ने के अनुमान हैं। इसके अलावा सरकार आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के लिए कैश ट्रांसफर स्कीम शुरू करने का भी ऐलान कर सकती है। कहा तो यह भी जा रहा है कि मप्र में लाड़ली बहना, छत्तीसगढ़ में भी महिलाओं के लिए कैश ट्रांसफर स्कीम के वादे की सफलता को देखते हुए सरकार 21 साल से अधिक उम्र की उन महिलाओं के लिए कैश ट्रांसफर स्कीम शुरू करने को लेकर विचार कर रही है, जिन्हें किसी कारणवश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल सका है। सरकार की योजना मनरेगा में भी महिला मजदूरों को प्राथमिकता देने की है। आंकड़ों के मुताबिक मनरेगा में महिला मजदूरों की भागीदारी 59.26 फीसदी है। यह 2020-21 में 53.19 फीसदी के मुकाबले करीब छह फीसदी अधिक है। महिला मतदाताओं को प्राथमिकता दिए जाने के पीछे इनका लगातार बढ़ता टर्नआउट भी एक प्रमुख फैक्टर है। चुनाव दर चुनाव महिला वोटर्स का टर्नआउट बढ़ रहा है। कई सीटों पर पुरुष मतदाताओं के मुकाबले महिला वोटर्स की तादाद अधिक है। साल 2014 में देश में वोटर टर्नआउट 55 करोड़ तक पहुंच गया जिसमें 26 करोड़ महिलाएं थीं। इसी तरह 2019 के चुनाव में कुल 62 करोड़ वोट पड़े थे जिसमें 30 करोड़ महिलाएं थीं। टर्नआउट बढ़ा, पुरुषों के वोट भी बढ़े लेकिन महिलाओं के टर्नआउट में पुरुषों के मुकाबले पांच फीसदी अधिक इजाफा हुआ था। अब अनुमान जताए जा रहे हैं कि 2024 में 70 फीसदी से अधिक वोटिंग हो सकती है। पिछले कुछ चुनावों में जिस तरह से वोटिंग के लिए महिलाओं का उत्साह नजर आया है, उसे देखते हुए कहा यह भी जा रहा है कि इस बार महिलाएं वोट डालने के मामले में पुरुषों को पीछे छोड़ सकती हैं। यह भी एक वजह है कि भाजपा का फोकस महिला वोट पर है।

## आम आदमी पार्टी का सुंदरकांड

आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल की 22 जनवरी को रामलला के प्राण प्रतिष्ठा जाने पर तस्वीर साफ नहीं है, लेकिन वो अलग तरह से दांव चल रहे हैं। आम आदमी पार्टी ऐसे समय हर मंगलवार को दिल्ली के सभी विधानसभा क्षेत्रों और नगर निगम वार्ड समेत 2600 स्थानों पर सुंदरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ कर रही है। गत दिनों अरविंद केजरीवाल रोहिणी मंदिर में आयोजित सुंदरकांड पाठ में शामिल हुए। इसके अलावा अरविंद केजरीवाल खुद को हनुमान भक्त बता चुके हैं और अयोध्या में रामलला के दर्शन करने भी गए थे। दिल्ली के सभी मंदिरों में सुंदरकांड के पाठ केजरीवाल की पार्टी पहले से कराती रही है, लेकिन बीच में बंद कर दिया था। अब राम मंदिर की सियासत तेज है तो दोबारा से सुंदरकांड पाठ आयोजित करा रही है। वहीं ममता बनर्जी भी रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शिरकत नहीं करेंगी, लेकिन उसी दिन मंदिर काली घाट मंदिर जाएंगी। ममता अलग-अलग धर्मों के धर्मगुरुओं के साथ एक सद्भाव रैली निकालेंगी। कालीघाट मंदिर जाकर पूजा-अर्चना करेंगी। ममता बनर्जी इस बात को बखूबी जानती हैं कि बंगाल में भगवान श्रीराम की तुलना में मां काली और मां दुर्गा को ज्यादा धार्मिक तवज्जो दी जाती है। इसी मद्देनजर ममता बनर्जी ने कालीघाट मंदिर में जाने का प्लान बनाया है। इस तरह से ममता बंगाल में भाजपा के राम के सामने मां काली को खड़ी करके सियासी दांव चल रही हैं। वहीं, भाजपा से नाता तोड़ने के बाद विपक्षी खेमे के साथ आए उद्धव ठाकरे 22 जनवरी को अयोध्या के बजाय महाराष्ट्र के नासिक में श्री कालाराम मंदिर जाकर पूजा-अर्चना करेंगे। कालाराम मंदिर में भगवान राम के दर्शन करेंगे। इस मौके पर शिवसेना (यूबीटी) की ओर से बड़ा आयोजन किए जाने की संभावना है। रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में उद्धव ठाकरे को अभी तक निमंत्रण नहीं मिला है, इसलिए अपनी हिंदुत्ववादी छवि को बरकरार रखने के लिए उद्धव ठाकरे ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दिन कालाराम मंदिर जाकर दर्शन करने का फैसला किया है। गत दिनों शिवसेना ठाकरे सांसद संजय राउत ने भी कालाराम मंदिर का दौरा किया था।

## गारंटी वाली पार्टी की इमेज

भाजपा के एजेंडे में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 का मुद्दा भी रहा है। लंबे समय तक जम्मू-कश्मीर को लेकर एक देश में दो विधान, दो निशान, दो प्रधान... नहीं चलेगा का नारा बुलंद करती रही भाजपा की सरकार में अनुच्छेद 370 हटाने का फैसला हुआ जिस पर अब सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से भी मुहर लग गई है। जम्मू-कश्मीर में एक विधान-एक निशान-एक प्रधान की मांग से लेकर राम मंदिर के निर्माण और नागरिकता संशोधन अधिनियम के संसद से पारित होने तक, भाजपा की रणनीति वादे पूरे करने वाली पार्टी की इमेज गढ़ने की भी है। भाजपा का फोकस केंद्र और राज्यों की सरकार की ओर से चलाई जा रही अलग-अलग योजनाओं के लाभार्थियों पर भी है। विकसित भारत संकल्प यात्रा के जरिए सरकार की रणनीति लाभार्थियों तक पहुंचने और उन्हें सरकार की योजना से हुए लाभ की याद दिलाने की भी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अयोध्या में उज्ज्वला योजना की 10 करोड़वी लाभार्थी मीरा मांझी के घर जाना भी लाभार्थियों को सीधे कनेक्ट करने की रणनीति का ही अंग माना जा रहा है। केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि हो या मप्र में लाड़ली बहना योजना, कई डायरेक्ट कैश ट्रांसफर योजनाएं भी चल रही हैं। भाजपा की नजर उस वोटर वर्ग पर है जिसे डायरेक्ट कैश बेनिफिट योजना का लाभ मिल रहा है।

भाजपा ने हाल के चुनाव में मप्र में एमपी के मन में मोदी और राजस्थान में मोदी साथे

राजस्थान जैसे नारे दिए थे। भाजपा ने राज्यों के चुनाव के लिए जो घोषणा-पत्र भी जारी किया था, उसका नाम संकल्प पत्र की जगह मोदी की गारंटी कर दिया गया था। दोनों ही राज्यों में भाजपा की बड़ी जीत को प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी पर जनता की मुहर के तौर पर भी देखा गया। पिछले कुछ चुनावों का वोटिंग पैटर्न भी यह बताता है कि लोग प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर वोट करते हैं। साल 2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी की प्रधानमंत्री पद के लिए उम्मीदवारी के बाद भाजपा की ओबीसी वोट बैंक में पैठ मजबूत हुई है। पार्टी की रणनीति ओबीसी के साथ ही एससी-एसटी वोटर्स को भी साथ लाकर वोटों का नया समीकरण गढ़ने की है। प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता और स्वीकार्यता का ग्राफ भी करीब 10 साल सरकार चलाने के बाद भी जस का तस बना हुआ है। ऐसे में भाजपा की रणनीति मोदी की गारंटी को ट्रंप कार्ड के तौर पर इस्तेमाल करने की होगी। कई राज्यों में 2019 के पिछले चुनाव के मुकाबले सियासी समीकरण बदले हैं। राजस्थान, मप्र और छत्तीसगढ़ में भाजपा तब विपक्ष में थी, अबकी सूबे की सत्ताधारी दल के रूप में चुनाव मैदान में जाएगी। कर्नाटक में भाजपा की सरकार थी और इस बार पार्टी विपक्ष में है लेकिन तब अकेले थी और इस बार एचडी देवगौड़ा की पार्टी जनता दल सेक्युलर के साथ गठबंधन है। महाराष्ट्र में भाजपा और शिवसेना का गठबंधन था। अबकी भाजपा और शिवसेना साथ हैं लेकिन उद्धव ठाकरे की राह अलग है। एनसीपी भी दो धड़ों में बंट चुकी है और अजित पवार के नेतृत्व वाला गुट भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना के साथ एनडीए में है। बिहार में नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू अबकी विपक्षी इंडिया गठबंधन में है और ऐसे में भाजपा का पूरा जोर 2014 की तरह अधिक सीटें जीतने पर है। उप्र में सपा-कांग्रेस गठबंधन और बसपा के साथ त्रिकोणीय मुकाबला है तो वहीं पश्चिम बंगाल में भी ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी और कांग्रेस के बीच खींचतान चल रही है। बदली परिस्थितियों में भाजपा की रणनीति मोदी की लोकप्रियता को वोट और सीट में कैश कराने की होगी।

## राम मंदिर को लेकर उलझा विपक्ष

अयोध्या में 22 जनवरी को होने जा रहे राम मंदिर उद्घाटन को लेकर अब तक सिर्फ ममता बनर्जी का ही सबसे कड़ा रुख देखने को मिला है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के अयोध्या समारोह के बहिष्कार के ऐलान के बाद कांग्रेस ने भी अपना रुख साफ कर दिया था। ममता बनर्जी के मुकाबले कांग्रेस का रुख थोड़ा नरम दिखाई पड़ा। कांग्रेस नेतृत्व ने सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे सहित किसी भी कांग्रेस नेता के अयोध्या न जाने की घोषणा करते हुए 22 जनवरी के न्यौते को ससम्मान अस्वीकार कर दिया था, लेकिन राहुल गांधी ने इसमें संशोधन कर दिया है। अब तो अखिलेश यादव भी स्वीकार कर चुके हैं कि उनको भी मंदिर समारोह का न्यौता मिल गया है, और ये भी कह रहे हैं कि वो अयोध्या जाएंगे भी लेकिन समारोह के बाद। मायावती, इंडिया ब्लॉक से बाहर हैं, और उनका कहना है कि वो अयोध्या जा भी सकती हैं, अगर कोई और कार्यक्रम नहीं बना तो। और अरविंद केजरीवाल तो पूरी दिल्ली में सुंदरकांड का पाठ ही कराने लगे हैं। चुनावों में तो अयोध्या घुमाने का वादा तो करते ही रहे हैं, अब अरविंद केजरीवाल कह रहे हैं कि दिल्लीवासियों के कल्याण के लिए हर महीने सुंदरकांड का पाठ हो सके, ये सुनिश्चित किया जाएगा। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रोहिणी के मंदिर में पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ सुंदरकांड पाठ में हिस्सा लेने की भी घोषणा की है। जैसे अरविंद केजरीवाल ने भाजपा के विरोध के लिए ये राजनीतिक तरीका अपनाया है, हर विपक्षी राजनीतिक पार्टी ऐसे ही कोई न कोई हथकंडा अपनाकर अयोध्या से जुड़े रहना चाहती है।

2022 के उप्र विधानसभा चुनाव से पहले बीएसपी के ब्राह्मण सम्मेलन की शुरुआत अयोध्या से ही की गई थी। सम्मेलन का नाम तो प्रबुद्ध वर्ग विचार संगोष्ठी दिया गया था, लेकिन शंखध्वनि के बीच जय भीम-जय भारत के साथ-साथ जय श्रीराम और जय परशुराम जैसे नारे भी सुनने को मिले थे। समापन के मौके पर हाथी नहीं गणेश है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं... जैसे पुराने नारे के अलावा बीएसपी कार्यकर्ताओं ने जय श्रीराम और जय परशुराम के नारे भी लगाए और हैरानी तो तब हुई जब मायावती के हाथ में भी त्रिशूल दिखा।

## राममंदिर उल्लास के बीच चुनाव की सरगर्मी तेज

आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर केंद्रीय चुनाव आयोग की सरगर्मियां और बढ़ गई हैं। उप्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार इस महीने के अंत में आयोग अपने तीन दिवसीय दौरे पर लखनऊ जाएगा। इस बार मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार के अलावा निर्वाचन आयुक्त अनूप चंद्र पाण्डेय, अरुण गोयल उप्र में अब तक हुई लोकसभा चुनाव तैयारियों की गहन समीक्षा करेंगे। पहले आयोग 17 से 19 जनवरी के बीच लखनऊ आने वाला था, मगर अयोध्या के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की वजह से आयोग का दौरा आगे के लिए बढ़ा दिया गया। अब आयोग 27 से 29 या फिर 29 से 31 जनवरी के बीच लखनऊ आएगा। इससे पहले पिछले साल 18 से 19 दिसंबर के बीच केंद्रीय चुनाव आयोग की टीम लखनऊ आई थी और उप्र सहित छह राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों व उनके अधीनस्थ अफसरों के साथ आयोग ने लोकसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की थी। मगर उस रीजनल कान्फ्रेंस में मुख्य निर्वाचन आयुक्त नहीं आए थे। आयोग की उस टीम में वरिष्ठ उपचुनाव आयुक्त धर्मेंद्र शर्मा, नितेश कुमार व्यास, उपचुनाव आयुक्त मनोज कुमार साहू, डॉ. नीता वर्मा महानिदेशक आईटी, पंकज श्रीवास्तव निदेशक व्यय और दीपाली मासिरकर निदेशक ईसीआई शामिल थे। इस टीम ने उप्र, मप्र, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड और उड़ीसा के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के साथ इन सभी छह राज्यों में लोकसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए थे।

# पानी की कमी से जूझ रहे बच्चे

बुंदेलखंड का नाम आते ही लोगों के सामने गरीबी, सूखा और पलायन की तस्वीर सामने आ जाती है। बुंदेलखड में लोगों को सबसे अधिक पानी के लिए परेशान होना पड़ता है। विडंबना यह है कि पानी के लिए बच्चों को दूर-दूर तक भटकते देखा जा सकता है। लेकिन यह स्थिति अकेल बुंदेलखड़ की ही नहीं है, बल्कि विश्वभर में करोड़ों बच्चे पानी की कमी से जूझ रहे हैं। यूनिसेफ की एक नई रिपोर्ट दि क्लाइमेट चेंज्ड चाइल्ड के अनुसार, तीन में से एक बच्चा या दुनियाभर में 73.9 करोड़ लोग पानी की भारी कमी वाले क्षेत्रों में रहते हैं, जलवायु परिवर्तन के कारण स्थिति के और भी भयावह होने का खतरा है। इसके अलावा, पानी की घटती उपलब्धता और अपर्याप्त पेयजल तथा स्वच्छता सेवाओं का दोहरा बोझ चुनौती को बढ़ा रहा है, जिसने बच्चों को और भी अधिक खतरे में डाल दिया है।

कॉप 28 जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन से पहले जारी द क्लाइमेट चेंज्ड चाइल्ड नामक रिपोर्ट, पानी की असुरक्षा के कारण बच्चों को होने वाले खतरों पर प्रकाश डालती है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को महसूस करने के तरीकों में से एक है। यह दुनियाभर में जल सुरक्षा के तीन स्तरों- पानी की कमी, पानी की कमी से होने वाले खतरे और पानी की कमी के कारण होने वाले तनाव के प्रभावों का विश्लेषण करती है। रिपोर्ट, यूनिसेफ चिल्ड्रन क्लाइमेट रिस्क (2021) को आगे बढ़ाते हुए, उन असंख्य अन्य तरीकों को भी रेखांकित करती है जिनसे बच्चों को जलवायु संकट के प्रभावों का खामियाजा भुगतना पड़ता है। जिसमें बीमारी, वायु प्रदूषण, सूखा और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाएं शामिल हैं। गर्भधारण के क्षण से लेकर वयस्क होने तक, बच्चों के मस्तिष्क, फेफड़े, प्रतिरक्षा प्रणाली और अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का स्वास्थ्य और विकास उस वातावरण से प्रभावित होता है जिसमें वे बड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों के वयस्कों के मुकाबले वायु प्रदूषण से पीड़ित होने के आसार बहुत अधिक होते हैं। आमतौर पर, वे वयस्कों की तुलना में तेजी से सांस लेते हैं और उनके मस्तिष्क, फेफड़े और अन्य अंग अभी भी विकसित हो रहे होते हैं।

रिपोर्ट के हवाले से यूनिसेफ के कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल ने कहा कि, जलवायु परिवर्तन के परिणाम बच्चों के लिए विनाशकारी हैं। उनके शरीर और दिमाग पर प्रदूषित हवा, खराब पोषण और अत्यधिक गर्मी का बहुत भारी असर होता है। न केवल उनकी दुनिया बदल रही है बल्कि जल स्रोत सूख रहे हैं और चरम मौसम की घटनाएं अधिक प्रबल और लगातार हो रही हैं। जिसके कारण बच्चों का स्वास्थ्य भी बदल रहा है क्योंकि जलवायु परिवर्तन उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

## पिछले साल भारत सहित 5 देशों में थे सूखे के हालात

2022 में सूखे का सामना करने वाले शीर्ष पांच देश भारत, नाइजर, सूडान, बुर्किना फासो और जॉर्डन थे। ऐसे 46 देश थे जहां एक चौथाई से अधिक बच्चे सूखे के भारी खतरों में थे, जिनमें 24 देश ऐसे थे जहां आधे से अधिक बच्चे सूखे के संपर्क में थे और 10 देश ऐसे थे जहां तीन-चौथाई से अधिक बच्चे सूखे के संपर्क में थे। इन परिस्थितियों में, बच्चों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाने के लिए सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता सेवाओं में निवेश की अहम जरूरत है। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि, जलवायु परिवर्तन के कारण पानी से संबंधित तनाव भी बढ़ रहा है, उपलब्ध नवीकरणीय आपूर्ति के लिए पानी की मांग का अनुपात लगातार बढ़ रहा है। साल 2050 तक, 3.5 करोड़ से अधिक बच्चों के भारी या बहुत भारी स्तर पर पानी की कमी के कारण होने वाले तनाव के संपर्क में आने का अनुमान है, मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया वर्तमान में सबसे बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं। इन खतरों के बावजूद, जलवायु परिवर्तन के बारे में चर्चाओं में बच्चों को या तो नजरअंदाज कर दिया गया है या बड़े पैमाने पर उनकी उपेक्षा की गई है। उदाहरण के लिए, प्रमुख बहुपक्षीय जलवायु निधियों से केवल 2.4 प्रतिशत जलवायु वित्त उन परियोजनाओं का समर्थन करता है जिनमें बच्चों के कल्याण से संबंधित गतिविधियां शामिल होती हैं।

बच्चे बदलाव की मांग कर रहे हैं, लेकिन उनकी जरूरतों को अक्सर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। रिपोर्ट के निष्कर्षों के मुताबिक, बच्चों का सबसे बड़ा हिस्सा मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया क्षेत्रों में उजागर होता है, जिसका अर्थ है कि वे सीमित जल संसाधनों और उच्च स्तर की मौसमी और अंतर-वार्षिक परिवर्तनशीलता, भूजल स्तर में गिरावट या सूखा पड़ने के खतरों वाले इलाकों में रहते हैं।

43.6 करोड़ बच्चे पानी की कमी या बहुत कम पेयजल की आपूर्ति के दोहरे बोझ का सामना कर रहे हैं। जिसे अत्यधिक पानी की कमी के कारण होने वाले खतरे के रूप में जाना जाता है। इससे उनका जीवन, स्वास्थ्य और कल्याण खतरे में पड़ गया है। यह रोकथाम योग्य बीमारियों से पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। रिपोर्ट से पता चलता है कि, सबसे अधिक प्रभावित लोग उप-सहारा अफ्रीका, मध्य और दक्षिणी एशिया और पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रहते हैं। 2022 में 43.6 करोड़ बच्चे अत्यधिक पानी के कमी से होने वाले खतरों का सामना करने वाले क्षेत्रों में रह रहे थे। सबसे अधिक प्रभावित देशों में नाइजर, जॉर्डन, बुर्किना फासो, यमन, चाड और नामीबिया शामिल हैं, जहां 10 में से आठ बच्चे इसकी चपेट में हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर में वर्तमान में 55.9 करोड़ बच्चे भयंकर गर्मी या लू के संपर्क में हैं, जो साल 2050 तक 2.02 अरब बच्चों तक बढ़ जाएगा। वहीं रिपोर्ट में कहा गया है कि, पिछले छह वर्षों में, मौसम संबंधी आपदाओं से जुड़े 4.3 करोड़ बच्चों को विस्थापन का सामना करना पड़ा, जो प्रतिदिन लगभग 20,000 बच्चों के विस्थापन होने के बराबर है। दुनियाभर में 2000 के बाद से, सूखा पड़ने की संख्या और अवधि में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत में एक व्यवस्थित समीक्षा में पाया गया कि सूखा बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है क्योंकि इसके कारण आहार से समझौता करना पड़ता है। महिलाओं और लड़कियों को शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सुरक्षा में सूखे का सबसे बड़ा बोझ झेलना पड़ता है।

● **सिद्धार्थ पांडे**

माना जा रहा था कि राम मंदिर का मुद्दा अब पुराना पड़ चुका है और अब भाजपा इसका कोई राजनीतिक लाभ नहीं ले सकेगी। इसके पीछे एक तर्क यह भी था कि हिंदुत्व और राम मंदिर मुद्दे के कारण जिन मतदाताओं को प्रभावित होना था, वे पहले ही प्रभावित हो चुके हैं और अब भाजपा को ही वोट कर रहे हैं। ऐसे में संभावना थी कि राम मंदिर के नाम पर भाजपा से नए मतदाता नहीं जुड़ेंगे और यह उसके लिए बहुत लाभदायक नहीं होगा। एक सर्वे में यह बात सामने आई है कि पहली बार वोट करने जा रहे नए मतदाताओं में राम मंदिर मुद्दे का आकर्षण बना हुआ है और पहली बार वोट करने वाले युवाओं की एक बड़ी संख्या भाजपा को वोट कर सकती है। 2019 के लोकसभा चुनाव में पहली बार वोट करने वाले युवाओं की संख्या लगभग आठ करोड़ थी, इस बार यह आंकड़ा आश्चर्यजनक रूप से 15 करोड़ के लगभग हो सकता है। हर लोकसभा क्षेत्र में फैले इस विशाल मतदाता समूह पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राम मंदिर, हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दे का व्यापक प्रभाव है और इनका एक बड़ा समूह भाजपा को वोट कर सकता है। यदि ऐसा होता है तो मोदी को केंद्र में हैट्रिक लगाने में कोई मुश्किल नहीं आने वाली है।

जातिगत जनगणना और ओबीसी आरक्षण विपक्ष का सबसे बड़ा चुनावी हथियार हो सकता है। भाजपा ने इस मुद्दे को बेअसर करने के लिए पहले ही योजना तैयार कर ली है। वह हर राज्य की सरकार, पार्टी संगठन में हर वर्ग के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित कर रही है। हाल ही में बनी राजस्थान, मप्र और छत्तीसगढ़ की सरकारों में ओबीसी, दलित, आदिवासी और ब्राह्मण सबको उचित भागीदारी देकर उन्हें साथ लेने की कोशिश की गई है। अयोध्या के श्रीराम इंटरनेशनल हवाई अड्डे का नाम बदलकर भगवान वाल्मीकि के नाम पर रख दिया गया। यह अचानक में लिया गया निर्णय नहीं है। इसके सहारे भाजपा दलित-महादलित और आदिवासी समूह को अपने साथ मजबूती के साथ जोड़ना चाहती है। जिस तरह से चुनावी राज्यों में इन समूहों के मतदाताओं का भाजपा को समर्थन मिला है, माना जा सकता है कि उसे इसका लाभ लोकसभा चुनाव में भी मिल सकता है। साल 2023 में मणिपुर के मुद्दे ने केंद्र सरकार को काफी परेशान किया। उसकी तमाम कोशिशों के बाद भी मणिपुर के हालात जल्द सामान्य नहीं हुए। केंद्र ने 370 के विवादित प्रावधानों को समाप्त कर दावा किया था कि इससे कश्मीर में आतंकवाद को समाप्त करने में बड़ी मदद मिली है। लेकिन साल का अंत आते-आते कश्मीर में आतंकवादियों ने एक बार फिर सिर उठाना शुरू कर दिया। इन्हें मजबूती से कुचलना ही सरकार को राहत दे सकता है।

2022 के अंत में भाजपा को हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था तो 2023 के मध्य में कर्नाटक में उसे मुंह की खानी पड़ी। लेकिन 2023 का अंत आते-आते भाजपा ने छत्तीसगढ़, मप्र और राजस्थान में विधानसभा चुनाव जीतकर 2024 को लेकर अपनी दावेदारी मजबूत कर दी। भाजपा ने पार्टी संगठन से लेकर सरकार तक में बड़े चेहरों को किनारे लगाकर युवाओं पर दांव लगाया है। इससे शिवराज सिंह चौहान, वसुंधरा राजे सिंधिया और बीएस येदियुरप्पा जैसे नेताओं की भूमिका कमजोर हुई है। यदि इन नेताओं ने पूरा साथ नहीं दिया तो लोकसभा चुनाव में भाजपा को कुछ नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। साथ ही महंगाई और बेरोजगारी के मोर्चे पर अभी भी सरकार की मुश्किलें कम नहीं हुई हैं। यदि विपक्ष ने इन मुद्दों को मजबूती से उठाया तो लोकसभा चुनाव में सरकार की राहें आसान नहीं होंगी।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजे ने कांग्रेस के उत्साह को बढ़ा दिया था, लेकिन राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मप्र के नतीजों ने मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के हौंसले पर करारी चोट की है। पार्टी इससे उबरने का रास्ता तलाश रही है। नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन, राहुल गांधी की 6200 किमी की भारत न्याय यात्रा की जिद, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा की उप्र के प्रभारी पद से मुक्ति को इसी का हिस्सा माना जा रहा है। इसके समानांतर सत्ताधारी दल उत्साह से लबरेज है। भाजपा की सत्ता के ब्रांड अंबेसडर होते जा रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हराना विपक्ष के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। विपक्ष के नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री थोड़ा तंज कसते हुए कहते हैं कि अब तो मोदी की गारंटी भी चलने लगी है। यह कहने में संकोच नहीं कि प्रधानमंत्री मोदी राजनीति की बारीकियों के मर्मज्ञ और जनता की नब्ज टटोलने में माहिर हैं। उन्होंने कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजे के बाद

***अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए आरएसएस-भाजपा-विहिप ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। हर राज्य के हर जिले से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक कार्यक्रम कर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंच बनाने की हर संभव कोशिश की जा रही है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि भाजपा राम मंदिर निर्माण को 2024 के लोकसभा चुनाव में अपना प्रमुख चुनावी एजेंडा बनाएगी। यानी 2024 की लड़ाई में विपक्ष का मुकाबला राम के मुद्दे से होगा। अब सवाल ये है कि क्या विपक्ष इसका मुकाबला कर पाएगा?***

## 2024 में 'राम' से होगा विपक्ष का मुकाबला

## 2024 में बड़ी लड़ाई... राज्यों में भाजपा को मिलेगी चुनौती

कांग्रेस पार्टी के नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री का कहना है कि इंडिया गठबंधन की हर राज्य में जरूरत नहीं है। जैसे मप्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब। लेकिन उप्र, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र जैसे तमाम राज्यों में इसे मजबूती देने की जरूरत है। वह कहते हैं कि हम जिन राज्यों को गिना रहे हैं, इनमें पिछले चुनाव में भाजपा और उसके सहयोगी दलों को अधिकतम सीटें मिलीं हैं, लेकिन इस बार सबकुछ बदलेगा। वह कहते हैं कि 2024 में भाजपा को जनता की नाराजगी का खामियाजा भुगतना पड़ेगा। राज्यों में भाजपा की लोकसभा सीटें काफी घटेंगी। हम सब मिलकर लड़ेंगे। दक्षिण भारत में वैसे भी भाजपा कर्नाटक को छोड़कर नहीं है। उसे आगामी लोकसभा चुनाव में तगड़ा झटका लगने वाला है। कांग्रेस के दिग्गजों का कहना है कि क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर हम भाजपा को हराएंगे।

# हड़बड़ी में 2024 लड़ेगा तो विपक्ष कीमत चुकाएगा

राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि जनता के हित का एजेंडा छोड़िए, विपक्ष अपना खुद का एजेंडा नहीं तय कर पा रहा है। विपक्ष का पहला एजेंडा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हटाओ होना चाहिए। क्योंकि अब वह सत्ता के ब्रांड अंबेसडर हैं। वह खुद की छवि को ही जनता में स्थापित करते चले जा रहे हैं। लेकिन इस एजेंडे को सेट करने में दो चीजें आड़े आ रही हैं। पहली यह कि कांग्रेस को मुख्य आधार देकर ज्यादा सीटें दे दें तो क्षेत्रीय दल सिमटने के खतरे से परेशान हैं। कांग्रेस उनके लिए अधिक सीटें छोड़ दे तो उप्र और बिहार जैसा हाल होने का डर है। राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि एक बात और है। इसे प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री शाह और भाजपा अध्यक्ष पूरी शिद्दत से समझते हैं। इसलिए वह विपक्ष को एक होने से रोकने का हर उपाय करने से नहीं चूकते। फिर यह कहावत तो पुरानी है कि फूट डालो और राज करो। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि 2024 की चुनौती बड़ी है। हालात इसी तरह के बन रहे हैं कि अंत में विपक्षी दल आधी-अधूरी तैयारी के साथ हडबड़ी में लोकसभा चुनाव लड़ेगे। उनका कहना है कि ऐसा हुआ तो विपक्ष के मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस समेत सभी इसकी भारी कीमत चुकाएंगे।

आए पांच राज्यों के चुनाव नतीजों को बड़ी संवेदनशीलता के साथ लिया है। उनके मार्ग दर्शन में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने न केवल तीन राज्यों में मुख्यमंत्री और वहां के मंत्रिमंडल की रूपरेखा से चौंकाया है, बल्कि इस सुनहरे अवसर को हर हाल में भुना लेने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। भाजपा के भीतर बढ़े उत्साह ने पार्टी के आधा दर्जन प्रवक्ताओं के चेहरे पर चमक लौटाई है। सुधांशु त्रिवेदी, संबित पात्रा, गोपाल कृष्ण अग्रवाल समेत किसी के भी चेहरे पर इसे साफ देख सकते हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद पुराने फार्म में लौट रहे हैं तो केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह समय की नब्ज भांपकर बयान देने लगे हैं।

भाजपा के नेता अब दावा करने लगे हैं कि 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए 350 सीटों के आंकड़े को पार करेगी। उप्र के एक उपमुख्यमंत्री कहते हैं कि राम मंदिर में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा हो जाने दीजिए। इसके बाद 2024 में भाजपा को 70 सीटों से नीचे मत गिनिए। लखनऊ के एक बड़े नेता ने कहा कि आखिर तीन राज्यों मे कांग्रेस का अहंकार धरा रह गया और इनमें मिली सफलता में मोदी की ही गारंटी चली न? भाजपा मुख्यालय में दो दिन पार्टी ने हाल में मंथन किया। इस मंथन से निकलकर आया कि 2024 की तैयारी और रणनीति बनाने के दौर से भाजपा काफी आगे निकल चुकी है। इस बारे में बात करें तो भाजपा की आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय खासे उत्साहित नजर आते हैं। दिल्ली के शास्त्री भवन में बैठने वाले एक केंद्रीय मंत्री का कहना है कि हमारी पार्टी में मीडिया को इंटरव्यू देने के लिए लोग अधिकृत हैं। मैं उसमें नहीं आता। वह कहते हैं कि 2014 से ज्यादा सीटें 2019 में आई थी। सूत्रों का कहना है कि दरअसल, भाजपा का शीर्ष नेतृत्व पार्टी और देश हित में जो निर्णय लेना चाहता है, ले लेता है। संगठन के मामले में भी कड़े निर्णय लेने में संकोच नहीं होता।

उनका कहना है कि 2024 में 2019 से कम से कम 40 सीटें अधिक आने वाली हैं। इसके पीछे आधार के नाम पर पहला कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सशक्त छवि को बताते हैं। दूसरा बड़ा कारण भाजपा का बहुसंख्यक हितों को ध्यान में रखकर सांस्कृतिक, धार्मिक प्रयास। कहते हैं कि राम मंदिर बन रहा है। भगवान राम की 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा होगी। यूएई के अबू धाबी में मंदिर के उद्घाटन में प्रधानमंत्री जाएंगे। जबकि विपक्ष राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने और न जाने को लेकर भ्रमित हैं। तीसरा बड़ा कारण आप देखिए। प्रधानमंत्री किसी को भूखा नहीं सोने दे रहे हैं। अब 2029 तक देश के 81.78 करोड़ गरीबों को पांच किलो अनाज मिलने का लक्ष्य रखा जा रहा है। एक्सप्रेस हाईवे पर लोगों की गाड़ियां दौड़ रही हैं। देश का चहुमुंखी विकास हो रहा है। देश के कोने-कोने में आम जनता खुद कह रही है कि देश की दुनिया में साख बढ़ी है।

सबसे पहले मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस और इंडिया (आईएनडीआईए) गठबंधन। इंडिया गठबंधन का शुरूआती प्रारूप बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से भेंट के बाद आगे बढ़ा। इस रूपरेखा में राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव की महत्वपूर्ण भूमिका थी, लेकिन मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस इसकी ड्राइविंग सीट जद(यू) और तृणमूल कांग्रेस जैसे क्षेत्रीय दल को देने के लिए तैयार नहीं थी। जब कांग्रेस इस गठबंधन के ड्राइविंग सीट पर आई तो इसके रोडमैप के आकार लेने में ही तमाम दिक्कतें आनी शुरू हो गई। न मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस बड़े त्याग और समर्पण के लिए तैयार है और न ही क्षेत्रीय दल। कांग्रेस के पूर्व महासचिव का कहना है कि यह स्थिति तब है, जब गैर भाजपाई अधिकांश विपक्षी दलों के सामने खुद को राजनीति में बनाए रखने की चुनौती बढ़ रही है और कांग्रेस की भी सिमटते जाने की चुनौती बढ़ रही है। कांग्रेस के महासचिव का कहना है कि राहुल गांधी की पहले चरण की भारत जोड़ो यात्रा के बाद पिछले कुछ महीने से पार्टी के कई बड़े नेता दूसरे दौर की भारत जोड़ो यात्रा के पक्ष में नहीं थे। लेकिन अब यह यात्रा जनवरी 2024 से शुरू होने वाली है। सूत्रों का कहना है कि जब विपक्षी दलों के नेता एक मंच पर आए और इसका नाम आईएनडीआईए रखा तो प्रधानमंत्री ने इसे घमंडिया गठबंधन कहकर ताना मारा था? आपको याद है न? आज देखिए घमंडिया का घटक दल होने में कौन सा दल पीछे है? क्या देश की जनता को सबने बेवकूफ समझ रखा है? उनका कहना है कि विपक्षी दलों को पहले इसको ठीक करना होगा। ऐसा लगता है कि अब यह सब ठीक करने के लिए समय ही नहीं बचा है। अब तो सीधे तैयारी का समय है।

2014 से भाजपा को सबसे अधिक सीटें उप्र से मिलती हैं। 2024 में भाजपा के नेता उप्र से 70 से अधिक सीटों की उम्मीद लगाए बैठे हैं। कभी कांग्रेस के लिए यह राज्य संजीवनी होता था। वर्तमान में उसके पास बस एक सीट है। अलीगढ़ के बिजेंद्र सिंह 90 के दशक से सक्रिय राजनीति में हैं। उनका कहना है कि अभी तो आईएनडीआईए गठबंधन का स्वरूप ही मूर्त रूप नहीं ले पाया। पता नहीं है कि इसमें बसपा शामिल होगी या नहीं। कांग्रेस से सोनिया गांधी रायबरेली सीट से लड़ेगी या नहीं? सपा में किस सीट से और कितनी सीट से उसका उम्मीदवार होगा? सपा, रालोद या कांग्रेस के कितनी सीट पर उम्मीदवार उतरेंगे?

● **विपिन कंधारी**

*विपक्षी गठबंधन ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को गठबंधन का अध्यक्ष नियुक्त किया है। वहीं बिहार के मुख्यमंत्री और जदयू के नेता नीतीश कुमार ने संयोजक पद ठुकरा दिया। वहीं गत दिनों हुई वर्चुअल बैठक में टीएमसी चीफ ममता बनर्जी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव शामिल नहीं हुए। यह इस बात का संकेत है कि इंडी एलायंस के भीतर प्रेशर ग्रुप पनप रहा है। ऐसे में लगता है कि गठबंधन अपने मुकाम तक नहीं पहुंच पाएगा।*

# इंडी एलायंस के भीतर पनप रहा प्रेशर ग्रुप

इंडी एलायंस के सभी घटक दलों में सीट शेयरिंग के फार्मूले को लेकर भारी मतभेद हैं। फारूक अब्दुल्ला ने सुझाव दिया था कि जो दल 2019 में किसी सीट पर जीता था, उन सीटों पर वही दल लड़े। इस फार्मूले को नामंजूर कर दिया गया था। उनके इस फार्मूले के आधार पर महबूबा मुफ्ती के हिस्से जम्मू क्षेत्र की एक सीट आ सकती थी, और कांग्रेस को भी सिर्फ जम्मू क्षेत्र की ही दूसरी सीट मिलती, क्योंकि कश्मीर घाटी की तीनों सीटें पिछली बार नेशनल कांफ्रेंस जीती थी और जम्मू की दोनों सीटें भाजपा जीती थी। फारूक अब्दुल्ला की तरह जो कोई भी फार्मूला सुझा रहा है, वह अपने फायदे को सामने रखकर ही फार्मूला सुझा रहा है। दिल्ली और पंजाब में कांग्रेस लोकसभा की पिछली परफॉर्मेंस के आधार पर सीटों का बंटवारा चाहती है। कांग्रेस का कहना है कि पंजाब में उसने 8 सीटें जीती थीं, और दिल्ली में 6 सीटों पर वह दूसरे नंबर पर रही थी।

पंजाब में जालंधर का उपचुनाव कांग्रेस आम आदमी पार्टी से हार गई थी, इसलिए वह सात सीटों के अलावा भाजपा की जीती हुई दो सीटों पर भी दावा ठोक रही है। कांग्रेस पंजाब में आम आदमी पार्टी का तीन सीटों और दिल्ली में एक सीट पर दावा मानती है। जबकि अरविंद केजरीवाल दोनों ही राज्यों में पिछले विधानसभा चुनावों की दोनों पार्टियों की परफॉर्मेंस के आधार पर टिकटों का बंटवारा चाहते हैं। दिल्ली में तीन-चार के फार्मूले पर और पंजाब में 6-7 के फार्मूले पर फैसला हो भी सकता है, लेकिन पंजाब प्रदेश कांग्रेस के नेता इसके लिए तैयार नहीं। केजरीवाल इन दोनों राज्यों के अलावा गुजरात, हरियाणा, चंडीगढ़, राजस्थान और गोवा में भी सीटें मांग रहे हैं। केजरीवाल की कांग्रेस से बात बिगड़ती दिख रही है, इसका सबूत यह है कि पहली जनवरी को पंजाब प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू ने शराब घोटाले पर केजरीवाल पर सवाल किए, तो पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कह दिया है कि पंजाब और दिल्ली में कोई भी मां अपने बच्चों को सबसे छोटी कहानी सुना सकती है कि एक थी कांग्रेस। पंजाब और दिल्ली जैसा ही पेंच महाराष्ट्र में फंसा है। महाराष्ट्र में भी कांग्रेस और उद्धव ठाकरे की शिवसेना में सीट बंटवारे को लेकर एक-दूसरे के खिलाफ सार्वजनिक बयानबाजी शुरू हो गई है। इसकी शुरुआत उद्धव ठाकरे की शिवसेना के प्रवक्ता संजय राउत ने की, जब उन्होंने लोकसभा की 48 सीटों में से 23 सीटों की मांग की। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा से गठबंधन में शिवसेना 23 सीटें लड़कर 18 सीटें जीती थी।

इसके जवाब में महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि महाराष्ट्र में उद्धव बालासाहेब शिवसेना का कोई आधार नहीं है, उसे जीरो से शुरू करना है। इसके जवाब में संजय राउत ने कहा कि शिवसेना पिछली बार महाराष्ट्र में 18 लोकसभा सीटें जीती थीं, जबकि

## सीट बंटवारे पर फंसेगा पेंच

कुल मिलाकर इंडी एलायंस से 8 राज्यों में कांग्रेस जहां 85 सीटें मांग रही है, वहां उसे 54-55 सीटें ही मिलेंगी। इसका मतलब होगा कि कांग्रेस सिर्फ 345 सीटों पर ही चुनाव लड़ेगी, जबकि 2019 में 421 सीटों पर और 2014 में 464 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। 1984 में लोकसभा की 413 सीटें जीतने वाली कांग्रेस की अब उतनी सीटों पर चुनाव लड़ने की हैसियत भी नहीं बची। सवाल यह है कि जिन चार राज्यों में गठबंधन ज्यादा महत्व रखता है। महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार और उप्र, इन चारों राज्यों में क्या इंडी एलायंस भाजपा को नुकसान पहुंचा पाएगा। इनमें से बिहार और उप्र को बिलकुल अलग कर दीजिए। बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने कम्युनिस्टों के बाद कांग्रेस से भी गठबंधन करने से इनकार कर दिया है। 3 जनवरी को खुद ममता बनर्जी ने कहा कि बंगाल में तृणमूल कांग्रेस अकेले लड़ेगी। हालांकि कांग्रेस को दो सीटों की पेशकश बरकरार है, लेकिन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने कहा है कि बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने गठबंधन की संभावना खत्म कर दी है।

कांग्रेस सिर्फ एक सीट जीती थी, शिवसेना के मुकाबले कांग्रेस कहीं नहीं ठहरती। कांग्रेस महाराष्ट्र में जीरो है, और उसे जीरो से शुरुआत करनी है। इसके जवाब में सामना हिंदी अखबार के संस्थापक संपादक और कांग्रेस-शिवसेना के पूर्व सांसद संजय निरुपम उतरे, जिन्होंने कहा कि शिवसेना पिछली बार मोदी के चेहरे पर 18 सीटें जीती थीं, और वे 18 के 18 सांसद अब एकनाथ शिंदे के माध्यम से मोदी के साथ ही हैं, उद्धव ठाकरे को शून्य से ही शुरुआत करनी है, इसलिए उनका 23 सीटों पर कोई दावा नहीं बनता। संजय राउत और संजय निरुपम दोनों ही शिवसेना के अखबार सामना के संपादक थे। जब बालासाहेब ठाकरे ने हिंदी सामना के संपादक संजय निरुपम को राज्यसभा में भेज दिया था तो उनके खिलाफ साजिश रचकर संजय राउत ने उन्हें पार्टी से निकलवाया था, और बाद में खुद राज्यसभा पहुंच गए थे। जबकि संजय निरुपम कांग्रेस में शामिल होकर एक बार लोकसभा के सांसद भी रह चुके हैं।

उप्र में अखिलेश यादव ने कह दिया है कि पहले यह तय हुआ था कि जिस प्रदेश में जो पार्टी हावी है, वही सीटों के बंटवारे को लीड करेगी। इसलिए उप्र की सीटों का बंटवारा समाजवादी पार्टी तय करेगी। कांग्रेस 2009 के चुनाव नतीजों के आधार पर 21 सीटों पर दावा ठोक रही है, लेकिन अखिलेश यादव 10-12 सीटों से ज्यादा देने को तैयार नहीं। असल में अखिलेश यादव मप्र में दूध के जले हैं, इसलिए छाछ को फूंक-फूंक कर पीना चाहते हैं। वह खुद अपने मुंह से कांग्रेस को चालू, धोखेबाज और मक्कार पार्टी कह चुके हैं। उन्हें लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि मप्र की तरह आखिर में आकर बात बिगड़ जाए, अगर ऐसा हुआ तो उन्हें खुद को नुकसान उठाना पड़ेगा। उन्हें यह भी आशंका है कि कांग्रेस अंदरखाने बहुजन समाज पार्टी से भी कुछ सीटों पर अंडरस्टेंडिंग कर रही है, जो उनके साथ विश्वासघात है, इसलिए 19 दिसंबर की बैठक में उन्होंने सवाल उठा दिया था कि कांग्रेस का कोई नेता बसपा से बात कर रहा है। इस बीच आश्चर्यपूर्ण ढंग से ममता बनर्जी की अखिलेश यादव से बातचीत हुई है।

ममता बनर्जी ने अपनी पार्टी के लिए उप्र की चंदौली सीट मांगी है, जिसके लिए अखिलेश यादव ने हामी भर दी है। चंदौली सीट वाराणसी के बगल की सीट है, जो कांग्रेस के दिग्गज नेता और उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी की कर्मभूमि रही है। कमलापति त्रिपाठी के पोते राजेशपति त्रिपाठी कांग्रेस छोड़कर तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए थे। ममता बनर्जी ने उन्हीं के लिए चंदौली की लोकसभा सीट मांगी है, जिसे देने के लिए अखिलेश यादव ने हामी भर दी है। कांग्रेस को छोड़कर बाकी सभी सहयोगी दलों की सीटों की शिनाख्त हो चुकी है, लेकिन बात कांग्रेस से ही अटकी हुई है। ममता बनर्जी ने सीट शेयरिंग के लिए 31 दिसंबर की समय सीमा तय की थी, 31 दिसंबर तक सीट शेयरिंग नहीं हुई तो ममता बनर्जी ने कह दिया है कि सारे देश में वह इंडी एलायंस का हिस्सा हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस का भाजपा के साथ सीधा मुकाबला है, इसलिए बंगाल में तृणमूल कांग्रेस अकेले लड़ेगी। उनके इस बयान के बाद पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने भी उनके खिलाफ बयानबाजी शुरू कर दी है।

असल में ममता बनर्जी और अखिलेश यादव में नई खिचड़ी पक रही है। ममता बनर्जी ने उसी भाषा का इस्तेमाल किया है, जिस भाषा का इस्तेमाल अखिलेश यादव को मप्र में सीट न देते हुए कांग्रेस ने किया था। कांग्रेस ने यह कहते हुए समाजवादी पार्टी को मप्र विधानसभा चुनाव में एक भी सीट देने से इनकार कर दिया था कि मप्र में कांग्रेस का भाजपा से सीधा मुकाबला है। अब ममता बनर्जी ने कहा है कि बंगाल में तृणमूल कांग्रेस का भाजपा से सीधा मुकाबला है। इंडी एलायंस बनने से पहले मार्च 2022 में ही ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल, अखिलेश यादव और चंद्रशेखर राव में गैर भाजपा-गैर कांग्रेस मोर्चा बनाने की सहमति हो गई थी। चंद्रशेखर राव को छोड़कर बाकी तीनों दल इस समय इंडी एलायंस का हिस्सा हैं। लेकिन कांग्रेस की क्षेत्रीय दलों के नेताओं को अहमियत न देने की शैली के खिलाफ ममता बनर्जी, केजरीवाल और अखिलेश यादव इंडी एलायंस के भीतर एक प्रेशर ग्रुप के तौर पर उभर रहे हैं। इनके साथ उद्धव ठाकरे भी जुड़ गए हैं। इन सभी दलों की कांग्रेस के साथ इन दलों के मुताबिक सीट शेयरिंग नहीं हुई तो गठबंधन टूट भी सकता है।

राजनीति में जीत-हार का कुछ जिम्मा चुनाव के दौरान लगने वाले नारों पर भी होता है। मोदी के लिए पहली बार नारा लगा कि अबकी बार मोदी सरकार। दूसरी बार नारा लगा, एक बार फिर मोदी सरकार। अब तीसरी बार के लिए भाजपा ने नारा लगाया है- अबकी बार 400 पार, तीसरी बार मोदी सरकार। खबर है कि भाजपा ने इसी नारे को लेकर आगे बढ़ने का निर्णय किया है। आने वाले अप्रैल-मई में हो रहे लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा में तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। मोदी सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की कोशिश में विकसित भारत संकल्प यात्रा देश के गांव-गांव में पहुंच रही है। इस बीच अबकी बार 400 पार, तीसरी बार मोदी सरकार... नारे को अपनाकर उसे जन आंदोलन के रूप में आमजन तक पहुंचाने की शुरुआत भी हो गई है। लोकसभा चुनाव की तैयारियों के तहत भाजपा ने प्रदेश स्तर के साथ-साथ हर लोकसभा और विधानसभा स्तर पर भी संयोजक और सह-संयोजक निश्चित कर लिए हैं।

● इन्द्र कुमार

## बिहार-महाराष्ट्र पर फोकस

भाजपा ने चुनौती वाले दो राज्यों बिहार और महाराष्ट्र पर फोकस कर दिया है। इन दोनों राज्यों में लोकसभा की 88 सीटें हैं, पिछली बार इन दोनों राज्यों में गठबंधन करके भाजपा ने 41 सीटें जीतीं थी। 34 सीटें सहयोगी जीते थे। इस बार इन दोनों ही राज्यों में भाजपा को बड़ी चुनौती है। 2019 के भाजपा के दो सहयोगी नेता बिहार के नीतीश कुमार और महाराष्ट्र के उद्धव ठाकरे अब इंडी ब्लाक में जा चुके हैं। माना यह जा रहा है कि नीतीश और उद्धव भाजपा को नुकसान पहुंचाएंगे। भाजपा के लिए संतोष की बात यह है कि नीतीश और उद्धव दोनों की अपनी पार्टियों पर पकड़ कम हुई है। बिहार में लालू यादव और कांग्रेस नीतीश कुमार को बता रहे हैं कि अब उनकी हैसियत 17 सीटों पर चुनाव लड़ने की नहीं रही। भाजपा ने जीतनराम मांझी और उपेंद्र कुशवाहा को तो नीतीश कुमार से तोड़ ही लिया है। जेडीयू के कई सांसदों के आने वाले कुछ दिनों में भाजपा में शामिल होने की उम्मीद की जा रही है। वहीं महाराष्ट्र में एनसीपी और कांग्रेस उद्धव ठाकरे को बता रही हैं कि उनकी हैसियत 23 सीटों पर चुनाव लड़ने की नहीं है।

# लोकसभा चुनाव में क्लीन स्वीप की तैयारी...

छत्तीसगढ़ में दोबारा सत्ता में लौटते ही भाजपा ने वादों को पूरा करने का सिलसिला शुरू कर दिया है। इसी के जरिए 2024 के लोकसभा चुनाव में बड़ी सफलता की पटकथा लिखने की शुरुआत भी कर दी है। राज्य के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 90 सीटों में से 54 पर जीत दर्ज की है और बहुमत के आंकड़े से काफी आगे रही है। सत्ता की कमान संभालते ही राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के अलावा दोनों उप-मुख्यमंत्री अरुण साव व विजय शर्मा चुनाव के दौरान किए गए वादों को पूरा करने में जुट गए हैं। पहले तो उन्होंने भाजपा के घोषणा पत्र की प्रति राज्य के मुख्य सचिव अमिताभ जैन को सौंपी और वादों को कैसे पूरा किया जाए, इसका खाका खींचने के निर्देश दिए। एक तरफ जहां घोषणा पत्र के अनुसार नई सरकार ने कदम आगे बढ़ाने की तैयारी कर ली है तो वहीं दूसरी ओर पहले ही कैबिनेट में आवासहीनों को 18 लाख से अधिक आवास मुहैया करने को मंजूरी दे दी। कुल मिलाकर नई सरकार ने अपने वादों को पूरा करना शुरू कर दिया है। कहा जा रहा है कि यह काम लोकसभा चुनाव के मद्देनजर तेजी से किए जा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव की तैयारी भाजपा ने शुरू कर दी है। इसके लिए बैठकें चलने लगी हैं। नेताओं से चर्चा की जा रही है। गत दिनों राजधानी रायपुर में भाजपा ने गोपनीय अंदाज में बैठक की गई। जिसमें लोकसभा की चार सीटों पर विशेष फोकस करने के निर्देश दिए गए हैं, जिसमें भाजपा का पलड़ा कमजोर रहा है। दरअसल, अगले कुछ महीनों में लोकसभा चुनाव होने हैं। पार्टियों ने इसके लिए तैयारियां शुरू कर दी है। भाजपा ने गत दिनों राजधानी रायपुर के जैनम भवन में एक गोपनीय बैठक की। गोपनीय इसलिए कि बैठक की जानकारी तो सबको थी। लेकिन बैठक के अंदर क्या बातें चल रही हैं और किन-किन बातों पर फैसला लिया गया है। इसकी खबर किसी को नहीं है।

भाजपा के जो भी पदाधिकारी दिग्गज नेता इस सीक्रेट बैठक में शामिल भी हुए हैं उन्होंने भी चुप्पी साध ली है। हालांकि विश्वसनीय सूत्रों ने बताया है कि इस बैठक में लोकसभा चुनाव और राम मंदिर को लेकर विशेष चर्चाएं हुई हैं। वहीं, कुछ सीटों पर भाजपा ने अपने आप को कमजोर माना है। जिसमें 3 लोकसभा सीटें शामिल है। पहली लोकसभा सीट की बात की जाए तो इस सीट में अंतर्गत आने वाली 8 विधानसभा सीटों को भाजपा गंवा चुकी है। जिनमें अकलतरा, जांजगीर-चांपा, पामगढ़, जैजैपुर, चंद्रपुर, सक्ती, बिलाईगढ़, कसडोल। इन सभी विधानसभा सीटों पर कांग्रेस ने अपना कब्जा किया है। अब इस सीट से सांसद को जीतने के लिए कड़ी मशक्कत करनी होगी।

दूसरी कांकेर लोकसभा सीट की बात की जाए तो इसके अंतर्गत आठ विधानसभा सीटें आती है। इनमें से पांच कांग्रेस के पास है और तीन पर भाजपा का कब्जा है। इसमें संजारी बालोद, सिहावा, गुंडरदेही, डोंडीलोहारा, अंतागढ़, भानुप्रतापपुर, कांकेर केशकाल। संजारी बालोद, सिहावा, गुंडरदेही, डोंडीलोहरा, भानुप्रतापपुर पर कांग्रेस। अंतागढ़, कांकेर और केशकाल में भाजपा भारी है। केवल एक सीट छोड़कर बाकी पांचो सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है। खैरागढ़, डोंगरगढ़, खुज्जी, मोहला मानपुर डोंगरगांव पर कांग्रेस काबिज है। केवल एक सीट राजनांदगांव में भाजपा भारी पड़ी है। जिसमें भी पूर्व सीएम रमन सिंह जीतकर आएं हैं। राजधानी रायपुर में हुई इस बैठक में भाजपा के तमाम पदाधिकारी दिग्गज नेता मौजूद रहे। लेकिन बैठक के अंदर क्या हुआ, यह अभी तक किसी ने भी साफ शब्दों में नहीं कहा है। लेकिन एक बात तो है कि भाजपा ने अपना लोकसभा मोड ऑन कर लिया है। अभी भाजपा के लिए लोकसभा से ज्यादा जरूरी और कुछ नहीं है।

भाजपा चार महीने तक चलने वाले कार्यक्रम बना रही है। आखिरी दो महीनों में ताबड़तोड़ रैलियां की जाएंगी। इसको लेकर पहले ही रूपरेखा तैयार की जा रही है। भाजपा 2019 के लोकसभा चुनाव में जिन सीटों यानी कोरबा और बस्तर में हार गई थी, उन सीटों पर माइक्रो मैनेजमेंट पर काम किया जाएगा। भाजपा वोट शेयर बढ़ाने की कोशिश में रहेगी। भाजपा का दावा है कि विधानसभा चुनाव में पार्टी को 30 सीटों पर 51 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिले थे। इसे लोकसभा चुनाव में बरकरार रखते हुए भाजपा युवा मोर्चा के बैनर तले नव मतदाता के 5 हजार जगहों पर कार्यक्रम करने जा रही है। इस दौरान महिला मोर्चा लखपति दीदी कार्यक्रम किया जाएगा। सोशल मीडिया वॉरियर्स बनाने का काम पार्टी करेगी, पार्टी में नए लोगों को जोड़ने का सिलसिला जारी रहेगा। पूरे देश में गांव चलो अभियान होगा। इस तरह के कई कार्यक्रम होंगे। हर कार्यक्रम के लिए अलग-अलग कमेटी बनाई जाएगी।

इन कार्यक्रमों के लिए भाजपा अलग-अलग समिति का गठन करेगी। इसके बाद 2024 के स्वागत के साथ भाजपा चुनावी मैदान में उतर जाएगी। बैठकों का दौर शुरू हो जाएगा। भाजपा की तैयारी को लेकर भाजपा के प्रदेश सह प्रभारी नितिन नवीन का कहना है कि लोकसभा चुनावों में हमें प्रदेश की सभी 11 सीटें जीतनी है और इसके लिए काम में लग जाना है, पूरी मेहनत करना है। हम विधानसभा में 30 सीटों में 51 प्रतिशत से ज्यादा मत हासिल करने में सफल हुए हैं। हमें इससे भी ज्यादा वोट हासिल करना है।

● **रायपुर से टीपी सिंह**

## जेसीसीजे का भाजपा में होगा विलय!

छत्तीसगढ़ के दिवंगत कांग्रेसी दिग्गज अजीत जोगी की पार्टी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ जोगी (जेसीसीजे) का जल्दी ही भाजपा में विलय होगा। अजीत जोगी के पुत्र और पार्टी अध्यक्ष अमित जोगी की गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात में विलय पर सैद्धांतिक सहमति बन चुकी है। अमित को लोकसभा चुनाव का टिकट दिया जा सकता है। लोकसभा चुनाव में भाजपा की योजना हिंदीपट्टी राज्यों में पुराना प्रदर्शन दोहराने की है। बीते चुनाव में पार्टी सहयोगियों के साथ हिंदी पट्टी के राज्यों की 90 फीसदी सीटें जीतने में सफल रही थी। गौरतलब है कि कांग्रेस से अदावत के बाद दिवंगत अजीत जोगी ने 2016 में अलग पार्टी बनाई थी। साल 2018 के चुनाव में जोगी की पार्टी विधानसभा की पांच सीटें जीतने में कामयाब रही। हालांकि, बीते विधानसभा चुनाव में पार्टी खाता नहीं खोल पाई। अमित जोगी ने पाटन सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को चुनौती दी, हालांकि वह खुद तीसरे स्थान पर रहे। भाजपा की रणनीति बीते चुनाव के मुकाबले अधिक सीटें हासिल करने की है। इस क्रम में पार्टी की कांग्रेस की विरासत पर भी नजर है। इसी रणनीति के तहत पार्टी ने केरल में कांग्रेसी दिग्गज एके एंटनी, पंजाब में पार्टी दिग्गज बलराम जाखड़ सहित कई दिग्गजों की नई पीढ़ी का भाजपा में प्रवेश कराया। इसी क्रम में अब पार्टी की निगाहें जेसीसीजे पर हैं।

# नई शिवसेना फिर बनाएगी नया महाराष्ट्र

महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने शिवसेना के भीतर एकनाथ शिंदे गुट के पक्ष में फैसला सुनाया। इसके साथ ही, उन्होंने विभिन्न कारणों से दोनों गुटों के विधायकों के खिलाफ अयोग्यता याचिकाओं को खारिज कर दिया, जिससे सभी शिवसेना विधायक पात्र हो गए। इस नतीजे को शिंदे गुट के लिए एक महत्वपूर्ण जीत के रूप में देखा जा रहा है। पिछले डेढ़ साल से शिंदे गुट के 16 और ठाकरे गुट के 14 विधायक अयोग्यता के दायरे में थे। साथ ही इस बात पर भी भ्रम पैदा हो गया कि आखिर असली शिवसेना कौन है। चुनाव आयोग ने पहले शिंदे गुट को चुनाव चिन्ह और पार्टी का नाम दिया था, जिससे अध्यक्ष राहुल नार्वेकर को प्रामाणिक शिवसेना का निर्धारण करने का अधिकार मिल गया था। निर्णय की घोषणा के समय यवतमाल के दौरे पर रहे मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि अब हम असली शिवसेना है और अब हम नया महाराष्ट्र बनाएंगे।

गतदिनों महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने पिछले काफी महीनों से चर्चा का विषय रहे इस मामले में अपना फैसला सुना दिया। सवा घंटे तक तमाम कानूनी पहलुओं और फैसलों का उल्लेख करने के बाद उन्होंने उद्धव गुट की उस मांग को खारिज कर दिया है। जिसमें मुख्यमंत्री शिंदे समेत 16 विधायकों को अयोग्य घोषित करने की मांग की गई थी। नार्वेकर के फैसले के बाद शिंदे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बरकरार रहेंगे तो वहीं उद्धव ठाकरे को बड़ी हार मिली है। महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने न सिर्फ उद्धव गुट की अपील खारिज की, बल्कि पार्टी प्रमुख के तौर उनके द्वारा लिए गए फैसलों पर भी सवाल खड़े किए। नार्वेकर ने कहा कि शिवसेना (एकीकृत) के संविधान के मुताबिक शिवसेना अध्यक्ष (उद्धव ठाकरे) को शिंदे को नेता पद से हटाने का हक नहीं था। नार्वेकर ने अपने फैसले में पार्टी का संविधान क्या कहता है?, नेतृत्व किसके पास था?, विधानमंडल में बहुमत किसके पास था? को मुख्य आधार बनाया। इन सवालों का जवाब खोजने के लिए उन्होंने चुनाव आयोग के रेकॉर्ड को सही माना। इसके बाद उन्होंने शिंदे के साथ अलग हुए शिवसेना के 16 विधायकों को अयोग्य घोषित करने से इनकार करते हुए उद्धव ठाकरे की अपील खारिज कर दी। शिवसेना के 16 विधायकों की अयोग्यता के मामले में फैसला लेने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने नार्वेकर को 10 जनवरी की डेडलाइन दी थी। राहुल नार्वेकर ने अपने फैसले में कहा कि मैंने अयोग्यता के मामले में निर्णय लेते वक्त चुनाव आयोग के फैसले को ध्यान में रखा।

स्पीकर राहुल नार्वेकर के एक फैसले ने शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे को मुश्किल में डाल दिया है। अक्टूबर तक होने वाले विधान परिषद के सत्रों में उन्हें शिंदे गुट के साथ सत्ता की ओर बैठना पड़ेगा। इसके साथ ही उनसे मुख्य विपक्षी दल का दर्जा भी खत्म हो जाएगा। विधानसभा में उनके बेटे आदित्य ठाकरे भी शिंदे गुट के साथ बैठने को मजबूर होंगे। एकनाथ शिंदे जुलाई 2022 में उद्धव ठाकरे को सत्ता से बेदखल कर चुके हैं। हालांकि शिवसेना यूबीटी गुट ने स्पीकर के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करने का ऐलान किया है, मगर कोर्ट का निर्णय आने तक उन्हें खून का घूंट पीना पड़ेगा। इसके अलावा ठाकरे को समर्थन देने वाले सभी 14 विधायकों को भी शिंदे गुट के व्हिप के अनुसार सरकार के पक्ष में मतदान करना होगा। उद्धव और आदित्य ठाकरे अगर व्हिप का उल्लंघन करेंगे तो उनकी सदस्यता भी खतरे में पड़ जाएगी। स्पीकर राहुल नार्वेकर ने पार्टी के दोनों धड़ों के किसी विधायक की सदस्यता रद्द नहीं की थी, मगर उन्होंने शिंदे गुट को असली शिवसेना होने का निर्णय दिया था।

विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने विधायकों की अयोग्यता की 6 अलग-अलग याचिकाओं पर 10 जनवरी को फैसला सुनाया था। सुप्रीम कोर्ट की डेडलाइन देने के बाद अपने फैसले में स्पीकर ने शिंदे गुट के 16 और ठाकरे गुट के 14 विधायकों की सदस्यता बहाल रखी थी। अपने फैसले में उन्होंने शिवसेना के 1999 के संविधान और चुनाव आयोग में पार्टी के बॉयलॉज को आधार बनाया था। पार्टी के संविधान के अनुसार, पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ही किसी नेता को पार्टी से निकालने का निर्णय ले सकती है। संविधान के आधार पर ही उन्होंने उद्धव ठाकरे के पार्टी प्रमुख पद को सर्वोच्च मानने से इनकार कर दिया। स्पीकर ने फैसले में बताया कि चूंकि एकनाथ शिंदे के पास 37 विधायक हैं, इसलिए शिंदे की शिवसेना ही असली है।

राहुल नार्वेकर के फैसले के कई पहलू हैं। चूंकि स्पीकर ने शिवसेना के किसी सदस्य को अयोग्य नहीं किया और शिंदे को विधानसभा में शिवसेना नेता मान लिया, इस आधार पर अब ठाकरे गुट के विधायकों के नेता भी एकनाथ शिंदे हो गए। विधानसभा अध्यक्ष ने शिंदे गुट के विधायक भरत गोगावले को चीफ व्हिप माना है, इस आधार पर पूरे शिवसेना विधायक दल को उनकी ओर से जारी व्हिप को भी मानना होगा। असली शिवसेना का फैसला होने के बाद ठाकरे गुट के विधायक भी सत्तापक्ष के माने जाएंगे, इसलिए विधानसभा में यूबीटी के सभी विधायक शिंदे गुट के साथ नजर आएंगे। यह आदेश विधान परिषद में भी लागू होगा। उद्धव ठाकरे मई 2020 में विधान परिषद के सदस्य चुने गए थे, अब विधान परिषद में विधायक दल यानी एकनाथ शिंदे की ओर से नामित नेता शिवसेना का नेतृत्व करेंगे। यह परिस्थिति उद्धव के लिए असहज है।

● **बिन्दु माथुर**

## विधान परिषद में भी सत्ता दल के माने जाएंगे ठाकरे समर्थक एमएलसी

उद्धव ठाकरे के लिए स्पीकर का फैसला गले की हड्डी बन गया है। विधान परिषद में उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिवसेना के विधेयकों को सपोर्ट करना होगा और पार्टी के व्हिप को मानना होगा। विधान परिषद के शिवसेना के 11 एमएलसी हैं, जिनमें उद्धव भी शामिल हैं। 9 एमएलसी ठाकरे समर्थक माने जाते हैं। एकनाथ शिंदे ने एमएलसी विप्लव बाजोरिया को विधान परिषद में अपना चीफ व्हिप नियुक्त किया है। अभी इस पर फैसला नहीं आया है। विधान परिषद में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी है। विधानसभा में अब एकनाथ शिंदे शिवसेना के 56 विधायकों के नेता माने जाएंगे। विधानसभा में भाजपा के 105, कांग्रेस के 44, एनसीपी के 53 सदस्य हैं। एनसीपी के अजित गुट के पास 37 विधायक हैं, जबकि छोटे पवार 40 से अधिक विधायकों के समर्थन का दावा करते हैं। महाराष्ट्र विधानसभा में 288 सीट है। बहुमत के लिए 145 सदस्यों का समर्थन जरूरी है। अब स्पीकर के फैसले के बाद सरकार के पक्ष में 201 विधायक गिने जाएंगे।

# कांग्रेस कन्फ्यूज, भाजपा ओवर कॉन्फिडेंट

लोकसभा चुनाव आ रहे हैं और राजस्थान में भाजपा व कांग्रेस दोनों भले ही अपनी-अपनी ओर से तैयारी दिखा रही हैं, मगर अंदरखाने बड़ी परेशानियां हैं। भाजपा की कोशिश यह है कि पिछली बार की तरह सभी 25 सीटें हर हाल में जीतने की जुगत लगानी है, तो कांग्रेस की मुश्किल यह है कि उसके पास लोकसभा चुनाव लड़ने वाले 25 लोकप्रिय उम्मीदवार तक नहीं हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में प्रकट तौर पर भाजपा की कमान संभालेंगे, लेकिन कांग्रेस के दिग्गज नेता अशोक गहलोत को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की चुनाव समन्वय समिति का सदस्य बनाकर देशभर में गठबंधन की जिम्मेदारी मिली है और सचिन पायलट को महासचिव बनाकर छत्तीसगढ़ भेज दिया गया है। कांग्रेस के दोनों दिग्गज नेता देश की जिम्मेदारी संभालेंगे, तो प्रदेश में कौन क्या करेगा, यह तय वे लोग करेंगे, जिनको राजस्थान की पूरी समझ तक नहीं है और न ही उनके प्रदेशभर में व्यापक पैमाने पर समर्थक हैं। कांग्रेस की सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि उसके पास नेताओं का अकाल है, जबकि भाजपा के पास कद्दावर नेताओं की पूरी फौज तैयार है। ऐसे में कांग्रेस लोकसभा चुनाव में भाजपा का मुकाबला कैसे कर सकेगी, यह सबसे बड़ा सवाल है।

कांग्रेस का चुनावी इतिहास देखें, तो हाल ही में प्रदेश में उसे करारी हार का सामना करना पड़ा है। हालांकि राहुल गांधी राजस्थान को लेकर जितने निराश थे, मुख्यमंत्री के रूप में अशोक गहलोत ने उससे कहीं अच्छा प्रदर्शन किया और पार्टी को 69 सीटों तक पहुंचा दिया, जबकि पायलट के समर्थक केवल 25 सीटों पर ही जीत का आंकड़ा बता रहे थे। अब पार्टी में भी लोग मान रहे हैं कि अगर सचिन पायलट राजस्थान में लगातार 5 साल तक अपने ही मुख्यमंत्री गहलोत से लड़ते नहीं रहते, तो विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को हार का मुंह नहीं देखना पड़ता। इसी कारण प्रदेश में सत्ता गंवाने के बावजूद कांग्रेस में गहलोत का कद बढ़ा है और पायलट को भी समायोजित कर दिया गया है। हालांकि छत्तीसगढ़ जैसे छोटे प्रदेश का प्रभार देकर उनका कद भी बता दिया गया है।

इस सबके बीच असली सवाल राजस्थान में लोकसभा चुनाव में जीतने का है, जो कांग्रेस के लिए बेहद मुश्किल है। हालांकि प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा अपने कार्यकर्ताओं के बीच कहते रहे हैं कि पूरे दम के साथ चुनाव लड़ेंगे और लोकसभा में विधानसभा के नतीजे पलट देंगे। लेकिन डोटासरा जब यह बोल रहे होते हैं, तो उनके चेहरे के भाव उनकी जुबान का साथ नहीं देते। जबकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा पद संभालते ही लोकसभा चुनाव में जीत की जुगत में जुट गए हैं और पार्टी की केंद्रीय कमान का भी उनको पूरा सहयोग मिल रहा है।

हाल ही में आए एक सर्वे के नतीजे भाजपा के लिए संतोषजनक हैं कि वह प्रदेश की 25 में से 23 लोकसभा सीटों पर जीतने जा रही है। फिलहाल 24 सीटों पर भाजपा का कब्जा है, व एक सीट पर उसके तत्कालीन सहयोगी हनुमान बेनीवाल जीते थे। मतलब 2019 में सभी 25 सीटों पर भाजपा जीती थी, और अब फिर से वही इतिहास रिपीट करके दिखाना है। मुख्यमंत्री शर्मा के कंधों पर भार बढ़ा है, और सर्वे में आए 23 सीटों पर जीत के आंकड़े को उन्हें हर हाल में 25 के आंकड़े पर लाना है। देश की हिंदी पट्टी में माहौल भाजपा का बना हुआ है, उसका भी लाभ भाजपा के समर्थन में है, लेकिन विधानसभा चुनाव में बहुमत हासिल करने के बावजूद भाजपा के लिए लोकसभा चुनाव में सभी सीटों पर जीत बहुत आसान नहीं है। एक सीट भी भाजपा की कम आई, तो यह मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के राजनीतिक भविष्य पर सवाल साबित होगा।

उधर, कांग्रेस में लोकसभा चुनाव को देखते हुए लगभग सभी बड़े नेताओं की नींद हराम है। पार्टी की सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि उसके पास लोकसभा चुनाव में लड़ने लायक 25 बड़े चेहरे भी नहीं हैं। विधानसभा चुनावों में राजस्थान में करारी हार के बाद कांग्रेस इस बार सभी बड़े नेताओं को लोकसभा चुनाव लड़ाने की तैयारी कर रही है। ऐसे में कांग्रेस के लिए पिछली बार की तरह राजस्थान की सभी 25 सीटों पर ताकतवर नेताओं की तलाश एक बड़ी चुनौती साबित हो रही है। हाल ही में आए एबीपी-सी वोटर के सर्वे के मुताबिक, लोकसभा चुनाव में एक बार फिर राजस्थान में भाजपा का जादू चलेगा। हाल ही में हुए 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को 41.69 फीसदी वोट मिले, वहीं कांग्रेस को 39.53 प्रतिशत वोट मिले। जबकि भाजपा को 2024 के लोकसभा चुनाव में राजस्थान में 57 फीसदी वोट मिलने का अनुमान जताया जा रहा है, और कांग्रेस को केवल 34 फीसदी। दोनों पार्टियों के बीच लोकसभा चुनाव में मिलने वाले संभावित वोट प्रतिशत में 23 फीसदी का बड़ा फासला आने वाला है। विधानसभा चुनाव में भाजपा के केवल 2 प्रतिशत वोट बढ़े और 42 सीटें बढ़ गईं, लेकिन कांग्रेस का 0.3 फीसदी वोट बढ़ा फिर भी 30 सीटें घट गईं।

● **जयपुर से आर.के. बिन्नानी**

## पिछले चुनाव में भाजपा को मिले थे 61 फीसदी वोट

पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन को राजस्थान में 61 फीसदी वोट मिले, जबकि कांग्रेस को 34 फीसदी वोट मिले थे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी को यह विश्वास है कि इस बार भी भाजपा फिर से राजस्थान में लोकसभा की सभी सीटें जीतने वाली पार्टी रहेगी। हाल के सर्वे में भाजपा को 23 और कांग्रेस के 2 सीट मिलने के अनुमान को सांसद जोशी सही नहीं मानते। उनका कहना है कि राजस्थान की सभी 25 लोकसभा सीटों पर भाजपा की जीत होगी। जोशी मानते हैं कि देश की जनता चाहती है, इस कारण दुनिया की कोई ताकत नरेंद्र मोदी को फिर से प्रधानमंत्री बनने से नहीं रोक सकती। राजस्थान में भाजपा के दिग्गज नेता और राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति लोगों में जबरदस्त विश्वास है, और उसी विश्वास के कारण भाजपा प्रदेश की सभी 25 सीटों पर जीत दर्ज करेगी। राजेंद्र गहलोत का दावा है कि प्रदेश में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अगुवाई में मोदी की गारंटी चुनाव में जीत की गारंटी साबित होगी। क्या होगा यह तो समय बताएगा लेकिन राज्य में शुरुआती सर्वे कांग्रेस के लिए बेहतर संकेत तो नहीं दे रहे हैं।

# निशाने पर मदरसे

उप्र में मदरसों को लेकर फिर नया विवाद सामने आ गया है। इसी वर्ष अवैध मदरसों को बंद करने की उप्र की योगी आदित्यनाथ सरकार की मुहिम के बाद अब प्रदेश के 80 मदरसों को लगभग 100 करोड़ रुपए की अज्ञात मदद का मामला सामने आया है। यह मदद फंडिंग के रूप में बीते दो वर्षों से प्रदेश के मदरसों को मिल रही थी। कुछ समाचारों में दावा किया गया है कि उप्र में 108 मदरसों को बीते दो वर्षों में 150 करोड़ रुपए से अधिक की अज्ञात मदद प्राप्त हुई है। मदरसों को मिलने वाली इस मदद के समाचार ने मदरसों को मिलने वाली मदद की जांच के रास्ते खोल दिए हैं। संबंधित कार्यालयों के अधिकारी इसकी जांच में लग गए हैं कि इतनी बड़ी संख्या में मदरसों को यह मदद कहां से हो रही है। मुस्लिम समाज में उप्र सरकार के प्रति आक्रोश व्याप्त है।

एक मस्जिद के मौलवी इफ्तिखार का कहना है कि मदरसे मुस्लिम बच्चों को इस्लाम की तालीम देने के लिए हैं। उनमें मुस्लिम बच्चों को मुफ्त में दीन की तालीम दी जाती है, जिसके लिए हर मुस्लिम अपनी हैसियत के मुताबिक दान देता है। इसमें सरकार को क्यों तकलीफ हो रही है? मैं मस्जिद में बच्चों को कुरान की तालीम देता हूं। मस्जिद में पांच वक्त की नमाज अता कराता हूं। अगर मेरे मजहब के लोग मुझे कुछ नहीं देंगे, तो मेरा घर कहां से चलेगा? दीन की किताबें और दूसरे खर्चे कहां से होंगे? सरकार को इसमें टांग नहीं अड़ानी चाहिए। एक अन्य मुस्लिम मोहम्मद फरीद का कहना है कि बात फंडिंग की नहीं है, असल में उप्र सरकार को मदरसों से तकलीफ है। पहले भी सरकार मदरसों पर ताले लगवाने की कोशिशें कर चुकी है। जब कोई तरीका नहीं मिला, तो सरकार फंडिंग का मामला उठाकर मदरसों पर हमला कर रही है।

मदरसों को मिलने वाली अज्ञात मदद की जांच में लगे विशेष जांच दलों को मदरसों को बड़े पैमाने पर विदेशी मदद के प्रमाण मिले हैं। विशेष जांच दलों ने पाया है कि उप्र में चल रहे मदरसों को खाड़ी देशों से गुपचुप रूप से पैसा आता रहा है। जब इस अज्ञात मदद के बारे में सरकार को पता चला, तो जांच दल सक्रिय हो गए। अभी इस मामले में जांच जारी है। जांच में पाया गया है कि बाहरी देशों से छोटे से बड़े अधिकतर मदरसों को अज्ञात मदद मिली है। इसमें कुछ मान्यता प्राप्त मदरसे भी हैं। विशेष जांच दलों ने अज्ञात मदद की सही जानकारी जुटाने के लिए मदरसों के खाते एवं अन्य दस्तावेज जब्त किए हैं, जिससे यह पता चल सके कि कहां से कितनी मदद कब आई। उस पैसे का कहां उपयोग किया गया? इसके लिए मदरसों के प्रबंधकों से भी पूछताछ की जा रही है। विशेष जांच दल इतनी बड़ी अज्ञात मदद के पीछे की योजना के बारे में पता लगाने के प्रयास में हैं। जांच दल पैसे का सही स्रोत ज्ञात करने का प्रयास कर रहे हैं।

जांच दलों की ओर से अभी तक मदरसों को मिलने वाली अज्ञात मदद को लेकर चल रही इस जांच के बारे में कुछ अधिक नहीं बोला गया है। अनुमानित रूप से माना जा रहा है कि उप्र में चलने वाले सभी मदरसों की अथवा अधिकतर मदरसों की जांच अलग-अलग समय में कई चरणों में हो सकती है। अभी विशेष जांच दलों को मदरसों को मिलने वाली अज्ञात मदद की जांच 30 दिसंबर तक पूरी करके इसकी पहली रिपोर्ट मदरसा बोर्ड के रजिस्ट्रार को दे दी गई है। दूसरे चरण में 3,834 मान्यता प्राप्त मदरसों की जांच होगी। विशेष जांच दल यह जांच अभियान 15 जनवरी से 30 मार्च तक चलाएंगे एवं अपनी रिपोर्ट मदरसा बोर्ड के रजिस्ट्रार को सौंपेंगे। संभव है कि इसके उपरांत अन्य मदरसों को मिलने वाली विदेशी मदद की भी जांच हो। विदित हो कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार ने पिछले वर्ष प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को अवैध रूप से चल रहे गैर-मान्यता प्राप्त मदरसों की जानकारी जुटाने के निर्देश दिए थे। दो महीने तक चले सर्वे में पता चला कि उप्र में 8,449 मदरसे ऐसे हैं, जिन्हें उप्र मदरसा शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त नहीं है। ऐसे मदरसों के विरूद्ध अभी तक उप्र मदरसा शिक्षा बोर्ड ने कोई कार्रवाई नहीं की है। अवैध मदरसों की जांच कराने के उपरांत अनुदान प्राप्त एवं वैध मदरसों की जांच को लेकर उप्र मदरसा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. इफ्तिखार अहमद जावेद ने आपत्ति जताई है एवं जांच रोकने का अनुरोध किया है। उन्होंने इसके लिए अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह को एक पत्र सौंपकर मदरसों की बोर्ड परीक्षा के बाद जांच कराने का अनुरोध किया है।

● **लखनऊ से मधु आलोक निगम**

## मदरसों की बढ़ रही संख्या

उप्र में लगभग 24,000 मदरसे चल रहे हैं। इतने मदरसों की गिनती तो सरकार की जानकारी में है, मगर अनुमानित रूप से इनकी संख्या अधिक भी हो सकती है। इन मदरसों में से 16,500 से अधिक मदरसे उप्र मदरसा शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त हैं। इन मदरसों को वक्फ बोर्ड से मदद प्राप्त होती है। उप्र सरकार प्रदेश में स्थापित 560 मदरसों को अनुदान देती है। इसके अतिरिक्त भारतीय मुस्लिमों से भी मदरसों को मदद प्राप्त होती है। प्रश्न यह है कि इसके उपरांत भी विदेशों से इन मदरसों को मिलने वाली अज्ञात मदद का प्रयोजन क्या है? उप्र में लगभग 8,500 मदरसे बिना मान्यता के चल रहे हैं। प्राप्त समाचारों की मानें तो नेपाल सीमा से सटे क्षेत्रों में 1,000 से अधिक मदरसे चल रहे हैं। सूत्र कहते हैं कि बीते कुछ वर्षों में इन क्षेत्रों में मदरसों की संख्या तीव्रता से बढ़ी है। इस बारे में भाजपा के एक स्थानीय नेता ने नाम प्रकाशित न करने की विनती करते हुए कहा कि देश में गुरुकुल समाप्त कर दिए गए, मगर मदरसे आज भी चल रहे हैं। मुस्लिम एवं अन्य अनेक लोग आरोप लगाते हैं कि भाजपा की सरकारें मुस्लिम विरोधी हैं, मगर आप देखेंगे कि अच्छे मुसलमानों को कहीं कोई समस्या नहीं है। न ही सरकार उन्हें कभी कुछ कहती है। मगर जब कोई अपराधी होता है अथवा अन्य प्रकार से कानून को ताक पर रखकर अवैध गतिविधियां चलाता है, तो उस पर कार्रवाई होनी ही चाहिए। इस पर इन लोगों को आपत्ति होती है, क्यों? जब बिना मान्यता के विद्यालय नहीं चलते, तो मदरसे बिना मान्यता के क्यों चल रहे हैं? इसके अतिरिक्त अगर मदरसों को कहीं से मदद मिल भी रही है, तो उसे छुपाया क्यों जा रहा है? उसका ब्यौरा सरकार के सामने पेश किया जाना चाहिए।

# मजबूरी बन चुके हैं नीतीश

ललन सिंह का जेडीयू के अध्यक्ष पद से हटना राष्ट्रीय चर्चा का मुद्दा बन गया, जबकि अपने आप में यह कोई बड़ी घटना नहीं थी। बिहार से बाहर तो कोई जानता ही नहीं था कि जेडीयू का अध्यक्ष कौन है, जेडीयू की पहचान सिर्फ नीतीश कुमार से है। अध्यक्ष कोई भी हो, पार्टी की कमान नीतीश कुमार के हाथ में ही होती है। जैसे अध्यक्ष कोई भी हो, कांग्रेस की कमान सोनिया-राहुल के हाथ में है, और अध्यक्ष कोई भी हो, भाजपा की कमान मोदी-शाह के हाथ में है।

नीतीश कुमार चाहते, तो वह ललन सिंह को हटाने के लिए पटना में ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुलवा सकते थे। लेकिन उन्होंने कांग्रेस और इंडी एलायंस के बाकी घटक दलों को संदेश देने के लिए कार्यकारिणी की बैठक दिल्ली में बुलाई। उन्हें कई दिन से एहसास हो रहा था कि कांग्रेस तो उनसे धोखा कर ही रही थी, लालू यादव भी धोखा देने की तैयारी कर रहे थे। हालांकि नीतीश कुमार की भारतीय जनता पार्टी के साथ किसी स्तर पर कोई बातचीत शुरू नहीं हुई थी। फिर भी उन्होंने जेडीयू की दिल्ली में बैठक बुलाकर यह संदेश दे दिया कि अगर कांग्रेस और इंडी एलायंस ने उन्हें वैसा सम्मान नहीं दिया, जिसके वह हकदार हैं, तो वह भाजपा के साथ जा सकते हैं।

भारतीय जनता पार्टी के कई नेता भी नीतीश कुमार की रणनीति से दहशत में आ गए थे, इसलिए उन्होंने अमित शाह का सितंबर में दिया गया भाषण याद करवाना शुरू कर दिया कि नीतीश कुमार के लिए भाजपा के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो चुके हैं। लेकिन उस भाषण की काट में यह दलील भी दी जाने लगी थी कि राजनीति में कुछ भी संभव है, किसी भी संभावना को नकारा नहीं जा सकता। नीतीश कुमार ने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि उन्हें लगने लगा है कि भाजपा का साथ छोड़ना गलत फैसला था। और वह इसके लिए मुख्य तौर पर अपनी पार्टी के दो लोगों को जिम्मेदार मानते हैं। एक हैं पार्टी के पूर्व अध्यक्ष आरसीपी सिंह और दूसरे हैं ललन सिंह। दोनों नीतीश कुमार के आंख कान थे, एक पर भाजपा की गोदी में बैठने का आरोप लगा, तो दूसरे पर लालू यादव की गोदी में जा बैठने का आरोप लगा है।

आरसीपी सिंह अब जेडीयू छोड़कर भाजपा में शामिल हो चुके हैं, लेकिन ललन सिंह पार्टी के अध्यक्ष बने हुए थे। अब ललन सिंह का भी दिल्ली में हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफा हो गया है। वह अभी भी जेडीयू में बने हुए हैं, और इन आरोपों को पूरी तरह नकार रहे हैं कि उन्होंने लालू यादव के साथ मिलकर नीतीश कुमार का तख्ता पलटने की योजना बनाई थी। खबर यह थी कि लालू यादव जेडीयू के 11-12 विधायक तोड़कर नीतीश कुमार का तख्ता पलटकर तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाने की साजिश रच रहे हैं, जिसमें ललन सिंह की अहम भूमिका है। क्या लालू यादव और ललन सिंह सचमुच ऐसा कर रहे थे? इसके पीछे की कहानी यह है कि नीतीश कुमार इंडी एलायंस में अपनी अनदेखी से तो निराश थे ही, लालू यादव जेडीयू के लिए 17 लोकसभा सीटें छोड़ने को भी तैयार नहीं थे। वह दोबारा भाजपा के साथ गठबंधन की संभावना टटोल रहे थे।

20 दिसंबर को राहुल गांधी ने नीतीश कुमार से फोन पर बात की थी और उनसे आग्रह किया था कि वह लालू यादव के साथ मिलकर आपस में समस्याओं का हल निकालें। दोनों की मुलाकात हुई भी, लेकिन कोई हल नहीं निकला था। इसी बीच यह खबर बड़े जोर से उछली कि लालू यादव उनका तख्ता पलटने की योजना पर काम कर रहे हैं। इन खबरों के बाद ही नीतीश कुमार ने दिल्ली में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुलाने का फैसला किया। जिसमें ललन सिंह को हटाया जाना इसलिए बड़ी खबर बना क्योंकि वह ललन सिंह और आरसीपी सिंह ही थे, जिनके कारण नीतीश कुमार ने भाजपा का साथ छोड़कर लालू यादव और बाद में इंडी एलायंस का दामन थामा था। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में नीतीश कुमार ने इतनी भड़ास किसी अन्य पर नहीं निकाली, जितनी आरसीपी सिंह पर निकाली। ललन सिंह को हटाया जाना वैसे तो सिर्फ जेडीयू का अंदरूनी मामला है, लेकिन क्योंकि ललन सिंह जेडीयू-राजद गठबंधन के सूत्रधार थे, इसलिए इस फैसले के कई राजनीतिक संकेत थे।

बिहार प्रदेश कांग्रेस के नेताओं ने वक्त रहते पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व को अवगत करवाकर बात को संभालने की पहल करने को कहा था। वह पहल हुई भी। सिर्फ राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने ही नहीं बल्कि केसी वेणुगोपाल और शरद पवार ने भी नीतीश कुमार से बात करके स्थितियों को संभालने की कोशिश की। लालू यादव तख्ता पलट की योजना से पीछे हटे हैं और नीतीश कुमार को इंडी एलायंस का संयोजक बनाने का फिर से वादा किया गया है। इसीलिए 27 दिसंबर की रात को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में पास किए जाने वाले राजनीतिक प्रस्ताव की भाषा में बदलाव करके भारतीय जनता पार्टी और मोदी सरकार पर हमलावर रूख अपनाया गया। अगर उन तीन-चार दिनों में नीतीश कुमार के लिए भाजपा के दरवाजे बंद करने का अलाप नहीं अलापा जाता तो राजनीतिक प्रस्ताव में उतनी कड़वी भाषा का इस्तेमाल नहीं होता, जितनी कड़वी भाषा का इस्तेमाल किया गया। नीतीश कुमार के इस कदम से उनकी सरकार भी बच गई और इंडी एलायंस भी बच गया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में नीतीश कुमार पूर्व अध्यक्ष आरसीपी सिंह के खिलाफ जमकर बोले, जबकि वह जुलाई 2022 में ही पार्टी छोड़ चुके हैं। इसका कारण यह है कि नीतीश कुमार यह मानते हैं कि अगर आरसीपी सिंह ने उन्हें धोखा देकर सीधे मोदी से संबंध नहीं बनाए होते, तो उनके एनडीए छोड़ने की नौबत ही नहीं आती।

● **विनोद बक्सरी**

## इंडी एलायंस की नींव जुलाई 2021 में ही पड़ी

असल में इंडी एलायंस की नींव जुलाई 2021 में पड़ गई थी, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आरसीपी सिंह को अपनी सरकार में मंत्री पद की शपथ दिलाई थी। नीतीश कुमार ने 2021 में मोदी सरकार में शामिल करने के लिए आरसीपी सिंह और ललन सिंह के नाम भेजे थे, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जेडीयू से एक ही मंत्री बनाना तय किया और बिना नीतीश कुमार से पूछे आरसीपी सिंह को शपथ दिला दी। यह बहुत ही आश्चर्यजनक था कि नीतीश कुमार से उनकी पहली चॉइस पूछने के बजाय अमित शाह ने उन्हें सूचना दी कि हम आरसीपी सिंह को मंत्री बना रहे हैं। उस समय ललन और आरसीपी दोनों ही नीतीश कुमार के करीबी थे, इसलिए उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। आरसीपी सिंह उस समय पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। मंत्री बनने के तीसरे दिन नीतीश कुमार ने उनसे इस्तीफा लेकर ललन सिंह को पार्टी अध्यक्ष बना दिया, लेकिन ललन सिंह के मन में यह बात बैठ गई थी कि आरसीपी सिंह ने नीतीश कुमार को दरकिनार कर सीधे भाजपा से संबंध बना लिए हैं। बस यहीं से जेडीयू के एनडीए से निकलने की भूमिका तय हो गई थी।

# बांग्लादेश में विपक्ष विहीन चुनाव

7 जनवरी को बांग्लादेश में अभी मतदान खत्म भी नहीं हुआ था कि दुनियाभर की समाचार एजेंसियों ने चुनाव परिणाम बताने शुरू कर दिए थे। बांग्लादेश में एक बार फिर अवामी लीग की सरकार बनना तय हो गया। शेख हसीना पांचवीं बार प्रधानमंत्री बनेंगी। दुनियाभर की समाचार एजेंसियों की यह भविष्यवाणी अनायास तो नहीं थी। अगले दिन 8 जनवरी को जब चुनाव परिणाम आने लगे तो वही हुआ जो दुनियाभर के पॉलिटिकल पंडित भविष्यवाणी कर रहे थे। मुजीबुर्रहमान की बेटी शेख हसीना की पार्टी को एक बार फिर दो तिहाई से अधिक बहुमत मिल गया। बांग्लादेश की जातीय संसद में 300 सीटें हैं जिसमें से 299 पर मतदान हुआ था। इस 299 सीटों में से 222 सीट अवामी लीग को मिली है। 62 निर्दलीय जीते हैं जबकि जातीय पार्टी को 11 सीटें मिली हैं। जब सबकुछ ठीक है। चुनाव हुए। कई दलों ने चुनाव भी लड़ा। लगभग शांतिपूर्वक 40 प्रतिशत मतदान भी हुआ तो फिर दुनियाभर की समाचार एजेंसियां चुनाव परिणाम आने से पहले ही परिणामों की इतनी सटीक भविष्यवाणी कैसे कर रही थीं? केवल जीत की भविष्यणावी भर नहीं बल्कि दुनिया के अधिकांश मीडिया हाउस इसे विपक्ष विहीन एकतरफा चुनाव बताकर इसकी आलोचना क्यों कर रहे हैं?

असल में लगातार तीसरी बार बांग्लादेश की मुख्य विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीऐनपी) ने आम चुनाव के बॉयकॉट का ऐलान किया था। बीएनपी 2014 से जातीय संसद के चुनाव में हिस्सा नहीं ले रही है। बीएनपी बांग्लादेश की बड़ी राजनीतिक हैसियत वाली पार्टी है और चार बार सरकार बना चुकी है। इस पार्टी की स्थापना पाकिस्तान समर्थक जनरल जियाउर्रहमान ने 1978 में की थी। उनकी विधवा बेगम खालिदा जिया इस समय इस पार्टी की प्रमुख हैं जो दो बार बांग्लादेश की प्रधानमंत्री रह चुकी हैं। जियाउर्रहमान खुद भी बांग्लादेश के राष्ट्रपति रह चुके थे और 1981 में बांग्लादेश आर्मी के ही लोगों ने पाकिस्तानी समर्थक होने के कारण उनकी हत्या कर दी थी। लेकिन जियाउर्रहमान की हत्या के बाद भी बीएनपी की पाकिस्तानी परस्ती में कमी नहीं आई।

अवामी लीग की शेख हसीना कट्टरपंथी इस्लाम के खिलाफ हैं और वो एक साझा संस्कृति वाले बांग्लादेश की पक्षधर हैं। इसके उलट बीएनपी मजहबी राजनीति करती है और उसके आसपास ही बांग्लादेश के सारे कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन पलते बढ़ते हैं जिनको मुख्य रूप से पाकिस्तान से समर्थन मिलता है। इसलिए 2013 में बांग्लादेश सुप्रीम कोर्ट द्वारा जब कट्टरपंथी और पाकिस्तान परस्त जमात-ए-इस्लामी को बैन कर दिया तब शेख हसीना ने जमात-ए-इस्लामी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की। इस्लामिक संगठनों द्वारा जब इस कार्रवाई का विरोध किया गया, तब शेख हसीना ने ऐसे विरोध को भी कठोरता से कुचल दिया था।

2016 में जमात-ए-इस्लामी के चीफ मोतिउर्रहमान को फांसी देकर शेख हसीना ने साहसिक कदम उठाया, क्योंकि मोतिउर्रहमान पर बांग्लादेश में अवैध तरीके से हथियार लाकर बांग्लादेश को अस्थिर करने का आरोप लगा था। मोतिउर्रहमान अवामी लीग की सेकुलर नीति का विरोधी था और बांग्लादेश की खुफिया एजेंसियों को अंदेशा था कि पाकिस्तान की मदद से वह बांग्लादेश में शेख हसीना को खत्म करने का प्लान बना रहा था। उसके हथियारों की तैयारी भी इसी दिशा में थी।

अब क्योंकि शेख हसीना कट्टरपंथी इस्लाम के खिलाफ हैं और सबसे बड़ी बात कि भारत से बेहतर रिश्ता रखने की पक्षधर हैं, इसलिए बांग्लादेश में पाकिस्तान समर्थक दल या संगठन आम चुनावों का बहिष्कार करने लगे हैं। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी का बहिष्कार इसी कारण से है। वरना कोई कारण नहीं था कि वह इस तरह से लगातार तीसरी बार चुनावों का बहिष्कार करती। इसी बहिष्कार को लेकर दुनियाभर की समाचार एजेंसियां और इस्लामिक समर्थक बांग्लादेश के चुनावों को एकतरफा चुनाव बताते आ रहे हैं। यह बात सही है कि बीएनपी के बहिष्कार के कारण मतदान में भी कमी आती है और बांग्लादेश में चुनाव को लेकर वैसा उत्साह नहीं रहता जैसा होना चाहिए। बांग्लादेश के लोकतंत्र समर्थक ऐसी परिस्थिति से दुखी हैं। बांग्लादेश की चुनाव विश्लेषक शरमीन मुर्शिद का कहना है कि यह बिना व्याकरण वाला चुनाव था। मैंने ऐसा कोई चुनाव नहीं देखा। यह किसी भी चीज में फिट नहीं बैठता। परिणाम वही हैं जो होने चाहिए थे। शरमीन का कहना है कि यह एक ऐसा चुनाव था जिसमें एक ही दल (अवामी लीग) पक्ष और विपक्ष दोनों ओर था। उसके साथ 27 छोटे दल थे और सब अवामी लीग के चुनाव निशान पर चुनाव लड़ रहे थे। कई जगह तो विपक्ष का उम्मीदवार भी अवामी लीग द्वारा ही खड़ा किया गया था ताकि मतदान हो सके।

● **ऋतेन्द्र माथुर**

## आम चुनाव एक लोक उत्सव की तरह

बांग्लादेश के अर्थशास्त्री अनु मोहम्मद का कहना है कि बांग्लादेश में आम चुनाव एक लोक उत्सव की तरह होते हैं। चुनाव ही ऐसा समय होता है जब जनता अपने वोट की मालिक नजर आती है। लेकिन 2014 से 2023 तक वह उत्साह कहीं दिखाई नहीं देता। जो कुछ हुआ है वह महज एक औपचारिकता थी, जिसे पूरा कर लिया गया है। अनु मोहम्मद का कहना है कि जो लोग इन चुनावों (2014 से 2023) के दौरान मतदाता बने उन्हें उस उत्सवी माहौल का अनुभव नहीं हुआ जो होना चाहिए था। पूरे चुनाव के दौरान देशभर में कर्फ्यू जैसे हालात बने रहे। अवामी लीग के समर्थक जरूर सक्रिय दिखते हैं लेकिन उनके समूह भी छोटे हैं। व्यापक स्तर पर यह समझ लोगों में बनी हुई है कि अवामी लीग सत्ता में बनी रहेगी। ऐसे चुनाव आयोजित करके उन्होंने (शेख हसीना ने) एक प्रणाली के रूप में चुनाव, एक संगठन के रूप में चुनाव आयोग और विचार के तौर पर लोकतंत्र के विचार को प्रभावी तौर पर कमजोर कर दिया है। इन राजनीतिक विश्लेषकों की चिंता जायज है। लोकतंत्र एक बहुदलीय या बहुध्रुवीय व्यवस्था है जिसे एक दलीय नहीं बनाया जा सकता। बांग्लादेश में ऐसा है भी नहीं। दर्जनभर छोटे दल तो मैदान में उतरते ही हैं इसके अलावा बड़ी संख्या में निर्दलीय भी चुनाव लड़ते हैं।

# कहीं वापसी, कहीं विदाई

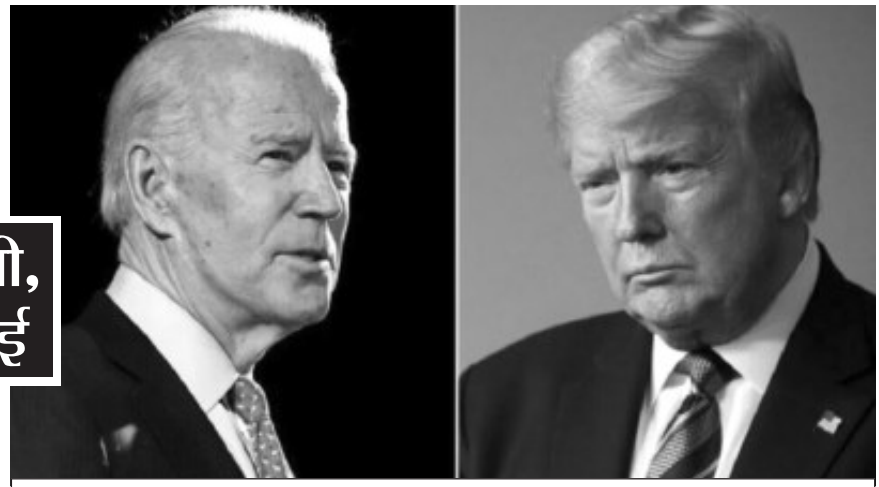

## चुनावों से कितनी बदलेगी जियोपॉलिटिक्स?

हर चुनाव में हार-जीत के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समीकरण बदलते हैं। सबसे ज्यादा असर पड़ता है, वहां की जियोपॉलिटिक्स पर। इस साल भारत के लोकसभा चुनावों पर सभी की नजरें होंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैट्रिक के इरादे से चुनावी मैदान में उतरेंगे। सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ मैदान में इंडिया गठबंधन होगा। इन चुनावों में देश की 95 करोड़ जनता वोट डालेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीते दस सालों में भारत की फॉरेन पॉलिसी काफी बदली है। जी-20 की अध्यक्षता से लेकर ग्लोबल साउथ की मुखर आवाज बनने तक वैश्विक प्लेटफॉर्म पर भारत को तवज्जो मिली है। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, यूक्रेन, ऑस्ट्रेलिया से लेकर संयुक्त अरब अमीरात तक भारत की धाक बनी है। ऐसे में रिकॉर्ड तीसरी बार भाजपा के सत्ता में आने पर इस ग्राफ के और ऊपर जाने का अनुमान है। लेकिन अगर विपक्षी इंडिया गठबंधन जीतता है तो स्थिति कुछ अलग हो सकती है।

2024 चुनावी साल है। न सिर्फ भारत के लिए बल्कि दुनियाभर के लिए। इस साल 70 से अधिक देशों में चुनाव होने हैं, जिनमें चार अरब से अधिक लोग वोट डालेंगे। एशिया से लेकर अफ्रीका और यूरोप तक हर महाद्वीप चुनावी मूड में रहेगा। 27 देशों वाला यूरोपियन यूनियन भी चुनावी रंग में रंगने जा रहा है। एशियाई देशों की बात करें तो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत के साथ-साथ पाकिस्तान, भूटान, ताइवान, इंडोनेशिया और मालदीव में आम चुनाव हैं। बांग्लादेश में संसदीय चुनाव हो चुके हैं। यूरोप के भी दर्जनभर से ज्यादा देशों में इस साल वोट डाले जाएंगे, जिनमें पुर्तगाल से लेकर बेलारूस, फिनलैंड, यूक्रेन और स्लोवाकिया तक शामिल हैं। अफ्रीकी देशों में इस साल सबसे अधिक चुनाव हैं, जहां दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा एक बार फिर सत्ता में लौटने की तैयारी कर रहे हैं। वहीं, चाड, घाना, कोमोरोस, अल्जीरिया, बोत्सवाना, मॉरीशस, मोजाम्बिक, मॉरिटानिया, रवांडा, सेनेगल, सोमालीलैंड और ट्यूनीशिया में भी वोट डाले जाएंगे। इसके अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, मेक्सिको और ऑस्ट्रेलिया जैसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में भी चुनाव होने हैं।

अमेरिका में इस साल नवंबर में चुनाव होने हैं। चुनाव में हमेशा की तरह अमेरिका की दो प्रतिद्वंद्वी पार्टियां रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक आमने-सामने होंगी। डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से जो बाइडेन एक बार फिर चुनावी मैदान में हैं। तो रिपब्लिकन की तरफ से पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप आगे बताए जा रहे हैं। हालांकि, अपने ऊपर लगे कई कानूनी मुकदमों की वजह से ट्रंप पिछली कुछ प्राइमरी डिबेट से नदारद रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद ज्यादातर सर्वे में उन्हें बाइडेन पर भारी पड़ते दिखाया गया है। ट्रंप अमेरिका का चुनाव जीतते हैं तो कहा जा रहा है कि उनकी जीत रूस और यूक्रेन युद्ध का भविष्य तय कर सकती है।

मेक्सिको में भी इस साल राष्ट्रपति चुनाव होने हैं। यहां राष्ट्रपति पद की दौड़ में मुख्य मुकाबला दो महिलाओं के बीच है। यहां मुकाबला क्लाउडिया शीनबाम और जोचिटल गैल्वेज के बीच है। इस दौड़ में जीत चाहे किसी की भी हो लेकिन ये तय है कि मेक्सिको को अपनी पहली महिला राष्ट्रपति मिलने जा रही है।

रूस में भी इस साल राष्ट्रपति चुनाव होने हैं। पुतिन ने पिछले साल ऐलान किया था कि वे 2024 का राष्ट्रपति चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने छह साल के एक और कार्यकाल की इच्छा जाहिर की थी। एक तरह से उनका जीतना तय माना जा रहा है। सभी को पता है कि रूस का यह चुनाव पुतिन के लिए महज एक औपचारिकता होगा। ब्रिटेन में साल के अंत में आम चुनाव हो सकते हैं। वैसे ऐसी संभावना भी जताई जा रही है कि ये चुनाव 2025 में भी हो सकते हैं। लेकिन देश में सत्तारूढ़ कंजरवेटिव पार्टी को चुनावों में कड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। 2019 में बोरिस जॉनसन के प्रधानमंत्री बनने से लेकर बेहद नाटकीय ढंग से पद छोड़ने, इसके बाद लिज ट्रस के पीएम बनने के कुछ दिनों के भीतर इस्तीफा देने से कंजरवेटिव पार्टी पर वोटर्स का भरोसा कम हुआ है। ऐसे में ऋषि सुनक को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में इस साल आठ फरवरी को आम चुनाव होने थे। लेकिन हाल ही में इन चुनावों की तारीखों को कुछ समय के लिए टालने के लिए एक प्रस्ताव को पारित किया गया। इसके बाद से ही फरवरी में पाकिस्तान चुनाव को लेकर संशय जताया जा रहा है। लेकिन यह तय है कि पाकिस्तान में चुनाव इसी साल होंगे। पाकिस्तान की आर्थिक तंगहाली और राजनीतिक उथल-पुथल के बीच यह चुनाव काफी दिलचस्प है क्योंकि एक तरफ जहां जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के लिए चुनाव लड़ना मुश्किल लग रहा है। वहीं, नवाज शरीफ की पाकिस्तान मुस्लिम लीग और बिलावल भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के बीच सत्ता में आने की जंग छिड़ी हुई है। ऐसे में पाकिस्तान के चुनाव भारत के लिए काफी अहम माने जा रहे हैं। पाकिस्तान की नई सरकार का भारत के प्रति रुख सभी जानना चाहते हैं। ऐसे में नवाज शरीफ की पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) और बिलावल भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के बीच कांटे की टक्कर मानी जा रही है।

इंडोनेशिया में 14 फरवरी को राष्ट्रपति पद के लिए आम चुनाव होंगे। इस बार राष्ट्रपति चुनाव में मुकाबला तीन उम्मीदवारों गंजर प्रणोवो, अनीस बसवेडन और प्रबोवो सुबिआंतो के बीच है। इंडोनेशिया का ये चुनाव बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के आधार पर नया राष्ट्रपति अपने पड़ोसियों के साथ अपने रिश्ते तय करेगा। मलेशिया के साथ सीमा विवाद और चीन के साथ उसके रिश्तों को लेकर इंडोनेशिया की नई सरकार के कदम पर सबकी नजर होगी। वहीं, कई देश ऐसे भी हैं, जहां सरकारें बदलने से पूरी दुनिया पर उसका बड़ा असर देखने को मिल सकता है। कई देशों में सरकारें नहीं बदलने से परिवर्तन की चाहत भी दम तोड़ सकती है। लेकिन इन सबके बीच एक दिलचस्प बात ये भी है कि 2024 में जहां एक साथ इतने देशों में चुनाव हो रहे हैं। वहीं, अगली बार ऐसा संयोग 2048 में देखने को मिलेगा।

● **कुमार विनोद**

# प्रताड़ित पुरुषत्व

हरिशंकर परसाई लिखते हैं- दिवस कमजोर का मनाया जाता है। जैसे महिला दिवस, अध्यापक दिवस, मजदूर दिवस। कभी थानेदार दिवस नहीं मनाया जाता। इस अर्द्धसत्य से सहमत होना कठिन है। यदि परसाई आज होते, तो वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल पुरुष दिवस की बात करते और आधुनिक नारियों को कमजोर लिखने से पहले कई दफा मनन करते। आधुनिक सत्य यह है कि सार्वभौमिक रूप से न सही पर आधुनिक नारियों से पुरुष समाज प्रताड़ित-पीड़ित है और इस प्रताड़ना के नित नए स्वरूप परिलक्षित हो रहे हैं। इनमें से ही एक है विवाह संबंध-विच्छेद, जैसे पिछले दिनों देश के बड़े उद्योगपति रेमंड ग्रुप के चेयरमैन गौतम सिंघानिया के तलाक की खबर आई। उनकी पत्नी ने तलाक के निपटान के लिए उनके नेटवर्थ का 75 प्रतिशत यानी तकरीबन 11,660 करोड़ रुपए की मांग की है। प्रतीत होता है कि तलाक का इस्तेमाल अब आर्थिक लाभ अर्जित करने एवं पुरुषों से प्रतिशोध का साधन हो गया है। कभी मार्क्स ने पुरुष को दुनिया का सबसे पहला शोषक एवं नारी को पहली शोषित माना था। अब परिस्थितियां उलट हैं। तलाक के मुकदमे शामिल गुजारा-भत्ता पुरुषों के शोषण का सबसे बड़ा अस्त्र बन गया है।

विवाह को महिला-पुरुष का सामाजिक बंधन मानने वाले, दोनों के बीच योग्यता और लैंगिक समानता की तकरीर करने वाले महिला गुजारा भत्ते के पुरुष विरोधी दुराचार पर मौन क्यों हो जाते हैं? यह कहना पड़ेगा कि भारतीय दंड संहिता और कानून लैंगिक भेदभाव पर आधारित है। यदि अदालतें पुरुष को महिला की आर्थिक जिम्मेदारी उठाने के लिए बाध्य कर सकती हैं, तो वही अदालतें महिलाओं को पुरुषों के प्रति सामाजिक कर्तव्यों के पालन के लिए क्यों नहीं बाध्य करती हैं? कहने को तो संविधान का अनुच्छेद-14 लैंगिक समानता का दावा करता है; लेकिन क्या वास्तविकता में ऐसा ही है? जैसे अनुच्छेद-9 आरसीआर में पति के पक्ष में निर्णय आने के बाद भी यदि महिला ससुराल न जाए, तो अदालत बेबस हो जाती है; किंतु सीआरपीसी-125 के तहत वसूली के मामले अदालत असीमित शक्तियां प्रदर्शित करती है। कहने को संतान पति-पत्नी की साझी जिम्मेदारी है और इसे जाने भी दें, तो पुरुष अपने बच्चों की जिम्मेदारी उठाने से पीछे नहीं हटते। लेकिन फिर भी कई पढ़ी-लिखी सक्षम महिलाएं भी बच्चों की परवरिश के नाम पर पुरुषों का आर्थिक शोषण करने पर उतारू हो जाती हैं। यदि महिला बच्चे की परवरिश करने में असमर्थ है, तो उसकी कस्टडी पिता को दे देनी चाहिए।

वास्तव में यह एक सामाजिक-कानूनी परंपरा बन गई है कि पारिवारिक विवादों में सक्षम, सुशिक्षित एवं संसाधनयुक्त महिलाएं भी सदैव बेचारी और पीड़ित समझी जाती हैं और कितना भी सुसभ्य, संसाधनहीन, भावनात्मक रूप से प्रताड़ित पुरुष हो; दोषी माना जाता है। अब तलाक आधुनिक नारियों के लिए उत्सवपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर बन चुका है। बस पुरुष को घरेलू हिंसा, दहेज के मुकदमे में परिवार सहित निपटने की धमकी दीजिए और फिर सामाजिक अपमान से आक्रांत ससुरालियों पर दबाव बनाते हुए अधिक-से-अधिक रकम निर्वाह-व्यय (एलिमनी) के रूप में प्राप्त कीजिए और फिर स्वच्छंद जीवन जीने का मार्ग खुला ही है। ध्यातव्य है कि लगभग मामलों में इस तलाक की कमोबेश वजहें समान ही होती हैं यानी प्रोग्रेसिव, माई बॉडी, माई च्वॉइस वाली नारियों की रिश्तों को त्यागकर स्वकेंद्रण, सामाजिक प्रतिबंध रहित स्वच्छंद जीवन और भौतिक सुखों की अतिरेक पूर्ण चाह। आधुनिक, शिक्षित कन्याओं के साथ ये अजीब विडंबना है कि उन्हें जेंटलमैन लड़के चाहिए, न्यूनतम 6 अंकों में लड़के की तनख्वाह हो, बड़े शहर में अपना घर, बैंक बैलेंस, गाड़ी सब चाहिए; लेकिन उसके मां-बाप नहीं चाहिए। पति अपने भाई-बहन की जिम्मेदारी न ले और जल्द-से-जल्द परिवार का त्यागकर अपना पृथक जीवन जीये।

अपनी आय का इस्तेमाल केवल पत्नी के सुख भोग में करे। लेकिन जब पति ये मानसिक संकीर्णता स्वीकार नहीं करता, तो इसका नतीजा होता है- घरेलू कलह, लड़ाई-झगड़े, मारपीट, थाना, पुलिस, दहेज और घरेलू हिंसा के मुकदमे, अदालत-कचहरी, परिवार समेत कारावास, सामाजिक-आर्थिक-मानसिक प्रताड़ना, पत्नी को गुजारा भत्ता समेत सेटलमेंट हेतु भारी-भरकम रकम जो चाहे अपनी या मां-बाप की किडनी बेचकर ही जुटानी पड़े और अंतत: तलाक के साथ एक पराजित-अपमानित शेष जीवन। हालांकि सितंबर, 2023 में दिल्ली उच्च अदालत के एक निर्णय ने परंपरागत फैसलों को नई दिशा दिखाई। अदालत ने एक सुशिक्षित नौकरीपेशा महिला द्वारा 35,000 रुपए प्रतिमाह के भरण-पोषण खर्च के अतिरिक्त 55 हजार रुपए के मुकदमेबाजी खर्च की मांग वाली याचिका को ख़ारिज करते हुए कहा कि जीवनसाथी को भरण-पोषण प्रदान करने का कानून अलग हुए साथी द्वारा खैरात की प्रतीक्षा कर रहे बेकार लोगों की फौज बनाने के लिए नहीं है।

● **ज्योत्सना**

## कई केस ऐसे भी...

एक समय दहेज के विरोध में बारात लौटाकर रातोंरात चर्चा में आई निशा शर्मा के पूरे प्रकरण को अदालत ने खारिज कर दिया। करीब नौ साल तक सुनवाई करने के बाद जिला अदालत ने 2012 को इस पूरे प्रकरण को सुनियोजित षड्यंत्र करार देते हुए एक लडके और भरे-पूरे परिवार की जिंदगी बर्बाद करने के लिए निशा शर्मा के खिलाफ कड़ी टिप्पणियां की थीं। लेकिन क्या इससे आरोपी बनाए गए मुनीष दलाल और उनके परिवार को इंसाफ मिला? उस लंबे समय तक झेले गए सामाजिक अपमान और आर्थिक संकटों का क्या? लेकिन यह जानने में न उसे खलनायक बनाने वाले मीडिया को रुचि है और न समाज को; क्योंकि वे एक पुरुष है, इसलिए उसके मान-सम्मान की फिक्र करने की जरूरत नहीं है। यह इकलौता मामला नहीं है, बल्कि देशभर में ऐसे फर्जी मामलों की श्रृंखला-सी बन गई है। उदाहरणस्वरूप वैवाहिक विवादों के संबंध में हरियाणा के पानीपत के आंकड़ों को देखिए। वहां पिछले तीन साल में झूठे मामले दर्ज कराने वाली औरतों के खिलाफ 50 से ज्यादा केस दर्ज हुए हैं। 2021 में जहां महिलाओं द्वारा दर्ज कराए गए 220 मुकदमों में 87 को जांच में झूठा पाकर निरस्त किया गया। वहीं 2022 में दर्ज 178 मामलों में से 67 को फर्जी पाकर रद्द किया गया। यह मात्र एक उदाहरण भर है। सर्वविदित है कि वैवाहिक विवाद में दर्ज कराए जाने वाले दहेज प्रताड़ना के अधिकांश मामले फर्जी और प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होते हैं।

# मानव जीवन सर्वोत्तम

गीता हारे हुए, थके, असहाय और निराश व्यक्ति को आशा, उत्साह, शक्ति और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उठना! जागो! जीवन का ख्याल रखें। यह ईश्वर का एक अमूल्य एवं दुर्लभ उपहार है। यह बहुत सौभाग्य की बात है। इसकी कीमत समझें। जीवन के दोनों पहलुओं-भौतिक और आध्यात्मिक, में संतुलन और समन्वय बनाकर चलें। तभी यह लोक और परलोक दोनों सुधरेंगे, और जीवन सार्थक होगा। विश्व को गीता का उपदेश है- मानव जीवन सर्वोत्तम, दुर्लभ एवं उच्चतम कोटि का है। यह जीवन ईश्वर का दिया हुआ एक अनमोल उपहार है। इसे बुद्धिमानी से, व्यवस्थित ढंग से, त्यागपूर्वक और उद्देश्यपूर्ण ढंग से जियो। ये मौका बार-बार नहीं आता। गीता धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति में ही जीवन की पूर्णता और सफलता मानती है।

यदि हम जीना जानते हैं तो संसार में जीवन स्वर्ग है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम जीवन और संसार को नरक बनाकर जिएं या स्वर्ग। गीता ने जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला है। गीता का प्रेरक विचार और दृष्टिकोण मानव जीवन को सर्वोच्च लक्ष्य तक ले जाने में पूर्णत: सक्षम है। जिसने इसे समझ लिया और जीवन में उतार लिया, वह भवसागर से पार हो गया।

सिर्फ सांस लेना, खाना और मौज-मस्ती करना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। इस अनमोल जीवन का अर्थ और उद्देश्य इससे कहीं आगे तक जाता है। यह सब तो पशु-पक्षी भी करते हैं। संसार भोग-विलास की ओर तेजी से भाग रहा है, किसी को पता ही नहीं कि कहां जाएं और जीवन का उद्देश्य क्या है? हर तरफ भागदौड़ और अफरातफरी मची हुई है। हर कोई एक-दूसरे से आगे निकलने की कोशिश कर रहा है।

संसार में सब कुछ बढ़ रहा है लेकिन वास्तविक सुख, संतोष, प्रेम, अपनापन, मानवता आदि कम हो रहे हैं। जिन भोग-विलास और धन-संपत्ति के लिए हम भाग रहे हैं, वे सभी वस्तुएं एक दिन यहीं छूट जाएंगी। हम उस वास्तविक धन को नहीं पहचानते और न ही उसके बारे में चिंता करते हैं जो हमारे साथ जाएगा। हर कोई उस दिशा में प्रयास करने और सोचने में सक्षम नहीं है।

क्या हम नहीं जानते कि हम कहां से आए हैं? परंतु शास्त्रों और महापुरुषों से यह जानना चाहिए कि हमारा लक्ष्य क्या है और कहां जाना है? मानव जीवन जन्म-मृत्यु, बुढ़ापा और यात्रा के चक्र से छुटकारा पाने का साधन है। इसी जीवन में भक्ति और मुक्ति संभव है। मनुष्य शरीर में ही मनुष्य ईश्वर के स्वरूप को जानकर उस तक पहुंच सकता है।

हम उस उद्देश्य को भूल गए हैं जिसके लिए जीवन मिला था। आम आदमी रोते हुए पैदा होता है। वह धन-संचय, भोग-विलास, चिंताओं, समस्याओं, रिश्तों और इच्छाओं की भागदौड़ में जी रहा है। जिंदगी सीधी करते-करते गुजर जाती है। अंत में पछताते और रोते हुए हम संसार से चले जाते हैं। एक अनमोल हीरा पैदा होने के बजाय खो जाता है। इस प्रकार अधिकांश लोगों का जीवन सांसारिक उधेड़बुन में ही व्यतीत होता है। मनुष्य जन्म और जीवन दोनों तेजी से निरर्थक और लक्ष्यहीन होते जा रहे हैं।

लोगों की सोच का प्रतिशत दुनिया पर ही निर्भर है। वे जानवरों की तरह खाने, सोने, वासना आदि में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति वह हैं जो अपना ख्याल रखता है और समय, साधन और शक्ति होने पर सुधार करता है। वे जीवन को बुरी संगति, बुरी सोच, दोषों और बुराइयों से निकालकर सही रास्ते पर लाते हैं। मनुष्य को ईश्वर का यह वरदान है कि वह जब भी सावधान होना, सुधरना और ऊपर उठना चाहे, उठ सकता है। इसके लिए इच्छाशक्ति, दृढ़ संकल्प, प्रयास और समर्पण की आवश्यकता है।

गीता में अर्जुन का उदाहरण यह है कि निराश, हताश और व्याकुल अर्जुन इच्छाशक्ति, सही मार्ग और प्रयास के साथ एक बहादुर योद्धा बन गया। गीता जीवन का ध्यान रखने, सुधार करने और ऊपर उठने की प्रेरणा देती है। गीता संपूर्ण जीवन की व्याख्या है।

जिंदगी क्या है? कैसे जीना है और इसका उद्देश्य क्या है? हमारा धर्म और कर्म क्या है? संसार में रहते हुए अपने दायित्वों, कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को कैसे पूरा करें।

यदि आप अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त करना चाहते हैं; गीता ये सब बातें समझाती, सिखाती और बताती है। जीवन कुरूक्षेत्र है; इसमें विवाद, कलह, चिंता, बेचैनी, इच्छाओं, वासनाओं आदि का द्वंद्व लगा रहता है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसके जीवन में चिंता, अशांति, समस्याएं, उलझनें आदि न हों। महिलाएं, पुरुष, बूढ़े और बच्चे सभी अंदर और बाहर रणक्षेत्र में हैं। कोई पाने की जद्दोजहद में है तो कोई जाने की। कोई धन की कमी के कारण दुखी और बेचैन है, कोई भूख से परेशान है और कोई भूख न लगने के कारण बीमार और बेचैन है।

इंसान को न तो दिन में चैन मिलता है और न ही रात को नींद। स्वार्थ, लोभ, भोग-विलास, हिंसा एवं अहंकार के कारण हम असभ्यता एवं पशुता की ओर बढ़ रहे हैं। संपूर्ण मानव समाज में उथल-पुथल मची हुई है। सारा विश्व कुरूक्षेत्र बनता जा रहा है। गीता कहती है कि जीवन व्यर्थ की बातों, धन संचय आदि में तेजी से व्यतीत हो रहा है और जीवन की शाम होने वाली है, अब तो जाग जाओ, अब तो शेष जीवन की सुध लो।

इस संसार के युद्ध में जीवन कैसे विजयी हो सकता है? यही जीवन की कला है जो गीता हमें सिखाती है। अर्जुन ने गीता के उपदेश से हारा हुआ जीवन जीत लिया। गीता कई रहस्यमयी बातों, समस्याओं, उलझनों का व्यावहारिक, तार्किक, उपयोगी और सीधा समाधान बताती है। गीता सुख, शांति, प्रसन्नता, स्वास्थ्य और मानवता के साथ रहना और जीना सिखाती है। गीता का जीवन-दर्शन संसार से भागना नहीं, बल्कि जागना है। अर्जुन कर्तव्य, धर्म, उत्तरदायित्व और जीवन के उद्देश्य से भागना चाहता है। श्रीकृष्ण जी अर्जुन को सत्य, जीवन बोध, कर्तव्य बोध और उद्देश्य का बोध कराकर सत्य, न्याय और धर्म के मार्ग पर ले जाते हैं। गीता कहती है कि सच्चे अर्थों में इंसान बनकर जियो और दूसरों को जीने दो। जीवन को सम्मानपूर्वक, सार्थक और उद्देश्यपूर्ण ढंग से जिएं। जीवन कायरतापूर्वक नहीं, वीरतापूर्वक व्यतीत करना है। जिंदगी को उलझाकर नहीं, सुलझाकर जीना है। गीता का संदेश है- जीवन और संसार की समस्याओं, उलझनों, चिंताओं, दुखों आदि से भागो मत, बल्कि ज्ञान, समझ और धैर्य से समस्याओं और विवादों का समाधान करो। समस्याएं भी हैं, समाधान भी हैं। अंधकार के साथ-साथ प्रकाश भी है। निराश न हों, मन को निराश न होने दें।

● **ओम**

# संस्कार बोलते हैं

सभागार में वयोवृद्ध पंडित जी प्रवचन कर रहे थे। सभागार खचाखच भर गया, बाद में आने वाले लोग बाहर खड़े सुन रहे थे। आयोजकों ने बाहर मैदान में जाने की घोषणा की। घोषणा होते ही बाद में आने वाले लोग पहले दौड़कर वहां पहुंच गए। पहले आने वालों को पीछे बैठना पड़ा।

मेरा आप सभी से निवेदन है कि जो देर से आए हैं, वे स्वयं ही पीछे हो जाएं और उन्हें आगे आने दें जो पहले आए थे। पंडित जी ने कहा।

पंडित जी की बात सुनकर कुछेक गांव वाले पीछे चले गए और कुछेक आगे आए।

पिताजी, पीछे चलिए। हम तो बाद में आए थे। एक बेटी ने अपने पिता से कहा जो देर से आने के बाद आगे बैठे हुए थे।

चुपचाप बैठी रह, यहां बैठे रहने से कोई अंतर नहीं पड़ता। पिता ने घुड़कते हुए कहा।

बिटिया पिता का हाथ छुड़ा कर पीछे की ओर चली गई, मजबूरन पिता को भी पीछे जाना पड़ा। पंडित जी ने यह सब देखा, सुना और समझा।

संस्कार बोलते हैं। पंडित जी ने बच्ची को बुलाकर शाबाशी दी।

**- लीला तिवानी**

# महका-चहका घर आंगन

दादा-दादी आए हैं। परपोता आरोह और उसकी पत्नी रूही मन ही मन उलझन में फंसे हैं। आज हम सब संगी साथी मिलकर जुहू बीच पर नव वर्ष जश्न मनाने वाले थे। क्या करें? मम्मी-पापा को तो मना लेंगे, मान भी जाएंगे, लेकिन दादा-दादी को मना करना मुश्किल है। क्या करें?

बार-बार रोहित का बुलावा आ रहा है।

बेटा, परेशान क्यों हो रहे हो? अपने मित्र परिवार को अपने ही घर बुला लो।

नववर्ष के हर्ष में दादी जी के हाथों बनी देसी घी से बनी मिठाई की खुशबू, दादा जी के हंसगुल्ले, पापा जी के उपहार, मम्मी जी की रसमलाई का स्वाद, बच्चों की किलकरियां, खुशियां ही खुशियां घुल गई। नव उमंग, नव उल्लास, नवल संस्कार ले आई नव प्रभात। हंसी ठहाकों से महका-चहका घर आंगन।

**- चंचल जैन**

# मानवता का गान

मानवता को जब मानोगे,
तब जीने का मान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।
भेदभाव में क्या रक्खा है,
ये बेमानी बातें हैं।
मानव-मानव एक बराबर,
ऊंचनीच सब घातें हैं।।
नित बराबरी को अपनाना,
यह प्रभु का जयगान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।
दीन-दुखी के अश्रु पोंछकर,
जो देता है सम्बल।
पेट है भूखा, तो दे रोटी,
दे सर्दी में कम्बल।।
अंतर्मन में है करुणा तो,
मानव गुण की खान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।
धन-दौलत मत करो इकट्ठा,
नहीं खुशी पाओगे।
जब आएगा तुम्हें बुलावा,
तुम पछताओगे।।
हमको निज कर्त्तव्य निभाकर,
पा लेनी पहचान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।
शानोशौकत नहीं काम की,
चमक-दमक में क्या रक्खा।
वही जानता सेवा का फल,
जिसने है इसको चक्खा।।
देव नहीं, मानव कहलाऊं,
यही आज अरमान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।
जीवन का तो अर्थ प्यार है,
अपनेपन का गहना है।
वह ही तो नित शोभित होता,
जिसने इसको पहना है।।
जो जीवन को नहिं पहचाना,
वह मानव अनजान है।
जात-पात का भेद नहीं हो,
मिलता तब यशगान है।।

**- प्रो. ( डॉ. ) शरद नारायण खरे**

# गर्मी में भारत को मिलेगी जीत की ठंडक

भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम पिछले एक दशक से कोई भी आईसीसी टूर्नामेंट नहीं जीत पाई है। वर्तमान में उसका फोकस जून में होने वाले टी-20 विश्वकप पर है। लेकिन इसी के तहत जैसे ही बीसीसीआई ने अफगानिस्तान सीरीज के लिए टीम का ऐलान किया उसके तुरंत बाद खिलाड़ियों के चयन को लेकर सवालों का अंबार लग गया है। 16 सदस्यीय इस दल में सबसे खास बात यह है कि एक ओर जहां रोहित शर्मा और विराट कोहली को टी-20 टीम में जगह दी गई है, वहीं दूसरी तरफ केएल राहुल, श्रेयस अय्यर और ईशान किशन जैसे कई अनुभवी खिलाड़ियों को दरकिनार कर युवा खिलाड़ियों को मौका दिया गया है। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि क्या टी-20 विश्वकप से भी इनकी छुट्टी हो गई है? आईसीसी ट्रॉफी के एक दशक पुराने सूखे को खत्म करने की क्या यही रणनीति है? क्या भारत टी-20 विश्वकप जीत पाएगा? या फिर आईपीएल के आधार पर विश्वकप के लिए खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा?

फटाफट क्रिकेट यानी टी-20 क्रिकेट विश्वकप 2024 के पूरे कार्यक्रम की घोषणा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने कर दी है। इस बार एक जून से 29 जून तक अमेरिका और वेस्टइंडीज की मेजबानी में विश्वकप खेला जाएगा। जिसमें भारत को ग्रुप-ए में शामिल किया गया है। इस ग्रुप में भारत के साथ अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड और पाकिस्तान शामिल है। टूर्नामेंट का पहला मैच कनाडा और अमेरिका के बीच 1 जून को खेला जाएगा। भारतीय टीम विश्वकप का आगाज पांच जून को आयरलैंड के खिलाफ से करेगी, वहीं पाकिस्तान से भारत की भिड़ंत 9 जून को होगी। सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले वेस्टइंडीज में ही खेले जाएंगे। 26 जून को पहला तो 27 जून को दूसरा सेमीफाइनल होगा। टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला यानी खिताबी भिड़ंत 29 जून को वेस्टइंडीज के बारबाडोस केंसिंग्टन ओवल क्रिकेट ग्राउंड में होगी। इस बार कुल 55 मैच खेले जाने हैं। यह टूर्नामेंट इसलिए भी खास है कि इस बार 20 टीमें इसमें हिस्सा लेंगी जो 2022 में ऑस्ट्रेलिया में हुए टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाली 16 टीमों से ज्यादा है।

इस खिताब को जीतने के लिए सभी देशों की टीमें इसकी तैयारी में जुट गई हैं, वहीं अगर भारत की बात करें तो भारतीय क्रिकेट टीम के लिए पिछले साल 2023 काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा। दो बार टीम आईसीसी ट्रॉफी जीतने के करीब पहुंची, लेकिन फाइनल मैच में हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद वनडे विश्वकप में सर्वश्रेष्ठ टीम के रूप में भारतीय टीम हावी रही। अब भारत को 2024 में भी बेहतर प्रदर्शन कर टी-20 विश्वकप जीतकर आईसीसी ट्रॉफी के एक दशक पुराने सूखे को खत्म करने की चुनौती है, जिस पर उसे रणनीतिक रूप से काम करना होगा। इसी के तहत बीसीसीआई ने अफगानिस्तान सीरीज के लिए भारतीय टीम का जैसे ही ऐलान किया उसके तुरंत बाद खिलाड़ियों के चयन को लेकर सवालों का अंबार लग गया है। 16 सदस्यीय इस दल में सबसे खास बात यह है कि एक ओर जहां रोहित शर्मा और विराट कोहली को टी-20 टीम में जगह दी गई है, वहीं दूसरी तरफ केएल राहुल, श्रेयस अय्यर और ईशान किशन जैसे कई अनुभवी खिलाड़ियों को दरकिनार कर युवा खिलाड़ियों को मौका दिया गया है। सबसे ज्यादा चर्चा एक दिवसीय फॉर्मेट में दोहरा शतक जड़ चुके ईशान किशन को जगह नहीं मिलने की हो रही है। उनकी जगह जितेश शर्मा और संजू सैमसन को बतौर विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर टीम का हिस्सा बनाया गया है। ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि क्या ईशान सहित इन अनुभवी बल्लेबाजों की अब टी-20 विश्वकप से भी छुट्टी हो गई है? आईसीसी ट्रॉफी के एक दशक पुराने सूखे को खत्म करने की क्या यही रणनीति है? क्या भारत टी-20 विश्वकप जीत पाएगा? ऐसे में भारत सालों के सूखे को कैसे खत्म करेगा यह देखना काफी दिलचस्प होगा। ये सवाल इसलिए भी उठ रहे हैं क्योंकि टी-20 विश्वकप के पहले टीम इंडिया के पास यही एकमात्र टी-20 सीरीज है, जिसमें चयनकर्ता कुछ प्रयोग कर सकते थे।

विश्वकप तैयारियों के लिहाज से टीम का संतुलन खोजने और खिलाड़ियों के चयन के लिए उन्हें आजमाने का यह आखिरी मौका है। ऐसे में जहां ईशान किशन का टीम में शामिल न होना चौंकाने वाला है वहीं अनुभवी खिलाड़ियों की अनदेखी टीम को भारी पड़ सकती है। दिग्गज खिलाड़ियों का कहना है कि रोहित और विराट को टी-20 फॉर्मेट में वापस लाने का मतलब है कि वे विश्वकप खेलेंगे। ये दोनों दिग्गज पिछले टी-20 विश्वकप के बाद से एक भी टी-20 नहीं खेले हैं।

● आशीष नेमा

## आईपीएल में दिखेगी झलक

टी-20 विश्वकप रोहित और विराट की वापसी अहम है, क्योंकि पिछले कुछ हफ्तों से यह कयास लगाए जा रहे थे कि टी-20 विश्वकप में रोहित और विराट नहीं होंगे। इसके पीछे कई कारण गिनाए जा रहे थे। कहा जा रहा था कि टी-20 में रोहित की कप्तानी, विराट का इस फॉर्मेट में कम स्ट्राइक रेट, युवा खिलाड़ियों को मौका दिए जाने की संभावना और क्रिकेट के अलग-अलग फॉर्मेट में संतुलन बनाने के लिहाज से विराट और रोहित को टेस्ट और वनडे तक ही सीमित रखने जैसी बातें कही जा रही थी। लेकिन चयनकर्ताओं ने इसके उलट अफगानिस्तान सीरीज में इन दोनों को शामिल कर एक ओर जहां सभी अटकलों पर विराम लगा दिया है, वहीं दूसरी तरफ अब लगभग तय माना जा रहा है कि टी-20 विश्वकप में टीम की कमान रोहित शर्मा के हाथों में ही होगी और विराट का खेलना भी तय है। ऐसे में सवाल है कि इन दोनों की वापसी किन-किन खिलाड़ियों के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकती है या उनकी टी-20 विश्वकप से छुट्टी हो सकती है यह देखना दिलचस्प होगा? खेल विशेषज्ञों का कहना है कि अफगानिस्तान सीरीज से तो इस सवाल का जवाब मिलना मुश्किल है लेकिन आईपीएल में उन खिलाड़ियों का प्रदर्शन भी देखना होगा जो अपने बेहतर प्रदर्शन से बीसीसीआई और चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगे।

*अक्षय कुमार बॉलीवुड के सुपरस्टार्स में से एक हैं। कभी एक दौर था जब उनकी हर फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाई के मामले में तहलका मचा देती थी, लेकिन पिछले कुछ सालों से उनकी किस्मत रूठ गई है। साल 2022 में उनकी सम्राट पृथ्वीराज रिलीज हुई थी जो बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप हो गई। इस वजह से अक्षय कुमार को बहुत दुख हुआ था।*

# 200 करोड़ी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हुई डिजास्टर तो फूट-फूटकर रोया सुपरस्टार

**सम्राट** पृथ्वीराज में अक्षय कुमार ने लीड रोल निभाया था। फिल्म को बनाने में मेकर्स ने पानी की तरह करोड़ों रुपए बहा दिए थे लेकिन रिलीज के बाद मूवी की ऐसी हालत हुई कि बॉक्स ऑफिस पर अपनी लागत भी नहीं वसूल पाई थी। इस फिल्म से ना सिर्फ मेकर्स बल्कि अक्षय कुमार को भी बड़ी उम्मीद थी। सबको लगा कि ये मूवी बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफल साबित होगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सम्राट पृथ्वीराज ने बॉक्स ऑफिस पर कलेक्शन के मामले में सबकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया था।

बॉक्स ऑफिस इंडिया के मुताबिक, अक्षय कुमार की फिल्म सम्राट पृथ्वीराज को 200 करोड़ रुपए के बजट में बनाया गया था। भारत में इस फिल्म ने सिर्फ 60 करोड़ रुपए का बिजनेस किया था। वहीं, दुनियाभर में फिल्म की टोटल कमाई 90 करोड़ हो पाई थी। इस तरह फिल्म की बुरी हालत का अंदाजा लगाया जा सकता है।

### बैक-टू-बैक फ्लॉप हुई थीं फिल्में...

अक्षय कुमार की फिल्म सम्राट पृथ्वीराज के निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने एक इंटरव्यू में खुलासा किया कि फिल्म में अक्षय कुमार के लुक को लेकर काफी आलोचना हुई। उनके और मानुषी छिल्लर के बीच उम्र के अंतर को लेकर भी लोगों ने आपत्ति जताई थी। इसके अलावा चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने बताया कि सम्राट पृथ्वीराज को लेकर हुई भारी आलोचना और फिल्म के बॉक्स ऑफिस पर फेल होने की वजह से अक्षय कुमार बहुत दुखी हुए थे। यहां तक कि उनकी आंखों में आंसू आ गए थे। बताते चलें कि साल 2022 में सिर्फ सम्राट पृथ्वीराज ही नहीं बल्कि अक्षय कुमार की बच्चन पांडे, राम सेतु और रक्षाबंधन जैसी फिल्में भी बॉक्स ऑफिस पर बैक-टू-बैक फ्लॉप हुई थीं।

# तंगी में पहली पत्नी ने दिया तलाक... तो धर्म की दीवार तोड़ एक्ट्रेस से रचाई शादी

**आपको** बॉबी देओल की फिल्म करीब की हीरोइन याद हैं, जो हमारे फैमिली मैन मनोज बाजपेयी की दूसरी पत्नी हैं। एक्ट्रेस की पहली फिल्म करीब तब रिलीज हुई थी, जब मनोज बाजपेयी की सत्या आई थी। दोनों की तब अचानक मुलाकात हुई थी, जो धीरे-धीरे प्यार में बदल गई थी।

मनोज बाजपेयी को 1994 में बैंडिट क्वीन में अहम रोल मिला, फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ। वे फिल्मों में अच्छे मौके पाने के लिए मुंबई आ गए, मगर पत्नी से रिश्ता हर गुजरते दिन के साथ गड़बड़ाने लगा। मनोज साल 1995 में पहली पत्नी से अलग हो गए, हालांकि जिंदगी उनसे ज्यादा वक्त तक रूठी नहीं रही। साल 1998 उनकी जिंदगी में नया मोड़ लेकर आया। उस साल सत्या के आसपास शबाना रजा की फिल्म करीब भी रिलीज हुई थी। दोनों पहली बार सत्या के प्रीमियर पर मिले और एक-दूजे के करीब आ गए। मनोज बाजपेयी ने करीब 8 साल के रिलेशनशिप के बाद शबाना रजा से इंटर रिलीजन मैरिज कर ली। एक इंटरव्यू में शबाना रजा ने कहा था कि हमें खुश रहने के लिए कहीं बाहर जाना नहीं पड़ता। हम चाय की चुस्कियां लेते हुए घर पर शांति और खुशनुमा माहौल में समय बिताना पसंद करते हैं।

# एक ही पल में जूही के हाथ से निकल गया था स्टारडम; चमक उठी करिश्मा की किस्मत

**साल** 1997 में जब शाहरुख खान, करिश्मा कपूर और माधुरी दीक्षित स्टारर फिल्म दिल तो पागल है सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी, तो ये फिल्म रिलीज के साथ हंगामा मचाने लगी थी। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी और इस फिल्म के बाद शाहरुख के साथ करिश्मा और माधुरी की भी किस्मत चमक गई थी, लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इस फिल्म के लिए करिश्मा कपूर की जगह मेकर्स ने पहले जूही चावला को अप्रोच किया था। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो मेकर्स फिल्म में माधुरी दीक्षित के साथ जूही चावला को साथ लाना चाहते थे, लेकिन ऐसा हो नहीं हो सका। जूही सेकंड एक्ट्रेस के रूप में काम नहीं करना चाहती थी, और इसी वजह से उन्होंने दिल तो पागल है करने से इनकार कर दिया था। वहीं, इस 1997 के बाद जूही

चावला के हाथ लगातार फ्लॉप और डिजास्टर फिल्में ही लगी, जिससे उनका करियर डाउन होता चला गया। हालांकि, 1997 में जूही बॉक्स ऑफिस पर लगातार 4 हिट फिल्में दी थी, जिसमें यस बॉस, मिस्टर एंड मिसेज खिलाड़ी, दीवाना मस्ताना और इश्क जैसी फिल्मों के नाम शामिल थे, लेकिन 1997 के बाद उनके हाथ सात रंग के सपने, डुप्लीकेट, झूठ बोले कौवा काटे जैसी कई और फ्लॉप फिल्में लगीं। वहीं, दूसरी और करिश्मा कपूर के करियर में नई उछाल देखने को मिली थी।

# तैयारी एक यात्रा की...

इसी पृष्ठभूमि पर शुरू हो रहा है फिर से राजनीतिक यात्राओं का दौर। विशाल रैली और महारैली भी निकाली जा रही है इसके पीछे भी यही मंशा रहती है कि, हम कर्म करेंगे तो हमें जन समर्थन मिलेगा हमारी शानदार राजनीतिक पारी की शुरुआत होगी। हमारा संगठन मजबूत होगा।

भारत तो अटूट है, अखंड है और वैश्विक रूप से खूब मजबूत है लेकिन फिर भी भारत को मजबूत करने के लिए कभी न्याय यात्रा निकाली जाती है, तो कभी भारत जोड़ो यात्रा निकाली जाती है। महारैली भी निकाली जाती है। ऐसी महारैली का एवं हर राजनीतिक यात्रा का ऐतिहासिक महत्व है। वे रैली निकालकर एवं यात्रा के अगुवा बनकर इतिहास में दर्ज होना चाहते हैं। टूटकर बिखरते सपनों को साकार करना चाहते हैं। ऐसे जांबाज एवं हिम्मत न हारने वालों की दाद देनी चाहिए जो बार-बार परास्त होने के बाद भी सफलता की लगातार कोशिश करते हैं। नई प्राणवायु फूंकने के इस प्रकार के प्रयासों का दौर फिर से प्रारंभ होने वाला है। उनकी यात्रा गांव से भी गुजरेगी, शहरों में भी वे लोगों से गले मिलेंगे गरीबों को भी गले लगाएंगे, उनके सुख-दुख को साझा करेंगे। यात्रा में शामिल होने वाले लोगों को सशक्त और मजबूत बनाया जाएगा, तमाम सरकारी योजनाओं को उनकी झोली में डाला जाएगा। इसी यात्रा के बहाने वे अपनी ताकत देश को दिखाना चाहते हैं और इसी ताकत के साथ वे राज सिंहासन में काबिज होने के लिए कदम भी बढ़ाना चाहते हैं।

हर यात्रा का एक अगुवा होता है, जिसकी यात्रा में खूब पूछपरख होती है। जिसका आदेश लोग सर आंखों पर रखते हैं। उनमें बहुत खूबी भी होती है, वे कुली बनकर चके वाली अटैची को सर में रखकर चल सकते हैं। कभी मोची से लेकर फटे जूते-चप्पल सिलने की कला सीख सकते हैं। मोटर मैकेनिक बन सकते हैं। खेत में उतरकर धान काट सकते हैं, और तो और पहलवानों से हाथ मिलाकर कुश्ती के दांव-पेच भी आजमा सकते हैं। वे हर कला में माहिर होना चाहते हैं। ताकि यात्रा में हर वर्गों का लाभ मिल सके। उनकी यात्रा न्याय के लिए है यानी अन्याय के खिलाफ है जिनको न्याय नहीं मिला है, वे यात्रा के सहभागी यात्री बन सकते हैं। कई किलोमीटर की यात्रा करेंगे। जब यात्रा के अगुवा बने मुखिया ने हजारों किलोमीटर की यात्रा की घोषणा की तब उनकी पार्टी में शामिल सबके चेहरे चमक उठे। उदासी भरे चेहरों में चमक आने लगी।

सब ने सुझाव दिया यात्रा को पूर्व से पश्चिम की ओर निकालना चाहिए। सर्वसम्मति से यही बात फाइनल हो गई। यात्रा के नेतृत्व के लिए तैयार एक प्रमुख नौजवान से हमने पूछ ही लिया- आदरणीय यह यात्रा किस मकसद से निकाली जा रही है? आपके मन में ऐसा क्या विचार कौंधा कि आप यात्रा पर निकल रहे हैं?

पहले तो उन्होंने गौर से हमें देखा, जब तसल्ली हो गई कि हम मीडिया से हैं तो उन्होंने कहना शुरू किया- देखो भैया, हमारी यात्रा का ये जो दर्शन है बापू से प्रेरित है। हमारी यात्रा न्याय एवं सत्य की राह पर चलेगी। हम महात्मा गांधी के आदर्श और सिद्धांतों की ऐतिहासिक सच्चाई के साथ चलेंगे। इस यात्रा के द्वारा हम राष्ट्रीय चेतना जागृत करना चाहते हैं। गांधीजी ने ब्रिटिश हुकूमत को अपनी यात्रा से ही परास्त कर दिया था।

हम भी कुछ ऐसा ही करना चाहते हैं। उन्होंने कहा- गांधीजी ने तो दांडी यात्रा ब्रिटिश नमक कानून को तोड़ने के लिए प्रारंभ किया था, हम राजनीति में एकाधिकार एवं वर्चस्व के वातावरण को तोड़ने के लिए यात्रा निकाल रहे हैं। हमारे साथ तो पूरे देश का आशीर्वाद है। हमारी यात्रा में दम है तभी तो विरोधी हमारी यात्रा से भयभीत होने लगे हैं। इतना कहकर वे अपनी यात्रा के निर्धारित मार्गों के नक्शे बनाने में व्यस्त हो गए।

यात्रा के अगुवा के अगल-बगल के लोग मीडिया के दखल पर ज्यादा सक्रिय हो उठे और जिंदाबाद-जिंदाबाद के नारे लगाने लगे। नारों की आवाज ज्यादा बुलंद थी, मेरी आवाज कमजोर। सो वहां से मैं चुपचाप लौट आया और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा जिस दिन उनकी यात्रा का शुभारंभ होने वाला है।

गीता में कर्म की बेहतर व्याख्या की गई है। यही कर्म का सिद्धांत, इन दोनों के सर चढ़कर बोल रहा है और निस्संदेह राजनीतिक यात्राओं में भी लागू होता है। फल मिले न मिले बस, अपना कर्म करते जाओ। सच भी है कि कर्म किए बिना फल कहां मिलता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को यही समझाया है कि- बस अपना कर्म करो, अर्जुन कर्म के अनुसार फल मिलना तय है, फल की चिंता मत करो।

● **सतीश उपाध्याय**

PRISM®
CEMENT

# प्रिज़्म® चैम्पियन प्लस

## ज़िम्मेदारी मज़बूत और टिकाऊ निर्माण की.

- ज्यादा मज़बूती
- ज्यादा महीन कण
- ज्यादा वर्कबिलिटी
- बेहतरीन निर्माण कार्य
- इको–फ्रेन्डली
- कन्सिसटेंट क्वालिटी
- ज्यादा प्रारम्भिक ताक़त
- ज्यादा बचत

PRISM®
चैम्पियन
प्लस
सीमेंट

दूर की सोच®

Toll free: 1800-572-1444 Email: cement.customerservice@prismjohnson.in

**For Any Medical & Pathology Equipments Contact Us**

# D-10™ Hemoglobin Testing System

## For $HbA_{1c}$, $HbA_2$ and HbF

**Flexible**
to solve more testing needs

**Comprehensive**
B-thalassemia and diabetes testing

**Easy**
for simple operation

Dependability is about more than keeping your laboratory running smoothly; It's about the quality diabetes care you support. That's why we developed the D-10™ System with reliability and efficiency in mind.

A simple, fully-automated solution, the D-10™ System Combines diabetes and B-thalassemia testing, enabling rapid $HbA_{1c}$ or $HbA_2/F/A_{1c}$ testing using pripary tube sampling-so you can accomplish more in fewer steps, With the D-10™ System, It's easier to deliver a full picture of diabetes treatment progress-and that can be the difference for the people who count on you most.

# SCIENCE HOUSE MEDICAL PVT. LTD.

C-65, Gautam Nagar, Near Chetak Bridge, Bhopal-462023
GST.No. : 23AAPCS9224G1Z5 Email : shbple@rediffmail.com
Phone : +91-0755-4241102, 4257687, Fax : +91-0755-4257687